विषय-सूची

परिशिष्ट (क)

परिशिष्ट (ख)

परिशिष्ट (ग)

संकेताक्षर

अ० सा०	... ...	अर्द्ध साप्ताहिक
अ० वा०	... ...	अर्द्ध वार्षिक
चा० मा०	.. ..	चातुर्मासिक
दै०	....	दैनिक पत्र
द्वै०	....	द्वैमासिक
प०	... ...	पता
मा०	... .	मासिक पत्र
वा० मू०	... ...	वार्षिक मूल्य
सह० सं०	....	सहकारी संपादक
सा०	....	साप्ताहिक पत्र
सं०	....	संपादक
संस्था० संचा०	....	संस्थापक, संचालक
त्रै०	....	त्रैमासिक
×	....	पत्रों के नमूने प्राप्त नहीं हुए
×	....	परिचय व नमूना दोनों ही प्राप्त नहीं हुए

भारतीय विधान परिषद् के अध्यक्ष

डा० राजेन्द्रप्रसादजी का शुभाशीर्वाद

स्व० श्री महादेव देसाई

युगान्तर प्रेस, चौड़ा रास्ता, जयपुर
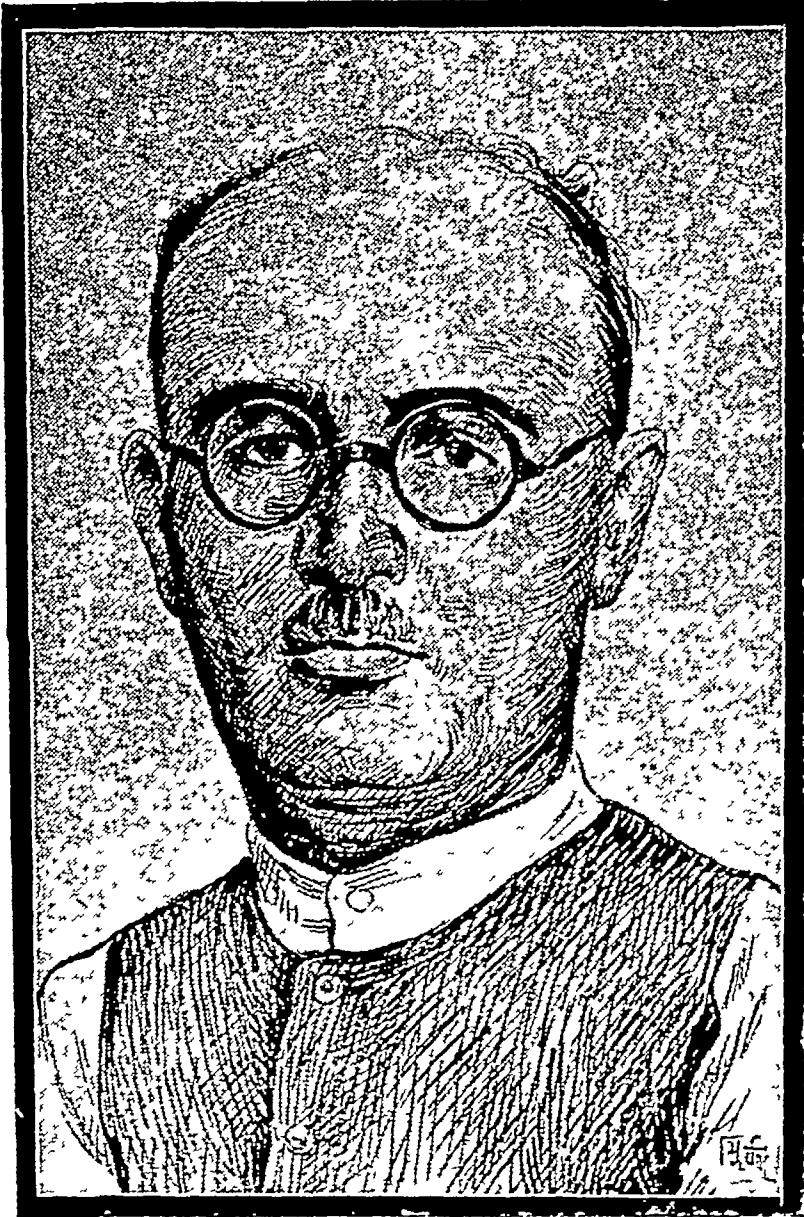
समर्पण

स्वर्गीय श्रीमहादेव भाई देसाई स्मारक-समिति का यह प्रथम पुष्प साहित्य प्रेमियों की सेवा में भेंट करने का आयोजन बिरला कॉलेज साहित्य समिति के सदस्यों के परिश्रम तथा पूज्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी के प्रोत्साहन के कारण ही प्रस्फुटित हो सका। श्री महादेव भाई बिरला एज्यूकेशन ट्रस्ट के सदस्य थे। आप श्री बापू के प्रमुख मंत्री का कार्यभार सम्हालते हुए तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों में संलग्न रहते हुए भी विद्यार्थियों एवं शिक्षण संस्थाओं के हित-चिंतन में अपना समय बराबर लगाते थे। आपके निधन के समय बिरला कॉलेज के विद्यार्थियों ने आपके स्मारक के लिए धन एकत्रित किया और एक समिति बनाई। इस समिति की ओर से ही यह प्रकाशन हो रहा है।

श्री महादेव भाई एक उच्च कोटि के लेखक तथा सम्पादक थे। आपकी भाषा सरस थी। आपके लेख विचारपूर्ण थे व सम्पादन उत्तर-दायित्व पूर्ण था देश भर में आप ही एक महान् व्यक्ति थे जो बापू को पूर्णतया समझ सकते थे और उनकी विचार-धारा के प्रवाह की दिशा का ठीक अनुमान कर सकते थे। आपकी पुण्य स्मृति में ही हिन्दी समाचार पत्रों की यह विवरण पत्रिका समर्पित की जारही है। हमे आशा है कि यह हमारी तुच्छ भेंट स्वीकार होगी। और पाठक हमे हमारी त्रुटियों के लिए क्षमा करेंगे।

शुकदेव पांडे

११-११-४८

मंत्री, बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट
पिलानी, (जयपुर राज्य)

दो शब्द

कुछ समय पहले राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित, पत्र-पत्रिकाओं की एक सूची निकालने के लिये विज्ञप्ति प्रसारित की गई थी। बाद में एक परिचय-पुस्तक ही प्रकाशित करने का विचार रहा। कई पत्रों (जिनमें 'विशाल भारत', 'सम्मेलन पत्रिका', 'देशदूत' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं) ने एतद्विषयक विज्ञप्तियों को स्थान दे कर तथा अनेक पत्र-सम्पादकों ने अपनी पत्र-पत्रिकाओं की नमूने की प्रतियाँ व परिचय भेजकर हमें आभारी बनाया है। इससे हमें काफी प्रोत्साहन भी मिला। गत २ अक्टूबर को 'गांधी जयन्ती' के शुभावसर पर, पिलानी में ही, इस प्रकार एकत्र हुए ३२०. पत्र-पत्रिकाओं से 'अ० भा० हिन्दी समाचार-पत्र-प्रदर्शिनी' का आयोजन किया गया था। देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने प्रदर्शिनी का उद्‌घाटन किया और हमारी उपर्युक्त योजना को सराहते हुए प्राचीन पत्रों की सूची भी रखने का परामर्श दिया। उन्हीं पत्र-पत्रिकाओं तथा कुछ अन्य का जो अब तक उपलब्ध हो सकीं, संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत पुस्तक मे दिया गया है।

हिन्दी में आज सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं, इस प्रकार यह श्रमसाध्य कार्य था। दूसरे 'पत्र-पत्रिकाओं की डाइरेक्टरी', ऐसी पुस्तक तैयार करने में सब से बड़ी कठिनाई यह है कि अन्य भाषाओं के समान ही हिन्दी-पत्र भी अकाल ही काल-कवलित हो जाते हैं; कई पत्रों की तो (केवल विज्ञप्ति ही निकलती है) गर्भ में ही मृत्यु हो जाती है, कुछेक प्रवेशाङ्क निकाल कर सदा के लिये लुप्त हो जाते हैं; कितने ही पत्र ४–६ अङ्क निकल कर, बन्द हो जाते हैं और कुछेक १–२ साल तक निकल कर संचालक की पत्र–निकालने की अभिलाषा पूरी कर देते हैं। अनेक पत्र तो स्थानीय ही होते हैं और बहुधा उनके अस्तित्व का भी पता नहीं रहता। अनेक पत्र जातीय संस्थाओं की ओर से निकलते हैं और जातीय संकीर्णता तथा गुट्टबंदी के कारण अधिक दिन नहीं चल पाते। निकलते हैं और

पुनः बन्द हो जाते हैं। यद्यपि जैन धर्मावलम्बियों के कुछ पत्र, 'राजपूत', 'कान्य-कुब्ज', 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' आदि जो ४० वर्ष पूर्व से भी प्रकाशित हो रहे हैं, अपवादस्वरूप हैं। पर इनका स्थायी महत्व नहीं है।

इस प्रकार की पुस्तक प्रकाशित कर हमारा मन्तव्य हिन्दी भाषा के पत्रों की वर्तमान गतिविधि से सर्वसाधारण को परिचित कराने का है। ऐसी पुस्तक के तैयार करने में पत्र-सम्पादकों का सहयोग भी पूर्ण रूप से अपेक्षित रहता है। आजकल अनेक पत्र ऐसे निकल रहे हैं जिनका सम्पादक, प्रकाशक व संचालक बहुधा एक ही व्यक्ति रहता है और ऐसे व्यक्तियों में अधिकांशतः नामधारी 'कवि' वा 'लेखक' होते हैं। बहुत से पत्र तो ऐसे हैं जो अत्यन्त सामान्य कोटि के हैं, जो किसी भी हालत में अपनी सत्ता की सार्थकता सिद्ध नहीं कर सकते। 'आर्यमित्र' (१८९७ से प्रकाशित) आदि पत्रों को देख, यह तो स्पष्ट ही है कि व्यक्तिगत रूप से निकाले गये पत्र अधिक दिन नहीं जीते। ऐसे पत्रों के जीवन में भी अनेक उतार-चढ़ाव आये हैं। सुदृढ़ भित्ति पर स्थापित 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'सरस्वती', 'कल्याण', विशाल भारत', 'माधुरी' आदि जैसे पत्र कम ही हैं। लेकिन उनका अपना निजी महत्व है। हिन्दी साहित्य को सम्पन्न बनाने में उनका काफी हाथ रहा है और रहेगा। यद्यपि यह भी सच है कि 'महारथी', 'सुधा', 'गंगा', 'कमला', 'रूपाभ' आदि अनेक अच्छे पत्र अवतीर्ण होकर अस्त हो गये।

राष्ट्र के निर्माण में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं ने बहुत योग दिया है। 'हिन्दी प्रदीप', 'त्यागभूमि', 'भविष्य' और 'अभ्युदय' जैसे पत्रों ने प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का सफल प्रयत्न किया किन्तु तत्कालीन सरकार ने उनका दमन किया। 'कर्मवीर', 'आज', 'स्वतंत्र', 'सैनिक' और 'प्रताप' ने दमन के बावजूद भी राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाया। 'योगी', 'हुंकार', 'स्वराज्य' आदि ने आगे बढ़कर हमारा पथ-प्रदर्शन किया। आज 'अग्नि परीक्षा' का एक वर्ष गुजर चुका है। पंजाब-विभाजन, हैदराबाद और काश्मीर-काण्ड के कारण देश का वातावरण क्षुब्ध रहा। पर आज धर्म, राजनीति, समाजशास्त्र, व्यापार आदि विषयों को लेकर अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। कृषिशास्त्र से संबंधित

'कृषक' और 'कृषिसंसार' पत्रिकाएँ भी सुन्दर निकल रही हैं। देश की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिये पत्र-पत्रिकाओंका सर्वाङ्गीण विकास नितान्त आवश्यक एवं वांछनीय है। अतः ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी।

पुस्तक की उपयोगिता के सम्बन्ध में हम कुछ नहीं कह सकते। हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता अवश्य थी जिससे एक साथ सभी पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी प्राप्त हो सके। अहिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों से हमारे पास कितने ही पत्र पुस्तक मंगाने के लिये आये भी हैं। आशा है, आगामी संस्करण के लिये हिन्दी संसार अपने सुझाव तथा सहयोग प्रदान कर तथा सम्पादकगण एवं पत्रकार एतद्विषयक सूचना देकर अनुगृहीत करेंगे। जिन महानुभावों ने हमें सुझावादि भेजे, संशोधित संस्करण में उन्हें कार्य रूप देने का हम अधिकाधिक प्रयत्न करेंगे। इसके लिये प्रार्थना है कि सम्पादकगण अपने पत्रों की नीति, प्रकाशन-तिथि, संचालक व भूतपूर्व सम्पादकों की नामावली; आत्म-परिचय, (अपने द्वारा लिखित ग्रन्थों की सूची), पत्र के विशेषाङ्कों तथा अन्य कोई उल्लेखनीय बात का निर्देश करते हुए, यह स्थगित भी हुआ? आदि-आदि परिचय भेजकर कृतार्थ करेंगे। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा कर, उसे वे गौरवान्वित करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के लिये हम युक्तप्रान्त व बिहार तथा ग्वालियर, जयपुर, रींवा, कोटा, भोपाल आदि राज्यों के प्रकाशन-अधिकारियों के आभारी हैं जिन्होंने अपने स्थान से प्रकाशित पत्रों की सूची भेज कर हमें अनुगृहीत किया है। इनके अतिरिक्त प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादकों के पास व्यक्तिगत रूप से सर्वश्री अद्वैतकुमार गोस्वामी, शम्भूनाथ 'शेष', निरंकारदेव 'सेवक', बाबूलाल जैन 'फागुल्ल', चिरंजीत, बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश', कुमारीकृष्णा सरीन तथा हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़ (बीकानेर) के अध्यक्ष ने विभिन्न स्थानों से निकलने वाले पत्रों की तालिका हमें प्रेषित की है। श्री भगवानदास जी केला ने २८ वर्ष पहले की संकलित, पत्रों के इतिहास संबंधी सामग्री भेजकर हमें अनुगृहीत किया है। देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के आशीर्वाद तथा बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट (पिलानी) के माननीय मंत्री, लेफ्टिनेण्ट कमाण्डर श्रीयुत शुकदेवजी पाण्डे के सतत् प्रयत्न से यह पुस्तक इतनी

जल्दी प्रकाश में आ रही है। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे। समिति के अध्यक्ष, श्रद्धेय गुरुवर सहलजी के सक्रिय सहयोग, प्रोत्साहन एवं प्रेरणा के फलस्वरूप ही यह पुस्तक इस रूप में पाठकों के सामने आ सकी है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा आचार्य नित्यानन्द सारस्वत के भी हम बड़े आभारी हैं जिन्होंने कृपापूर्वक अपने उपयोगी लेख संग्रह के लिए दिये हैं। बिड़ला हाईस्कूल के शिक्षक श्री भूरसिंह शेखावत के आवरण पृष्ठ व महादेव भाई देसाई का चित्र बना देने के लिए हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। प्रेस कार्य में भाई गंगासिंह सांखल से बड़ी मदद मिली है। आशा है, हिन्दी-संसार इस पुस्तक का आदर करेगा। प्रकाशन जल्दी में होने के कारण इसमें बहुत सी त्रुटियाँ रही होंगी, जैसा कि सम्पादकद्वय सोचते हैं; सुझावादि पाकर अगले संस्करण में परिष्कार किया जा सकेगा। पुस्तक की सामग्री एकत्र करने आदि में काफी व्यय हो गया है, तथा कागज की असुविधा के कारण लागत मूल्य अधिक पड़ गया, इसके लिए हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं। पूज्य राजेन्द्रबाबू का सुझाव था कि 'पुस्तक-प्रकाशन के लिए प्रत्येक हिन्दी पत्र से कुछ चन्दा लिया जाय क्योंकि इससे उनका ही विज्ञापन बहुत कुछ होगा।' हम आशा रखते हैं कि अगले संस्करण के लिए विभिन्न पत्रादि हमें भरपूर-विज्ञापन देकर, प्रति वर्ष ऐसी ही डाइरेक्टरी प्रकाशित करने के लिये स्वावलम्बी बनने का अवसर प्रदान करेंगे।

गोपाष्टमी, २००५,
हिन्दी-साहित्य-समिति,
बिड़ला कालेज, पिलानी (जयपुर)

रामदेवसिंह चौधरी,
बी. ए, विशारद,
प्रधानमंत्री।

१. सम्पादक की आसन्दी

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, पी० एच० डी०

प्राचीन व्यास गद्दियों का नवावतार सम्पादकों की आसन्दी में हुआ है। ज्ञान के गूढ़ अर्थों का लोकहित के लिये जन-समुदाय में वितरण करने वाले प्राचीन व्यासो का उत्तराधिकार अर्वाचीन सम्पादकों के हिस्से में आया है। व्यासों ने वेदों की समाधि-भाषा का विस्तार और व्याख्यान करके उस सरस्वती को लोक के कंठ तक पहुँचाया। आज विवेक-शील सम्पादकों को भी नये भारतवर्ष में ज्ञान विज्ञान के लिये कार्य सम्पन्न करना है। लोक-जीवन के बहुमुखी पक्षों का अध्ययन करके उसके लिये जो कुछ भी मूल्यवान, सर्वभूत हितकारी और कल्याण-प्रद हो सकता है उसे लोक के दृष्टि पथ में लाने का कार्य सम्पादकों का ही है। सम्पादक की दृष्टि अपनी मातृ-भूमि के भौतिक रूप को गरुड़ की चक्षुष्मता से देखती है। भूमि पर जो भी जन्म लेकर बढ़ता है उस सबके प्रति सम्पादक को प्रेम और रुचि होनी चाहिये। पृथ्वी के हिमगिरि और नदियाँ सस्य-सम्पत्ति और वृक्ष वनस्पति, मणि हिरण्य और खनिज द्रव्य, पशु-पक्षी एवं जलचर, आकाश में संचित होने वाले मेघ और अन्तरिक्ष में बहने वाले वायु, समुद्र के अगाध जल मे संचार करने वाले मुक्ता शुक्ति और तिमिंगल मत्स्य—सब राष्ट्र के जीवन के अभिन्न अंग हैं और सबके विषय मे ही सम्पादक को लोक शिक्षण का कार्य करना चाहिए। समुद्र की तलहटी में सोई हुई सीपियाँ अपनी मुक्ता राशि से राष्ट्र की नवयुवतियों के शरीर को सजाती हैं, अतएव उनके हित के साथ भी हमारे मङ्गल का घनिष्ट सम्बन्ध है। जागरूक राष्ट्र के सम्पादक को उनके विषय में भी सावधान और दत्त रुचि होने की आवश्यकता है। प्रवाल और मुक्ताओं

का कुशल-प्रश्न पूछे बिना राष्ट्र समृद्ध कैसे कहा जा सकता है? जिन समाचार-पत्रों के स्तम्भों में पृथ्वी से सम्बन्धित सब पदार्थों के लिये स्वागत का भाव है वे ही लोक की सच्ची शिक्षा का कार्य कर सकते हैं।

सच्चे सम्पादक को अपने पैरों के नीचे की भूमि के प्रति सबसे पहिले सचेत होना चाहिये। अपने घर, गाँव, नगर, प्रान्त और देश के जीवन के रोम-प्रति रोम को झकझोरना हमारा पहिला कर्त्तव्य हो। 'घर खीर तो बाहर भी खीर' घर में एकादशी तो बाहर भी सूना। अतएव विदेशों के समाचार और जीवन के प्रति सतर्क रहते हुए भी हमें निज घर के प्रति उदासीन नहीं होजाना चाहिए। आज मातृ-भाषाओं के अनेक पत्रों को घरेलू समाचार और जीवन की व्याख्या के लिये एक नये प्रकार की कर्मठ दीक्षा ग्रहण करनी है।

सम्पादक की आसन्दी शंकर के कैलाश की तरह ऊँची प्रतिष्ठा का बिन्दु है। वहाँ से सत्य और ज्ञान की धाराओं का निरन्तर लोक में प्रवाह होना चाहिए। जागा हुआ सम्पादक लोक से नये अलख जगाने का सूत्र-पात करता रहता है, कारण कि और लोग जहाँ सोते रहते हैं उन विषयों से भी सम्पादक जागता रहता है और अपने जागरण के द्वारा लोक के मस्तिष्क को भूली हुई बातों के प्रति जाग्रत करता है। व्याख्या, सतत् व्याख्या सम्पादक का स्वभाव सिद्ध धर्म है। घनीभूत ज्ञान को ला कर और विस्तृत बनाकर लोक में फैला देना सम्पादक का कर्तव्य है।

सम्पादक की आसन्दी अभय, सत्य, ज्ञान और कर्म के चार पायों पर खड़ी है। व्यक्ति और समाज, देश और विदेश उस आसन्दी के आड़े-तिरछे डंडे हैं। लोक की सेवा उसके बैठने का ताना-बाना है। नया उन्मेष, नई कल्पना, स्फूर्ति और उत्साह, ये उस आसन पर आराम से बैठने के लिये गुदगुदे वस्त्र हैं।

जन संवेदना या सहानुभूति और न्याय-बुद्धि, ये सम्पादक की भव्य आसन्दी के अलंकार हैं। इस आसन्दी पर भौम ब्रह्मा की सेवा के

लिये सम्पादक का अभिषेक किया जाता है। राजा और प्रजा दोनों की भावनाएं सम्पादक की आसन्दी में मिली हैं। जब कुशल सम्पादक इस प्रकार की आसन्दी पर बैठता है तब राष्ट्र का जन्म होता है, एवं राष्ट्र के विस्तार और रूप-सम्पादन के नये अंकुर खिलते एवं नये फूल-फल फूलते-फलते हैं। राष्ट्र की रूप-समृद्धि के साथ-साथ सम्पादक का तेज भी लोक में मंडित होता है, और चन्द्र-सूर्य की भाँति दिग् दिगन्त मे व्याप जाता है। जिस सम्पादक के तप और श्रम से राष्ट्र का जन्म और संवर्धन हो सके, वही सच्चा, सफल सम्पादक है। उसे ही प्रजायें चाहती हैं और श्रुतियों का यह आशीर्वाद उमी में चरितार्थ होता है:—

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु।

---

२. हिन्दी पत्रों के सवा सौ वर्ष

जब तक हम किसी वस्तु की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भलीभाँति नहीं समझलें तब तक उस वस्तु की समग्रता का बोध नहीं हो पाता। किसी वस्तु विशेष के सम्बन्ध में हमारा प्रत्यक्ष ज्ञान तो देश और काल द्वारा सीमित होता है किन्तु इतिहास द्वारा ही उस वस्तु की व्यापकता को हम हृदयंगम कर पाते हैं। इतिहास का आश्रय अगर हम न लें तो हमारा ज्ञान केवल वर्तमान तक ही सीमित एवं अधूरा रह जायगा, किन्तु इतिहास का दीपक लेकर हम अन्धकारपूर्ण अतीत का भी दर्शन कर सकते हैं। हमारे ज्ञान में भी संपूर्णता की संभावना तभी हो सकती है जब हम वर्तमान और अतीत को मिला कर देखें और भविष्य पर भी अपनी दृष्टि रखें।

हिन्दी में आज अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकल रही हैं किन्तु इनका प्रारम्भ कब और किस रूप में हुआ था, इसको समझने के लिए तो हमें इतिहास का ही सहारा लेना होगा। पत्र-पत्रिकाओं के इस विशाल वट वृक्ष की अनेक जटाएँ आज जमीन में फैली हुई दिखलाई पड़ रही हैं किन्तु यह वट वृक्ष कितना पुराना है, इसका पता तो वे ही लगा सकेंगे जो इतिहासकी मशाल हाथ में लेकर प्राचीन और वर्तमान की अविच्छिन्न शृंखला को उसके समग्र रूप में देखने की क्षमता रखते हों। बाबू राधाकृष्णदास ने बहुत वर्ष हुए, 'हिन्दी के सामयिक पत्रों का इतिहास' शीर्षक एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी तथा श्री बालमुकुन्द गुप्त ने भी 'गुप्त निबन्धावली'* में इस विषय पर

* 'गुप्त निबन्धावली' श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी द्वारा संपादित और काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

प्रकाश डाला था। उक्त दोनों पुस्तकों को पढ़कर लोगों की यह धारणा बन गई थी कि हिन्दी का प्रथम समाचार-पत्र 'बनारस अखबार' था जो सन् १८४५ में राजा शिवप्रसाद की सहायता से काशी से प्रकाशित हुआ था। 'बनारस अखबार' लीथो में रद्दी से कागज पर छपता था और एक महाराष्ट्रीय सज्जन गोविन्द रघुनाथ थत्ते उसका सम्पादन करते थे। किन्तु वस्तुतः हिन्दी का पहला-पत्र 'बनारस अखबार' नहीं था, पहला पत्र था 'उदन्त मार्तण्ड' जो नागरी अक्षरों में मुद्रित होकर सन् १८२६ की ३० मई को कलकत्ते से पहले पहल प्रकाशित हुआ था। यह प्रति मंगलवार को निकलता था, मासिक मूल्य २ रु. था और इसके सम्पादक थे—कानपुर निवासी पं. जुगलकिशोर शुक्ल। 'उदन्त मार्तण्ड' ही हिन्दी का सबसे पहला समाचार-पत्र था, यह उक्त पत्र के निम्नलिखित उद्धरण से प्रमाणित होजाता है—"यह उदंत-मार्त्तण्ड अब पहिले पहल हिन्दुस्तानियो के हित के हेत जो आज तक किसी ने नहीं चलाया, पर अंगरेजी ओ पारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जान्ने ओ पढ़ने वालों को ही होता है। इससे सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देख कर आप पढ़ ओ समझ लेयँ ओ पराई अपेक्षा न करें जो अपने भाषे की उपज न छोड़ें इसलिए ...... श्रीमान् गवरनर जेनेरेल बहादुर की आयस से ऐसे साहस में चित्त लगाय के एक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा। जो कोई प्रशस्त लोग इस खबर के कागज के लेने की इच्छा करें तो अमड़ातला की गली ३७ अंक मार्तण्ड-छापाघर मे अपना नाम ओ ठिकाना भेजने से ही सतवारे के सतवारे यहाँ के रहने वाले घर बैठे और बाहिर के रहने वाले डाक पर कागज पाया करेंगे।"

इस पत्र मे खड़ी बोली का 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से उल्लेख किया गया है। 'उदन्त-मार्तण्ड' ही हिन्दी का सबसे पहला पत्र था, इस अन्वेषण का श्रेय 'माडर्न रिव्यू' के सहकारी सम्पादक श्री ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी को है। ग्राहकों की कमी और सरकारी सहायता न मिलने के कारण १½ वर्ष बाद

ही यह पत्र बन्द हो गया। ४ दिसम्बर सन् १८२७ को इस पत्र की अन्तिम संख्या प्रकाशित हुई जिसमें सम्पादक ने लिखा था—

आज दिवस लौं उग चुक्यो मार्तण्ड उदन्त।
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त॥

बंगीय साहित्य परिषद् तथा राजा राधाकान्त देव के कलकत्ता स्थित पुस्तकालय में 'उदन्त-मार्तण्ड' की कुछ पुरानी प्रतियाँ आज भी सुरक्षित हैं।

१८ वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में फारसी के पत्रों का ही इस देश में बोलबाला था क्योंकि फारसी भाषा ही इस समय अदालती भाषा के पद पर प्रतिष्ठित थी। सन् १८०१ से भी कई वर्षों पहले फारसी में अखबार निकलते रहे हैं। सन् १८१८ में 'दिग्दर्शन' और 'समाचार-दर्पण' नामक बंगला भाषा के पत्र पहले पहल कलकत्ते से प्रकाशित हुए। यद्यपि प्लासी की लड़ाई के बाद सन् १७५७ से अंग्रेज बहुत से प्रदेशों पर शासन करने लगे थे, तो भी सन् १७८० के पहले भारतवर्ष मे अंग्रेजी का कोई पत्र नहीं निकलता था, सन् १७८० में जेम्स ऑगस्ट हिकी ने 'बंगाल गजट' (हिकी गजट) की नींव डाली। हिकी वारेन हेस्टिंग्स और चीफ जस्टिस सर एलिजा पर बराबर उनके अनुचित कार्यों के प्रति आक्षेप करता रहता था। उसने जेल की यातनाएँ सहीं, जुरमाने दिये किन्तु आत्माभिमानी सम्पादक के कर्त्तव्य का वह अन्त तक पालन करता रहा। 'मुम्बई वर्तमान' गुजराती का पहला साप्ताहिक पत्र था जो सन् १८३० में निकला, साल भर बाद यह अर्द्ध-साप्ताहिक कर दिया गया। कहा जाता है कि सबसे पहला उर्दू पत्र 'हिन्दुस्थानी' था जो कलकत्ते के हिन्दुस्थानी प्रेस से सन् १८१० में छपा था किन्तु इस पत्र के बारे में अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इन वर्षों में फारसी के जो पत्र निकलते थे उनमें से कई एक पत्रों में उर्दू के भी पृष्ठ रहा करते थे। श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के मतानुसार तो सन् १८३१ तक उर्दू का कोई

पत्र नहीं निकला था‡। विभिन्न भाषाओं में कलकत्ते से सबसे पहले जो इतने समाचार पत्र निकले, इसका स्पष्ट ही कारण यह है कि शासकों का सीधा सम्बन्ध सर्वप्रथम बंगाल प्रान्त से ही रहा।

भारतवर्ष की समस्त भाषाओं के पत्रों का विवरण उपस्थित रखना लेखक का अभीष्ट नहीं है; प्रस्तुत लेख का विषय तो हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के उद्‌भव और विकास का विवेचन करना है। विवेचन की सुविधा के लिए हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास को हम निम्नलिखित चार युगों मे विभाजित कर सकते हैं—

(१) पूर्व-भारतेन्दु-काल (सन् १८२६ से सन् १८६७)
(२) भारतेन्दु-काल (सन् १८६७ से सन् १८८५)
(३) उत्तर-भारतेन्दु और द्विवेदी काल (सन् १८८५ से १९०३; सन् १९०३ से सन् १९१८)
(४) वर्तमान-काल (सन् १९१८ से सन् १९४८)

पूर्व-भारतेन्दु-काल

सबसे पहले हिन्दी-पत्र 'उदन्त-मार्तण्ड' का ऊपर उल्लेख हो चुका है जो कलकत्ते से निकला था। दूसरा पत्र 'बंगदूत' भी सन् १८२९ मे कलकत्ते से ही निकला। यह बंगला, फारसी और हिन्दी तीन भाषाओं में निकलता था। इसके सम्पादक नीलरतन हलदार थे। यह पत्र प्रति रविवार को प्रकाशित होता था और इसका मासिक मूल्य एक रुपया था। सन् १८२९ में प्रकाशित होने वाले 'बंगाल हेरल्ड' मे भी हिन्दी का अंश छपता था। २१ जून १८३४ के बंगाली अखबार 'सामाचार दर्पण' से ज्ञात होता है कि अंगरेजी और हिन्दुस्तानी मे उसी वर्ष एक 'प्रजामित्र' नामक साप्ताहिक और

‡सन् १९४६ के 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ' में प्रकाशित श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'भारत में समाचार पत्र और स्वाधीनता' शीर्षक लेख, पृ० १८३।

प्रकाशित हुआ होगा। सन् १८४५ में राजा शिवप्रसाद की सहायता से 'बनारस अखबार' का जन्म हुआ, जिसकी भाषा उर्दू-हिन्दी मिश्रित थी। हिन्दी-प्रदेश से निकलने वाला सबसे पहला यही पत्र था, इसलिए इसका विशेष महत्त्व है। इससे पहले हिन्दी के जितने पत्र निकले वे सब बंगाल से निकले थे। सन् १८४६ में मौलवी नासिरुद्दीन के सम्पादकत्व में कलकत्ते से फिर एक पत्र निकला 'मार्तण्ड' जो हिन्दी, उर्दू, बँगला, फारसी तथा अंग्रेजी पाँच भाषाओं में छपता था। 'ज्ञानदीपक' नामक पत्र भी कलकत्ते से इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। सन् १८४६ में 'मालवा अखबार' नामक एक साप्ताहिक हिन्दी-उर्दू में निकला। 'बँगला सामयिक पत्र' से ज्ञात होता है कि सन् १८४६ में एक 'जगद्दीपक भास्कर' नामक पत्र अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी में और निकला था। सन् १८५० में तारामोहन मैत्र के सम्पादकत्व में काशी से 'सुधाकर' नामक पत्र निकला। कहते हैं कि इसी पत्र के नाम पर महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी का नामकरण हुआ था। सन् १८५० में 'उदन्त मार्तण्ड' के भूतपूर्व सम्पादक पं. जुगलकिशोर शुक्ल ने कलकत्ते से फिर 'साम्यदण्ड मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक निकालना शुरू किया। यह पत्र भी यद्यपि बहुत समय तक नहीं चल सका और सन् १८५२ में ही बन्द हो गया, तथापि इससे इस बात का पता चलता है कि शुक्ल महोदय की पत्रकारिता में कितनी अधिक अभिरुचि थी। सन् १८५२ में सदासुखलाल के सम्पादकत्व में आगरे से 'बुद्धि-प्रकाश' नामक साप्ताहिक पत्र निकला। सन् १८५३ में लक्ष्मणप्रसाद के सम्पादकत्व में ग्वालियर से 'ग्वालियर गजेट' का प्रकाशन हुआ।

सन् १८५४ का वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण समझा जाना चाहिए क्योंकि इसी वर्ष कलकत्ते से 'समाचार सुधावर्षण' नामक सर्व प्रथम हिन्दी दैनिक का प्रकाशन हुआ था। इस पत्र के सम्पादक थे श्री श्यामसुन्दर सेन। इसमें हिन्दी और बँगला दोनों भाषाओं का प्रयोग होता था। सन् १८५७ के गदर से पहले हिन्दी के पत्र अधिक सख्या मे नहीं निकले किन्तु यह ध्यान देने की

बात है कि गदर के बाद हिन्दी के पत्र अपेक्षाकृत अच्छी संख्या मे निकलने लगे। सन् १८६१ में १७ पत्र निकले जिनमे ६ हिन्दी के थे। आगरे से राजा लक्ष्मणसिंह का 'प्रजा-हितैषी' सन् १८६१ में ही निकला था। इसी वर्ष इटावा से 'प्रजाहित' नामक पाक्षिक हिन्दी गजट का प्रकाशन हुआ था। 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' जिसका प्रकाशन सन् १८५६ में हुआ था और सन् १८६५ मे जो श्री गुलाबशंकर के सम्पादकत्व में निकल रही थी, केवल हिन्दी मे छपती थी। 'ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका' मे (जिसका प्रकाशन सन् १८६६ में हुआ था) विशेषत: ब्रह्म-समाज के सिद्धान्तों का प्रतिपादन रहता था। सन् १८६७ मे भारतेन्दु के प्रसिद्ध पत्र 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन हुआ था।

पूर्व भारतेन्दु-काल के जो समाचार-पत्र थे, उनमें उर्दू-पत्रों की प्रधानता रही अथवा यों कहिये कि बहुत से पत्रों में उर्दू के साथ-साथ हिन्दी का भी कुछ अंश छप जाता था। इसका यह अर्थ न समझा जाय कि विशुद्ध हिन्दी के पत्र निकले ही नहीं, केवल हिन्दी के पत्र भी निकले किन्तु उनके ग्राहक बहुत कम थे। हिन्दी के पत्र केवल भाषा-प्रेम के लिये निकाले जाते थे; उनमे न भाषा की स्थिरता थी, न वे नियमित रूप से निकल ही पाते थे; समाचारों को भी उनका यथोचित महत्त्व प्राप्त नहीं हुआ था। जिन दिनों कलकत्ते से हिन्दी-पत्र निकलते थे, उन दिनों संयुक्तप्रान्त, मध्य-प्रदेश, मध्यभारत आदि से अनेक फारसी के पत्र निकला करते थे। सन् १८३७ में इन प्रान्तों की अदालती भाषा उर्दू हो जाने के कारण इधर उर्दू पत्रों का ही विशेष बोलबाला रहा। हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी-पत्र उर्दू पत्रों की अपेक्षा बड़ी देर से शुरू हुए। सन् १८४६ में हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं में 'मालवा अखबार' निकला, फिर काशी का 'सुधाकर' प्रकाशित हुआ। यद्यपि ऊपर यह कहा गया है कि 'बनारस अखबार' हिन्दी भाषी प्रदेश का पहला हिन्दी पत्र था तथापि सच तो यह है कि यह पत्र भी केवल नागरी लिपि में प्रकाशित होता था, भाषा इसकी भी उर्दू ही थी। 'सुधाकर' भी दो भाषाओं में निकलता था किन्तु सन् १८५३ से यह केवल हिन्दी में प्रकाशित होने

लगा था। स्व० पं० रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में 'इस पत्र की भाषा बहुत कुछ सुधरी हुई तथा ठीक हिन्दी थी, पर यह पत्र कुछ दिन चला नहीं।' सन् १८६६ मे बाबू होरीलाल के सम्पादन मे जोधपुर से हिन्दी-उर्दू में 'मारवाड़ गजट' का प्रकाशन होने लगा।

भारतेन्दु के पहले के पत्र सिर उठाने की चेष्टा कर रहे थे। पत्रों का बीज बोया जा चुका था किन्तु अनुकूल वातावरण न मिलने के कारण बहुत-से पत्र असमय मे ही मुरझा गये।

भारतेन्दु-काल (सन् १८६७ से सन् १८८५)

यद्यपि भारतेन्दु बाबू का जन्म सन् १८५० में हुआ था किन्तु उनके पत्रकार-जीवन का आरम्भ 'कवि वचन सुधा' से हुआ जिसे वे सन् १८६७ में मासिक पत्र के रूप में निकालने लगे थे। इस समय यद्यपि 'वृत्तान्त-विलास' और 'ज्ञान-दीपक' आदि अन्य पत्र भी निकल रहे थे किन्तु इनमे से कोई ऐसा न था जो भारतेन्दु के पत्र की बराबरी करता। 'कवि वचन सुधा' में पुराने कवियों की कविताएँ छपा करती थीं; स्वयं भारतेन्दु की कविताएँ भी इसमे प्रकाशित हुआ करती थीं। कोई समाचार नहीं छपते थे और गद्य का अंश भी नाम मात्र को ही रहा करता था किन्तु आगे चल कर जब 'कवि वचन सुधा' ने पहले पाक्षिक और फिर साप्ताहिक रूप धारण किया तो इसमे समाचार तथा अन्य विषयों पर निबन्ध भी छापे जाने लगे। यद्यपि भारतेन्दु बाबू की इस समय हाकिमों में बड़ी प्रतिष्ठा थी और ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी आदि पदों से वे सम्मानित थे परन्तु इन सब बातों की कुछ भी चिन्ता न करके पूर्ण स्वाधीन भाव से राजकीय विषयों पर कलम उठाई। 'कवि वचन सुधा' के उद्देश्य की महत्ता और विचारों की स्वाधीनता उसके निम्नलिखित सिद्धान्त-सूत्र से स्पष्ट है—

> "खल जनन से सज्जन दुखी मत होहिं हरि-पद मति रहैं,
> उपधर्म छूटैं सत्व निज भारत गहै कर दुख बहैं।

बुध तजहिं मत्सर नारि नर सम होंहि जग आनँद लहैं,
तजि ग्राम कविता सुकवि जन की अमृत बानी सब कहैं ॥"

ज्यों-ज्यों सर्वसाधारण की सहानुभूति मिलती गई त्यों-त्यों इस पत्र की उन्नति व प्रचार में वृद्धि होती गई। भारतवर्ष के बाहर भी इस पत्र का गुण गान होने लगा। फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् गार्सां द तासी ने सन् १८७० में 'कवि वचन सुधा' के सम्बन्ध में अपने सुविख्यात पत्र में एक प्रशंसात्मक टिप्पणी लिखी थी। इस पत्र के लेख ऐसे ललित होते थे कि तत्कालीन हिन्दी-प्रेमी लोग चातक की भाँति उसके लिए टकटकी लगाये रहते थे और वह हाथों हाथ बँट जाता था। इस पत्र के अनुकरण पर 'ज्ञान-प्रदायिनी', 'हिन्दू', 'बांधव' आदि अनेक पत्र निकले किन्तु वे इतने लोक-प्रिय न हो सके। सन् १८७३ में भारतेन्दु ने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नाम की मासिक पत्रिका निकाली जिसका नाम आठ संख्याएँ निकल जाने के बाद 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' हो गया। हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले पहल इसी 'चन्द्रिका' में प्रकट हुआ। जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कण्ठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उसका दर्शन पहले पहल इसी पत्रिका में हुआ। स्वयं भारतेन्दु ने नयी सुधरी हुई हिन्दी का उदय इसी समय से माना है। उन्होंने 'कालचक्र' नाम की अपनी पुस्तक में नोट किया है कि 'हिन्दी नई चाल में ढली, सन् १८७३ ई०'। इस 'हरिश्चन्द्री हिन्दी' के आविर्भाव के साथ ही नये-नये लेखक भी तैयार होने लगे। 'चन्द्रिका' में भारतेंदु-जी आप तो लिखते ही थे, बहुत से और लेखक भी उन्होंने उत्साह दे देकर तैयार कर लिये थे। हिन्दी गद्य साहित्य के इस आरम्भ-काल में ध्यान देने की बात यह है कि उस समय जो थोड़े से गिनती के लेखक थे उनमें विदग्धता और मौलिकता थी और उनकी हिन्दी हिन्दी होती थी। वे अपनी भाषा की प्रकृति को पहचानने वाले थे। बँगला, मराठी, उर्दू, अँग्रेजी के अनुवाद का वह तूफान जो पचीस तीस वर्ष पीछे चला और जिसके कारण हिन्दी का स्वरूप ही संकट में पड़ गया था, उस समय नहीं था। उस समय

ऐसे लेखक न थे जो बँगला की पदावली और वाक्य ज्यों के त्यों रखते हों या अँग्रेजी वाक्यों या मुहावरों का शब्द प्रति शब्द अनुवाद करके हिन्दी लिखने का दावा करते हों* ।

सन् १८७३ मे भारतेन्दु ने स्त्री-शिक्षा के सम्बन्ध में 'बालबोधिनी' नामक पत्रिका निकाली थी। बहुत से विद्वानों का मत है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ही सच्चे अर्थ में हिन्दी पत्रकारिता के जनक हैं। स्वर्गीय पं० बदरीनारायण चौधरी बाबू हरिश्चन्द्र के सम्पादन-कौशल की बड़ी प्रशंसा किया करते थे। भारतेन्दु की 'कवि वचन सुधा' तो इतनी महत्वपूर्ण पत्रिका थी कि उसमें स्वामी दयानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा मि० ग्रिफिथ जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान् भी लेख लिखा करते थे। केवल १७ वर्ष की अवस्था मे ही इस प्रतिभाशाली युवक ने इस विख्यात पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इस पत्र की ऐसी असाधारण उन्नति और एक युवा पुरुष के अभ्युदय से स्वार्थ-साधक और हाकिमों के खुशामदी लोगो को बड़ा दुःख हुआ। चुगली का बाजार गर्म हुआ। जो निष्पक्ष राजनैतिक लेख इस पत्र में प्रकाशित होते थे, वे राजद्रोहात्मक करार दिये जाने लगे। जो कविता या पंच हास्य, श्लेष का आश्रय लेकर छपते थे, वे अपमानसूचक सिद्ध किये जाने लगे। फलतः सरकार की कोप-दृष्टि हुई और सरकारी सहायता बन्द कर दी गई। इस सम्बन्ध में यद्यपि भारतेन्दु ने बड़ी लिखा-पढ़ी की किन्तु उसका कोई फल न हुआ। 'बाल-बोधिनी' तो प्रायः गवर्नमेंट के ही आश्रय से चलती थी, इसके बाहरी ग्राहक बहुत कम थे, इसलिये यह पत्रिका उसी समय से बन्द होगई। सरकार का यह अनौचित्य देखकर भारतेन्दु ने आनरेरी मजिस्ट्रेटी और म्युनिसिपल कमिश्नरी आदि पदों से इस्तीफा देदिया और सरकारी हाकिमों से मिलना-भेंटना भी बिलकुल छोड़ दिया। सरकार की ओर से न अपनाये जाने पर भी 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र-

---

*हिन्दी साहित्य का इतिहास (स्वर्गीय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) पृ० ५४६-५४७।

चन्द्रिका' का आदर सर्व साधारण की दृष्टि में बढ़ता ही गया। हिन्दी के कितने ही तत्कालीन विद्वानों ने इसमें लिखना आरम्भ कर दिया और उनकी लेखनी ने इसके द्वारा गौरव और सम्मान पाया। हरिश्चन्द्र की मृत्यु के बाद सन् १८८५ में 'कवि वचन सुधा' का निकलना बन्द हो गया।

भारतेन्दु जैसे साहित्य-सेवियों से प्रेरणा पाकर हिन्दी के बहुत से पत्र पनपने लगे। समाचार-पत्रों के महत्व को अब लोग समझने लग गये थे। सन् १८७० में अलमोड़ा से 'अलमोड़ा समाचार' प्रकाशित होने लगा। पहले यह साप्ताहिक निकला; फिर यह द्वैमासिक होगया था। सन् १८७१ में बाबू कार्तिकप्रसादजी ने कलकत्ते से 'हिन्दी दीप्ति प्रकाश' नामक पत्र निकाल कर उस विशाल नगरी में हिन्दी का संदेश सुनाया और हिन्दी भाषा के प्रचार व आन्दोलन का पथ प्रशस्त किया। इसी वर्ष पं० केशव-राम भट्ट के सम्पादकत्व में बिहार प्रान्त से 'बिहार-बन्धु' नामक पत्र प्रकाशित होने लगा। 'बुन्देलखण्ड अखबार' का प्रकाशन भी इसी साल से प्रारम्भ हुआ। सन् १८७४ में हिन्दी भाषानुरागी श्रीनिवासदासजी ने दिल्ली से 'सदादर्श' नामक पत्र निकाला, जो दो वर्ष पीछे 'कवि वचन सुधा' मे मिला दिया गया। इसी वर्ष प्रयाग से 'नाटक प्रकाश' नामक पत्र निकलने लगा जिसमें विभिन्न नाटक छपा करते थे। सन् १८७६ में 'काशी पत्रिका' का प्रकाशन हुआ जिसकी भाषा उर्दू मिश्रित हिन्दी थी। बाद में चल कर इसमें केवल छात्रोपयोगी लेख ही रहने लगे थे। अलीगढ़ से स्वनामधन्य बाबू तोतारामजी ने 'भारत-बन्धु' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरम्भ किया था जो सन् १८६४ तक प्रकाशित होता रहा।

हिन्दी पत्रों के इतिहास में सन् १८७७ का वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसी वर्ष पं० बालकृष्ण भट्ट के सम्पादकत्व मे सुप्रसिद्ध मासिक 'हिन्दी प्रदीप' का प्रयाग से प्रकाशन होने लगा था। सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं पर अपने स्वतन्त्र विचार भट्टजी इस पत्र द्वारा प्रकट किया करते थे। अपने क्षेत्र के पाठकों में राजनैतिक चेतना जाग्रत करना

भट्टजी का ही काम था। अपने विचारों में वे पक्के स्वदेशी और राष्ट्रीयता के कट्टर पृष्ठपोषक थे। फिर भी 'हिन्दी प्रदीप' के ग्राहकों की संख्या २०० से अधिक नहीं थी। घाटा उठाकर भी भट्टजी इस पत्र को करीब ३२ वर्ष तक निकालते रहे। अंत मे सरकार की ओर से प्रतिबंध लगाये जाने पर ही यह पत्र बन्द हुआ। कायस्थ पाठशाला में ५०) मासिक पर वे संस्कृत के प्रोफेसर थे। प्रायः उनका कुल मासिक वेतन प्रेस के बिलों को चुकाने में ही लग जाता था। जिस शख्स ने ३३ वर्षों तक एक मासिक पत्र का सम्पादन किया, उसके सम्बन्ध से प्रसिद्ध है कि उसने अपने सब लेख पहले पहल या तो परीक्षार्थियो की उत्तर-पुस्तको की दूसरी ओर या रद्दी अखबारो पर लिखे थे। हिन्दी के निबन्ध-लेखको मे भी भट्टजी का प्रमुख स्थान है। साहित्य, राजनीति, समाज-शास्त्र नैतिकता सभी विषयों से सम्बन्ध रखने वाले लेख 'हिन्दी प्रदीप' में छपते रहते थे। 'कवि वचन सुधा' के बाद ख्याति और महत्व की दृष्टि से 'हिन्दी प्रदीप' का ही नम्बर आता है। वैसे तो लाहौर का 'मित्र विलास' साप्ताहिक भी सन् १८७७ से ही निकलने लगा था किन्तु इसे 'हिन्दी प्रदीप' के समकक्ष नहीं रखा जा सकता। यह पहले लीथो मे छपता था, सन् १८८७ से टाइप में छपने लगा। उससे पहले पंजाब में कोई उल्लेख योग्य हिन्दी पत्र न था; ब्रह्मसमाजियों द्वारा निकाला हुआ 'हिन्दू बांधव' बन्द हो चुका था। केवल 'ज्ञान प्रदायिनी' नामक ब्रह्मसमाज सम्बन्धी मासिक पत्रिका उस समय उर्दू-हिन्दी में निकलती थी। 'मित्र विलास' बहुत घाटे में चलता था, इसलिए अंततः अपने स्वामी के देहान्त के साथ इसे भी समाप्त होना पड़ा।

सन् १८७७ मे निकलने वाले हिन्दी साप्ताहिकों में 'भारतमित्र' का स्थान सर्व प्रथम है। इसके प्रकाशन का श्रेय पं० छोटूलाल मिश्र और पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र को है। यह पहला साप्ताहिक है जो बड़ी योग्यता से निकाला गया और जिसकी लेख-प्रणाली भी प्रशंसनीय रही। सामान्य समाजोपयोगी विषयों के साथ राजनैतिक विषयों पर भी इस पत्र में अच्छी

चर्चा हुआ करती थी। इसके सम्पादकों में हरमुकुन्द शास्त्री और बाबू बालमुकुन्द गुप्त प्रधान हुए। गुप्तजी के लेख बड़े हँसी-दिल्लगी पूर्ण हुआ करते थे। 'भारत मित्र' बड़ी धूमधाम से निकला जो बहुत दिनों तक हिन्दी संवाद-पत्रों में एक ऊँचा स्थान ग्रहण किए रहा। प्रारम्भकाल में जब पण्डित छोटूलाल मिश्र इसके सम्पादक थे, तब भारतेन्दुजी भी कभी-कभी इस पत्र में लिख दिया करते थे। "१६ वीं शताब्दी के अंतिम दशक मे 'भारत मित्र' दो बार दैनिक हुआ और एक साल से अधिक न रहा सका। तीसरी बार १६११ में और चौथी बार १६१२ मे वह दैनिक हुआ। सन् १६३४-३५ में भारत से 'भारत मित्र' का नामोनिशान मिट गया।"*

सन् १८७८ में पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र के संपादन मे 'उचित वक्ता' और पंडित सदानंद मिश्र के सम्पादन में 'सार सुधानिधि' ये दो पत्र कलकत्ते से निकले। इन दोनों पत्रों ने हिन्दी के एक बड़े अभाव की पूर्ति की। 'उचित वक्ता' ने हिन्दी पत्रों में नई रंगत पैदा कर दी। इसमें सभी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध लेखकों के लेख रहते थे। इसका मूल्य कम था; लेख और चुटकले तीखे और चटपटे होते थे। 'सार सुधानिधि' की भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी, लेख उत्तम और गभीर होते थे। अन्यान्य विषयों के साथ राजनैतिक लेखों का भी इसमे समावेश रहता था।

सन् १८७६ में उदयपुर राज्य के संरक्षण में 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' का प्रकाशन हुआ। पंडित वंशीधर वाजपेयी शास्त्री के सम्पादकत्व में यह पत्र अच्छे ढंग से निकला किन्तु १८८४ में सज्जनसिंहजी की मृत्यु हो जाने पर इस पत्र का वह महत्त्व जाता रहा। इसी वर्ष जयपुर से अर्द्ध साप्ताहिक के रूप में 'जयपुर गजट' का प्रकाशन हुआ था। सन् १८८० में खड्ग-विलास प्रेस बांकीपुर से बाबू रामदीनसिंह के सम्पादकत्व में 'क्षत्रिय

* देखिये 'प्रेमी अभिनंदन ग्रन्थ' (सन् १९४६) में प्रकाशित पं० अंबिका प्रसादजी वाजपेयी का 'भारत में समाचार पत्र और स्वाधीनता' शीर्षक लेख।

पत्रिका' नामक मासिक का प्रकाशन हुआ। इसमें प्रसिद्ध लेखकों के मौलिक लेख रहा करते थे। हिन्दी भाषा पर भी उच्च कोटि के लेख इस पत्र में निकले। ग्रियर्सन ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में इस पत्र की बड़ी प्रशंसा की है।

सन् १८८१ में श्री बदरीनारायणजी चौधरी प्रेमधन ने 'आनंद कादंबिनी' नामक मासिक पत्र निकाला। पुस्तकों की आलोचना सबसे पहले इसी पत्र में निकलने लगी थी। आगे चलकर पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने पुस्तक-समीक्षा-विषयक स्तंभ 'सरस्वती' में रखा था। आज प्रायः सभी पत्रों में पुस्तक-समीक्षा निकल रही है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में "प्रेमघनजी ने अपने ही उमड़ते हुए विचारों और भावों को अंकित करने के लिए यह पत्रिका निकाली थी। और लोगों के लेख उसमें नहीं के बराबर रहा करते थे। इस पर भारतेन्दुजी ने उनसे एक बार कहा था कि 'जनाब! यह किताब नहीं कि जो आप अकेले ही इकराम फरमाया करते हैं, बल्कि अखबार है कि जिसमें अनेक जन लिखित लेख होना आवश्यक है; और यह भी जरूरत नहीं कि सब एक तरह के लिक्खाड़ हों।" प्रेमघनजी की भाषा बड़ी रंगीन, अनुप्रासमयी और पाण्डित्यपूर्ण होती थी। सन् १८८२ में काशी से साहित्याचार्य पं० अंबिकादत्तजी व्यास ने 'वैष्णव पत्रिका' का प्रकाशन आरम्भ किया जो आगे चलकर 'पीयूष प्रवाह' के नाम से निकलने लगी।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पं० प्रतापनारायण मिश्र ने १५ मार्च १८८३ से 'ब्राह्मण' नामक एक १२ पृष्ठों का मासिक पत्र निकालना शुरू किया। यह कोई दस वर्ष तक चलता रहा। हिन्दी रसिक-मंडली ने इसे बहुत अपनाया। इस पत्र में पंडित प्रतापनारायण धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सभी तरह के लेख लिखते थे, यहाँ तक कि आप खबरें भी छापते थे। मिश्रजी की हिन्दी बहुत मुहावरेदार होती थी, वे अपने लेखों में कहावतों का भी बहुत प्रयोग करते थे। उनके लेखों में मनोरंजकता की

मात्रा खूब होती थी। हास्य और व्यंग्य उनके लेखों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। १८८७ ई० मे 'ब्राह्मण' कुछ दिनों के लिए बंद भी हो गया था। इनकी मृत्यु के बाद भी खड्गविलास-प्रेस (बाँकीपुर) के मालिक, बाबू रामदीनसिंह, ने 'ब्राह्मण' को कुछ समय तक जीवित रखा, पर वह चला नहीं, अंत में बंद ही हो गया। प्रतापनारायणजी हिन्दी के बहुत बड़े हिमायती थे। 'ब्राह्मण' में उन्होने हिन्दी के पक्ष में अनेक बार अच्छे-अच्छे लेख लिखे थे।

सन् १८५४ में 'समाचार सुधा वर्षण' नामक सबसे पहला हिन्दी दैनिक पत्र प्रकाशित हुआ था जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उसके बाद करीब ३० वर्षों तक कोई दूसरा दैनिक पत्र नहीं निकला। सन् १८८३ में कालाकाँकर (अवध) के राजा रामपालसिंह ने, जो उन दिनों इंगलैंड मे थे, वहीं से 'हिन्दुस्थान' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। १८८३ की जुलाई से सन् १८८५ तक यह इंग्लैंड से ही निकला। यह पहले अंग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाओं मे निकलता रहा, पीछे उर्दू मे भी छपने लगा और मासिक से साप्ताहिक भी हो गया। हिन्दी उर्दू के लेख स्वयं राजा साहब के लिखे हुए रहते थे। अंग्रेज़ी के लेख जार्ज टेम्पल द्वारा लिखे जाते थे। राजा साहब के भारत आगमन पर १ नवम्बर सन् १८८५ से 'हिन्दुस्थान' दैनिक पत्र के रूप मे केवल हिन्दी में निकलने लगा। महामना पं० मदनमोहन मालवीय भी इस पत्र के सम्पादक रह चुके हैं। स्व० श्री बालमुकुन्द गुप्त, पं. प्रतापनारायण मिश्र और गोपालराम गहमरी, सहायक सम्पादकों मे रह चुके हैं। 'हिन्दुस्थान' राजनीति मे कांग्रेस का समर्थक था, राजा साहब स्वयं भी पक्के कांग्रेसवादी थे, निर्भय होकर वे सरकारी नीति की आलोचना किया करते थे। राजा साहब की मृत्यु के साथ ही यह पत्र भी विलीन हो गया। कुछ दिन पश्चात् उनके उत्तराधिकारी राजा रमेशसिंहजी ने 'सम्राट' पत्र को पहले साप्ताहिक और फिर दैनिक रूप में निकाला किन्तु राजा साहब की असामयिक मृत्यु के कारण वह भी

बंद हो गया। सन् १८८५ ई० ही में कानपुर से 'भारतोदय' नामक एक दैनिक पत्र और भी निकला, जिसका वार्षिक मूल्य १०) था। इसके सम्पादक श्री सीतारामजी परमोत्साही थे तथापि यह पत्र एक वर्ष के भीतर ही बन्द हो गया। बाबू हरिश्चन्द्र के जीवन-काल में ही अर्थात् मार्च सन् १८८४ ई. में बाबू रामकृष्ण वर्मा ने काशी से 'भारत जीवन' नाम का पत्र निकाला। इस पत्र का नामकरण स्वयं भारतेन्दुजी ने ही किया था। यह साप्ताहिक श्री रामकृष्ण वर्मा के सम्पादकत्व में ही निकला था और काफी दिनों तक निकलता रहा। 'कवि वचन सुधा' के पश्चात इसने हिन्दी की बहुत सेवा की। सन् १८८४ में अजमेर से 'राजपूताना गजट' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

सन् १८६७ से सन् १८८५ तक निकलने वाले जिन पत्रों का ऊपर उल्लेख हुआ है, उनके अतिरिक्त भी अनेक पत्र हिन्दी में निकले जिन सब का उल्लेख यहाँ सम्भव नहीं है। किन्तु यहाँ पर आर्य-समाज द्वारा प्रकाशित कुछ पत्रों की चर्चा करना आवश्यक है। सन् १८५७ में स्वामी दयानंद ने आर्य-समाज की स्थापना की थी। सन् १८७४ में उनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन हो चुका था। गुजरात में पैदा होकर भी स्वामीजी ने जो हिन्दी में अपना ग्रन्थ लिखा, यह एक बड़े महत्त्व की बात थी। सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन से एक प्रकार की विवादात्मक गद्य-शैली का सूत्रपात हुआ जिसे आर्य-समाज के पत्रों ने बहुत अपनाया। 'भारत सुदशा प्रवर्तक' (१८७८), 'आर्य दर्पण' (१८८०) आदि अनेक आर्य-समाजी पत्र इस समय प्रकाशित हुए। भारतेन्दु और उनके द्वारा प्रभावित पत्रकारों की शैली जहाँ साहित्यिक थी, वहाँ आर्य-समाजी पत्रों की शैली में आवेश और विवाद का स्वर अधिक था। आर्यसमाज-सम्बन्धी पत्रों में सरल हिन्दी का प्रयोग होता था जिसमें उर्दू के शब्दों की भी प्रचुरता रहती थी, लेकिन आगे चलकर उनका झुकाव संस्कृत की ओर होता गया। स्वामी दयानन्द ने तो इस भाषा का नाम ही 'आर्य-भाषा' रखा था किन्तु यह नाम अधिक प्रचलित न हो सका।

फिर भी यह अवश्य कहा जायगा कि आर्य-समाज के पत्रों ने हिन्दी भाषा और उसकी गद्य-शैली को काफी सबल बनाया।

उत्तर-भारतेन्दु-काल (सन् १८८५–१९०३)

सन् १८८५ में 'काव्यामृत वर्षिणी' पण्डित शिवदत्त ने निकाली जो १८८८ तक निकलती रही। सन् १८८५ में कानपुर से 'भारतोदय' नामक दैनिक पत्र निकला। जैसा कि अभी ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। १८८७ में कलकत्ते से 'आर्यावर्त' नामक पत्र प्रकाशित हुआ। अन्य स्थानों से निकलने वाले पत्रों में रींवाँ के 'भारत भ्राता' का नाम उल्लेखनीय है। यह साप्ताहिक पत्र विद्यानुरागी महाराज कुमार श्रीलाल बलदेवसिंहजी के उद्योग तथा प्रबन्ध से सन् १८८७ मे बड़ी योग्यता से निकाला गया। रियासत से निकलने पर भी यह पत्र रियासत का नहीं था, स्वतंत्र था। इसमें राजनीति सम्बन्धी लेखों का समावेश रहा करता था। यह पत्र सन् १९०० के आसपास बन्द हो गया। सन् १८८९ में अजमेर से 'राजस्थान समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र श्री समर्थ-दानजी के सम्पादकत्व में निकला। इसके सम्पादक स्वामी दयानन्दजी के बड़े भक्त थे, इसलिए यह पत्र आर्यसमाज का जोरो के साथ समर्थन करता था। इसी कारण कुछ लोग इसे आर्यसमाजी पत्र कहा करते थे, पर दरअसल बात ऐसी न थी। इसमें कुछ लेख आर्यसमाजी ढंग के होते थे, कुछ राज-नीति से सम्बन्ध रखते थे, कुछ इधर-उधर की खबरें छपती थीं और कुछ रजवाड़ों की चिट्ठी-पत्रियाँ होती थीं। पत्र की भाषा अजमेर में बोली जाने वाली हिन्दी थी। इसमें कुछ समय तक चित्र भी प्रकाशित हुए थे। कई साल साप्ताहिक रहने के बाद यह अर्द्ध साप्ताहिक हो गया था, पीछे जब सन् १९०५ में चीन-जापान में युद्ध छिड़ा और भारतवर्ष मे बंग-भंग-आन्दोलन चला तब इस पत्र ने दैनिक रूप धारण कर लिया। तब पहले की अपेक्षा इस पत्र में अधिक स्वाधीनता आ गई, लेखों के धार्मिक रूप मे भी परिवर्तन

हुआ किन्तु जनता की पत्रों मे विशेष अभिरुचि न होने के कारण यह पत्र भी अन्त मे बन्द हो गया; दैनिक अर्द्ध साप्ताहिक को भी ले बैठा !

सन् १८६० में बूँदी (राजपूताना) से 'सर्वहित' नामक पाक्षिक पत्र निकला। यह लीथो में छपता था। पहले इसका सम्पादन पं. रामप्रताप शर्मा करते थे। बाद मे पं. लज्जारामजी शर्मा ने तीन साल तक इसे बड़े अच्छे ढंग से चलाया। राजनीति की चर्चा न होने पर भी भाषा, साहित्य, धर्म, समाज और कारीगरी सम्बन्धी लेखों को देखते हुए यह पत्र अच्छा निकला था। पं. लज्जारामजी के अलग होने पर पत्र की हालत बिगड़ने लगी, जो बन्द होने के समय तक और भी बिगड़ गई। पत्र रियासत की ओर से निकलता था, इससे रियासत के प्रधान कर्मचारियों की इच्छा पर ही उसका जीवन निर्भर था। पदाधिकारियो की इच्छा न रही तो पत्र के जीवन का अन्त हो गया। यह पत्र करीब १४ वर्ष तक निकलता रहा।

सन् १८६० में ही बँगला 'बंगवासी' के स्वामी बाबू कृष्णचन्द्र बनर्जी ने बड़ी धूमधाम से 'हिन्दी बंगवासी' नामक साप्ताहिक अखबार निकाला। उस समय इस पत्र का वृहदाकार, सुन्दर कागज, प्रत्येक अंक में चित्र और मनोहर कहानी तथा उपहार में पुस्तक वितरण आदि हिन्दी भाषा के लिए नई बात थी। इसकी भाषा कुछ बंगला ढंग की होती थी, परन्तु इसके अन्य गुणो ने इस दोष को सहज ही छिपा दिया। इसका वार्षिक मूल्य केवल दो रुपया था जो आकार प्रकार के विचार से बहुत ही कम था। इस पत्र के इतने सस्ते होने से, इसके दो साल के भीतर ही कई एक हिन्दी अखबार बन्द हो गये और कई एक की कमर टूट गई। इसके ग्राहकों की संख्या भी बहुत बढ़ गई। यह पत्र इतना लोकप्रिय हुआ कि उस समय 'बंगवासी' का प्रयोग लोग समाचार-पत्र के पर्याय के रूप में करने लगे थे। बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने भी इस पत्र का सम्पादन किया।

सन् १८६३ मे चौधरी बदरीनारायणजी 'प्रेमघन' ने 'नागरी नीरद' नामक साप्ताहिक पत्र मिर्जापुर से निकाला। इस पत्र के कुछ शीर्षकों से ही

प्रेमघनजी की भाषा का अनुमान किया जा सकता है; जैसे, 'सम्पादकीय-सम्मति-समीर', 'प्रेरित-कलापि-कलरव','हास्य-हरितांकुर', 'काव्यामृत-वर्षा', 'विज्ञापन-वीर-बहूटियाँ', 'नियम-निर्घोष' आदि शीर्षकों में भी वर्षा का यह रूपक देखने ही योग्य है।

सन् १८६३ तक बम्बई से हिन्दी का एक भी पत्र नहीं निकला था। पहले पहल उस वर्ष 'भाषा भूषण' नामक पत्र निकला, पर वह अपनी झलक दिखा कर थोड़े ही समय बाद अदृश्य हो गया। उसी वर्ष 'बम्बई बैपार सिन्धु' नामक पत्र निकला, पर थोड़े दिनों के बाद वह भी काल के गर्भ में विलीन हो गया। सन् १८६६ में बम्बई से 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ जो अब तक निकल रहा है। प्रथम महासमर के समय यह दैनिक रूप मे भी प्रकाशित हुआ था। अभी इस पत्र का 'दीपमालिका अङ्क' निकला है जिसमे भारतीय धर्म और संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाले प्रसिद्ध विद्वानों के लेख हैं। इस पत्र के संस्थापक स्वर्गवासी सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास थे। सन् १८६६ में ठाकुर हनुमन्तसिह के सम्पादकत्व में आगरा से 'राजपूत' का प्रकाशन हुआ जो अब तक निकल रहा है।

१६ वीं शताब्दी के अंतिम वर्ष में स्त्रियों के लिये भी 'सुगृहिणी' और 'भारत भगिनी' नामक पत्र निकले। 'सुगृहिणी' की सम्पादिका श्रीनवीनचंद्र राय की पुत्री श्रीमती हेमन्तकुमारी देवी थीं। यह पत्रिका १८८८ में निकली थी और हिन्दी के लिये नयी चीज थी। उसके अधिकतर लेख ब्रह्मसमाज के विचारों के पोषक होते थे। 'भारत भगिनी' सन् १८८६ में मुन्शी रौशनलाल बैरिस्टर की पत्नी श्रीमती हरिदेवी ने प्रयाग से निकाली थी।*

*देखिये 'आज' के 'रजत-जयन्ती अङ्क' (५ नवम्बर १९४५) में प्रकाशित श्री गुरुदेवप्रसाद वर्मा एम०ए० का 'हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ' शीर्षक लेख, पृ० ११९

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास में सन् १६०० का वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी वर्ष प्रयाग की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन हुआ था जिसने आगे चलकर हिन्दी पत्रकार-जगत् में क्रान्ति उपस्थित कर दी थी। सरस्वती का पहला अंक बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर, बाबू श्यामसुन्दर दास आदि विद्वानों के संपादकत्व में निकला था। दूसरे वर्ष का सम्पादन अकेले बाबू श्यामसुन्दरदास ने किया था। सन् १६०३ से 'सरस्वती' का सम्पादन पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी करने लगे।

द्विवेदी-काल [सन् १६०३–१६१८]

द्विवेदीजी ने जिस समय 'सरस्वती' का सम्पादन-भार ग्रहण किया, उस समय लोगों की हिन्दी लिखने की ओर विशेष रुचि नहीं थी। बहुत से संस्कृत के विद्वान् तो हिन्दी की ओर देखते भी न थे और अंग्रेजी के विद्वान् हिन्दी लिखना अनुचित समझते थे। अपने सम्पादन-काल के पहले वर्ष के तो प्रायः सभी लेख द्विवेदीजी ने स्वयं लिखे किन्तु इस प्रकार आखिर कब तक काम चल सकता था। द्विवेदीजी ने व्याकरण-सम्मत भाषा की ओर लेखकों का ध्यान आकर्षित कर हिन्दी-भाषा का परिष्कार किया और अनेक नये लेखक और कवि तैयार किये जिनसे हिन्दी साहित्य आज भी गौरवान्वित है। उन्होंने अपनी पारदर्शी सूक्ष्म दृष्टि से देख लिया था कि खड़ी बोली को गद्य की भाषा तक ही सीमित न रखकर यदि उसे काव्य-भाषा भी बना दी जाय, तो वह काव्योचित भाषा के समस्त गुणों से अलंकृत होकर समय की कसौटी पर खरी उतरेगी। खड़ी बोली के जिस काव्य-तरु को फलते-फूलते आज हम देख रहे हैं, उसको नई-नई गद्य-पद्यात्मक कृतियों से सींच कर बढ़ने योग्य बना देना युग-निर्माता आचार्य श्री द्विवेदीजी का ही काम था।

आज-कल के ढंग की आख्यायिकाओं का प्रकाशन सबसे पहले 'सरस्वती' में ही प्रारम्भ हुआ था। हिन्दी साहित्य की सबसे प्रसिद्ध कहानी

'उसने कहा था' सन् १६१५ की 'सरस्वती' में ही प्रकाशित हुई थी। केवल आख्यायिकाओं द्वारा ही नहीं, इतिहास, जीवन-चरित्र, विज्ञान, आलोचना, पुरावृत्त, शिल्प, कला-कौशल आदि सभी विषयों से विभूषित होकर द्विवेदीजी के द्वारा 'सरस्वती' का प्रकाशन होता रहा। रवि वर्मा की पौराणिक प्रतिभा का प्रयोग भी द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' के लिये किया। रवि वर्मा पौराणिक चित्र तैयार करते थे और द्विवेदीजी कवियों से इन पर कविताएँ लिखने के लिये कहा करते थे। 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ आये हुए लेखों मे द्विवेदीजी बड़े मार्के का संशोधन किया करते थे। इस अकेली हिन्दी पत्रिका ने हिन्दी भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए जितना कार्य किया है उतना एक संस्था भी क्या कर सकेगी। द्विवेदीजी स्वयं बहुत अध्ययन-शील थे, बंगला, मराठी और अंग्रेजी के पत्रों का वे बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन किया करते थे। 'प्रवासी' 'वसन्त' और 'माडर्न रिव्यू' जैसे पत्र द्विवेदीजी के सामने आदर्श रूप में रहे होंगे। 'सरस्वती' के स्तर को ऊँचा बनाने के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। 'सरस्वती' के पहले जितनी पत्रिकाएँ निकलती थीं, उनका न तो बाह्य रूप ही इतना सुन्दर होता था और न आन्तरिक ही। सरस्वती के रंग-बिरंगे सुन्दर चित्र से सजे हुए बढ़िया टाइटिल पेज और अन्दर की छपाई, कागज, चित्र आदि सभी ने लोगों को मुग्ध कर लिया। सरकारी रिपोर्टों का सारांश 'सरस्वती' में उपस्थित करना और उन पर विचार-पूर्ण टिप्पणी लिखना भी द्विवेदीजी की प्रमुख विशेषता रही। सच तो यह है कि राजनीति और विज्ञान सम्बन्धी साहित्य भी अधिकांश पाठकों को 'सरस्वती' द्वारा ही पढ़ने को मिलता था। कवियों और लेखकों के निर्माण में भी 'सरस्वती' का बड़ा हाथ रहा है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त, सनेहीजी, स्वामी सत्यदेव, राय कृष्णदास आदि सब इसी पत्रिका के ऋणी हैं। स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी भी द्विवेदीजी को गुरुवत मानते थे। द्विवेदीजी के सम्पादन-काल में नियमित रूप से 'सरस्वती' का अङ्क पाठकों के हाथ में पहुँच जाता था। अंग्रेजी

मासिक पत्रों के सम्पादकों में बाबू रामानन्द चटर्जी जिस तरह विख्यात हुए, उसी प्रकार हिन्दी मासिक पत्रों के क्षेत्र में द्विवेदीजी प्रसिद्ध हुए। द्विवेदीजी द्वारा संशोधित लेखों की पाण्डुलिपि बनारस के भारत-कला-भवन में अब भी सुरक्षित है।

'सरस्वती' के प्रभाव से और भी नये-नये पत्र हिन्दी में निकलने लगे। सन् १९०७ में प्रयाग से 'अभ्युदय' का प्रकाशन हुआ जो राष्ट्रीय दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण पत्र था। यह बीच में अर्द्ध साप्ताहिक तथा युद्ध-काल में कुछ दिन दैनिक रूप से भी निकला था। श्री जीवनशंकर याज्ञिक के सम्पादकत्व में अर्थ शास्त्र सम्बन्धी 'स्वार्थ' (१९२२) नाम का एक मासिक पत्र बनारस से निकलने लगा था। सन् १९०९ में इलाहाबाद से 'कर्मयोगी' का प्रकाशन हुआ जो राष्ट्रीय दल का प्रमुख पत्र था। सन् १९१०-११ में 'कामधेनु' और 'गुरुकुल समाचार' का प्रकाशन हुआ। पं० कृष्णकान्त मालवीय ने 'मर्यादा' (१९२०) में राजनीति को यथेष्ट स्थान दिया। यह पत्रिका बहुत दिनों तक बड़े सुन्दर ढंग से निकली। उसमें पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि विद्वान् बराबर लिखा करते थे। साहित्य के अन्यान्य विद्वानों ने भी इसे खूब अपनाया। 'कामधेनु' गोरक्षा-सम्बन्धी पत्र था और 'गुरुकुल समाचार' सिकदराबाद गुरुकुल का प्रमुख पत्र था। सरस्वती की प्रतियोगिता में काशी से 'तरंगिणी' नामक पत्रिका भी निकली। इनके अतिरिक्त 'स्त्री-दर्पण', 'गृह-लक्ष्मी' आदि स्त्रियोपयोगी पत्र भी निकले। ये दोनों पत्र भी यद्यपि बहुत दिनों तक नहीं चल सके तथापि नारी-समस्या की ओर उन्होंने अन्य मासिक पत्रों का ध्यान अवश्य आकृष्ट किया। बहुत से पत्र आगे चलकर इस समस्या पर विचार-विमर्श के लिए अलग 'नारी पृष्ठ' ही सुरक्षित रखने लगे।

सन् १९०९ में प्रसादजी के प्रयत्न से 'इन्दु' नाम का मासिक पत्र बनारस से श्री अंबिकाप्रसादजी गुप्त के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ था। इस पत्र का साहित्यिक दृष्टि से ऐतिहासिक महत्त्व है क्योंकि प्रसादजी की

बहुत सी कविताएँ और कहाँनियाँ पहले पहल इसी पत्र के द्वारा हिन्दी जगत के सम्मुख आई थीं। अमर शहीद श्री गणेशशङ्कर विद्यार्थी ने १९१३ में कानपुर से 'प्रताप' निकाला। सच्चे अर्थ मे राष्ट्रीय पत्रकारिता को जन्म देने वाला यही पत्र था। युक्त प्रान्त की जनता में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने का कार्य सबसे अधिक 'प्रताप' ने ही किया। इसी पत्र के आदर्श पर आगे चलकर 'कर्मवीर', 'स्वराज्य', 'सैनिक सन्देश' और 'नवशक्ति' प्रकाशित हुए।

सन् १९१४ में कलकत्ते के कई मारवाड़ी सज्जनों के प्रयत्न से 'कलकत्ता समाचार' प्रकाशित हुआ, पर कुछ ही बरस चलकर वह बन्द हो हो गया। इस पत्र का संपादन कुछ समय तक पं० झाबरमलजी शर्मा ने भी किया था। दिल्ली का 'हिन्दू संसार' प्रारम्भ में श्रद्धेय पंडितजी के संपादन मे ही निकला था। १९१७ में श्री मूलचन्दजी अग्रवाल ने 'विश्वमित्र' नामक अपना प्रसिद्ध दैनिक पत्र निकाला। हिन्दी के दैनिक पत्रों में 'विश्वमित्र' का एक विशिष्ट स्थान है। हिन्दी में इस पत्र के साप्ताहिक और मासिक संस्करणों के अतिरिक्त दैनिक के पाँच संस्करण पाँच भिन्न भिन्न नगरों-कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, पटना और कानपुर से प्रकाशित होते हैं।

अफ्रीका में १९०४ में श्री वी० मदनजीत के प्रयत्न से डरबन नगर से 'इण्डियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक पत्र निकला। स्वामी भवानी-दयालजी संन्यासी के प्रयत्न से अफ्रीका में सन् १९१२ में हिन्दी में 'धर्मवीर' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। सन् १९१५ में विज्ञान परिषद् इलाहाबाद द्वारा 'विज्ञान' का प्रकाशन होने लगा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जन्म-काल से ही सम्मेलन पत्रिका (सन् १९११) का प्रकाशन हो रहा है। सन् १९१८ में श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने 'उपन्यास मासिक पुस्तक' का प्रकाशन किया था जिसके द्वारा पचासों उपन्यास उन्होंने हिन्दी संसार को भेंट किये।

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में द्विवेदी-काल एक महत्त्वपूर्ण युग है। 'सरस्वती' के अतिरिक्त भी अनेक महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन इस काल में हुआ जिनमे से कुछ तो आज-कल भी निकल रही है। हाँ, यह अवश्य कहा जायगा कि द्विवेदी-युग में 'सरस्वती' की समानता करने वाला दूसरा कोई मासिक पत्र न था। द्विवेदी-काल में ही खंडवा से पं० माखनलालजी चतुर्वेदी ने 'प्रभा' (१६१३) का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। 'प्रभा' को अंतिम दिनों में चतुर्वेदीजी ने पण्डित शिवनारायण मिश्र को सौंप दिया। उसके बाद सन् १६२० से वह खंडवा के बदले कानपुर से प्रकाशित होती रही। कानपुर आने के बाद उसका संपादन प्रारम्भ में स्वयं गणेशशंकर विद्यार्थी और पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने और फिर बहुत दिनो तक पं० बालकृष्ण शर्मा ने किया। मिश्रजी के सुप्रबन्ध और उपर्युक्त विद्वानों—विशेषतः पं० बालकृष्ण शर्मा नवीन के सम्पादकत्व में 'प्रभा' बहुत चमकी। उस समय इस पत्रिका की बराबरी करने वाली कोई दूसरी राजनैतिक पत्रिका न थी। उससे पहले कलकत्ते से पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी ने 'नृसिंह' (१६०६) नामक राजनीति प्रधान पत्र अवश्य निकाला था, जिसमे वर्तमान राजनीति की अच्छी विचारपूर्ण सामग्री पढ़ने को मिलती थी, परन्तु वह अधिक दिन तक न चल सका और राजनीति-प्रधान मासिक पत्रों मे 'प्रभा' का ही एकाधिपत्य रहा।||

वर्तमान-काल (सन् १६१८-१६४८)

मासिक पत्र—नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से 'माधुरी' नामक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन अगस्त १६२१ से प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका के संचालकों ने लेखकों को खासा अच्छा पारिश्रमिक देना प्रारम्भ किया।

|| देखिए अक्टूबर १९३४ के 'विशाल भारत' में प्रकाशित श्री विष्णुदत्त शुक्ल का 'हमारे मासिक पत्र' शीर्षक लेख।

'माधुरी' के प्रकाशन से पहले बहुत से पुराने लेखक एक प्रकार से चुप हो गये थे। इस पत्रिका के कुशल व्यवस्थापकों ने फिर उनको लिखने के लिए प्रेरित किया। यही कारण है कि हम 'माधुरी' की पुरानी फाइलों में स्व० जगन्नाथदास रत्नाकर, बाबू व्रजरत्नदास आदि को लिखते हुए पाते हैं। छपाई-सफाई की ओर भी 'माधुरी' ने बहुत ध्यान दिया और अपने बाह्य कलेवर को खूब सजाया। राजपूत और मुगल शैली के अत्यन्त मनोरम चित्र इस पत्रिका मे बराबर छपते रहे। भिन्न-भिन्न विषयों का स्तम्भों के रूप में वर्गीकरण भी 'माधुरी' ने ही प्रारम्भ किया था, बाद में तो अनेक पत्रों ने इस स्तम्भ प्रणाली को अपनाया। हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं में 'माधुरी' का विशिष्ट स्थान है। इस पत्रिका की प्रतिद्वन्द्विता में 'मनोरमा', 'महारथी', 'महावीर', 'श्रीशारदा' आदि अनेक पत्र प्रकाशित हुए थे। 'ज्योति' नामक एक सुन्दर पत्रिका भी इसी समय निकली थी पर वह बहुत दिन तक न चल सकी।

'माधुरी' के बाद जनवरी १६२७ में 'सुधा' का प्रकाशन हुआ। दुलारे-लालजी के सम्पादकत्व में इस पत्रिका ने भी अच्छी साहित्य-सेवा की किन्तु 'सरस्वती', 'माधुरी' आदि की तरह यह अपनी अविच्छिन्न परम्परा कायम न रख सकी। महिला समस्या और समाज-सुधार को लेकर निकलने वाले पत्रों में सर्वाधिक ख्याति 'चाँद' ने प्राप्त की। इसने 'फांसी अङ्क' और 'मारवाड़ी अङ्क' निकाल कर समाज में हलचल मचादी किन्तु 'मारवाड़ी अङ्क' निकलने के बाद 'चॉद' का वह महत्त्व न रह गया। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा भी 'चॉद' की सम्पादिक रह चुकी हैं। अपने सम्पादन काल मे 'चॉद' के पृष्ठों में बड़ी विचार-पूर्ण सामग्री उन्होंने दी है।

सन् १६२८ में महात्माजी के आशीर्वाद के साथ अजमेर से श्री हरिभाऊजी उपाध्याय के सम्पादकत्व में 'त्यागभूमि' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। गांधी-साहित्य के अतिरिक्त अन्यान्य उपयोगी विषयों का समावेश

भी 'त्यागभूमि' में अच्छा रहता था। पत्रिका बड़ी सुन्दर निकली थी, किन्तु कई वर्ष के बाद यह भी बन्द हो गई। अब फिर से उसका प्रकाशन होने लगा है। 'मालव मयूर' के सम्पादक के रूप में भी श्री हरिभाऊजी हिन्दी संसार में प्रसिद्ध रह चुके हैं।

इसी वर्ष (१९२८) कलकत्ते से पं॰ बनारसीदासजी चतुर्वेदी के संपादकत्व में 'विशाल भारत' नामक सुप्रसिद्ध मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। 'सरस्वती' के बाद शायद सर्वाधिक ख्याति इसी पत्र ने प्राप्त की। सभी प्रकार के विषयों से सम्बन्ध रखने वाले महत्वपूर्ण लेखों का प्रकाशन इस पत्र द्वारा हुआ। इसका बाह्य और अंतरंग दोनों एक समान सुन्दर रहे। 'प्रवासी' और 'माडर्न रिव्यू' से सम्बद्ध होने के कारण इस पत्र को एक बड़ा लाभ यह हुआ कि अच्छे से अच्छे चित्रकारों के चुने हुए चित्र इसमें निकलते रहे। इस पत्र ने 'कला अङ्क', 'राष्ट्रीय अङ्क' आदि महत्त्वपूर्ण विशेषाङ्क भी प्रकाशित किये। श्री 'अज्ञेय' तथा मोहनसिंह सेंगर भी इस पत्र के सम्पादकों में रह चुके हैं। आजकल श्रीराम शर्मा इस पत्र का सम्पादन कर रहे हैं। इसके सभी सम्पादकों ने 'विशाल भारत' के स्तर को उच्च बनाये रखने का प्रयत्न किया। चतुर्वेदीजी के सम्पादन-काल मे प्रवासी भारतीयों की समस्या पर भी इस पत्र ने अच्छा प्रकाश डाला किन्तु यह अवश्य है कि अगर यह पत्र केवल प्रवासी भारतीयों की समस्याओं तक ही सीमित रहता तो इसका वह महत्त्व कदापि न रह जाता जो इसे आज प्राप्त है।

'विशाल भारत' के द्वारा ही चतुर्वेदीजी ने घासलेटी साहित्य के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा किया। 'कस्मै देवाय ?' के द्वारा भी उन्होंने साहित्यिकों के सामने यह प्रश्न रखा कि वे किसके लिये लिखें। काफी विचार-विमर्श इस प्रश्न को लेकर हुआ, जिसमें श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार तथा हजारीप्रसादजी द्विवेदी जैसे विद्वानों ने भी भाग लिया। क्रोपाटकिन के साहित्य की ओर हिन्दी पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का श्रेय भी चतुर्वेदीजी को ही है। इण्टरव्यू लिखने की कला में भी आप बड़े दक्ष है। आचार्य द्विवेदी

सम्बन्धी इण्टरव्यू उन्होंने स्वयं लिखे और 'विशाल भारत' में प्रकाशित करवाये। आगे चल कर श्री पद्मसिंह शर्मा कमलेश ने विशिष्ट साहित्यिकों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में अपने इण्टरव्यू प्रकाशित करवाये। चतुर्वेदीजी ने प्रसिद्ध व्यक्तियों के संस्मरण लिखने तथा साहित्यिक महारथियों के पत्र-संग्रह और उसके प्रकाशन की ओर भी हिन्दी जगत् का ध्यान आकर्षित किया। सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यिकों के पत्रों का बहुत अच्छा संग्रह श्री चतुर्वेदीजी के पास है।

विकेन्द्रीकरण आन्दोलन के जन्मदाता भी श्री बनारसीदासजी ही हैं। ये इस बात को मानते हैं कि "थोड़े से व्यक्तियों अथवा दो तीन संस्थाओं के हाथ में सम्पूर्ण शक्ति सौंपने के बजाय अधिक से अधिक मनुष्यों को सशक्त बनाना तथा सैकड़ों सहस्रों ऐसे केन्द्र स्थापित करना, जहाँ से साधारण जनता प्रेरणा तथा स्फूर्ति प्राप्त कर सके, हमारा परम आवश्यक कर्तव्य है।" उनका कहना है कि यदि राजस्थानी साहित्य-सम्मेलन की नींव सुदृढ़ आधार पर रखी जाती है, 'अवध साहित्य परिषद्' की स्थापना हो जाती है, ब्रजभाषा के लिये एक महाविद्यालय कायम हो जाता है, भोजपुरी ग्रामगीतों का संग्रह हो जाता है और कमाऊँ तथा गढ़वाल के पार्वत्य प्रदेशों में साहित्यिक जाग्रति हो जाती है तो इसमे केन्द्रीय सम्मेलन का क्या अहित होगा ? चतुर्वेदीजी के इस अन्दोलन से लोगों को जनपदीय चेतना जागृत हुई और इस दिशा में अच्छा कार्य होने लगा। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने जनपदीय कार्य-क्रम की रूप-रेखा हिन्दी जगत के सामने रखी। स्वयम् चतुर्वेदीजी ने टीकमगढ़ से 'मधुकर' नामक पत्र निकाल कर बुन्देलखण्ड की संस्कृति और उसके लोक-साहित्य से हिन्दी जगत को परिचित कराया। 'मधुकर' का 'जनपद विशेषाङ्क' भी निकला जो अपने ढंग की अनूठी चीज है। 'मधुकर' का निकलना तो यद्यपि आजकल बन्द हो गया है, पर हाल ही में श्री चतुर्वेदीजी ने 'विन्ध्यवाणी' नामक एक सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक की स्थापना की है, जिसका सम्पादन आजकल श्री प्रेमनारायण खरे कर रहे

हैं। इसके अब तक प्रकाशित चार अङ्क हमारे सामने हैं। आशा है यह साप्ताहिक भी अपने ढंग का अनूठा सिद्ध होगा। हिन्दी साहित्य के पत्रकारों का जब कभी इतिहास लिखा जायगा, श्री चतुर्वेदीजी का नाम हिन्दी पत्रकारिता के सर्वश्रेष्ठ उन्नायकों के साथ लिया जायगा।

'सरस्वती' और 'विशाल भारत' के बाद निकलने वाले वाले पत्रों में 'हंस' एक ऐसा पत्र है जिसने हिन्दी जगत में युगान्तर उपस्थित किया है। इसका प्रकाशन सन् १९३० में हुआ। पुरानी रूढ़ियों पर कुठाराघात करने, साहित्य में नयी प्रगतियों को जन्म देने तथा आलोचना के नये मापदण्ड स्थिर करने में 'हंस' ने बड़ा योग दिया है। सन् १९३३ में इसने अपना 'काशी विशेषाङ्क' प्रकाशित किया। सन् १९३४ से इस पत्र का अंतर्प्रान्तीय रूप सामने आया। विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं सम्बन्धी साहित्य भी इस पत्र द्वारा प्रकाश में आने लगा। अक्टूबर १९३६ के बाद श्री जैनेन्द्रकुमार तथा शिवरानी देवी ने 'हंस' का सम्पादन किया। बाद में श्री शिवदानसिंह चौहान और श्रीपतराय इसके सम्पादकों में रहे। प्रगतिवादी आलोचना के क्षेत्र में श्री चौहान ने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। १९३८ में 'हंस' का एक विशेषाङ्क एकांकी नाटकों पर निकला। रेखाचित्रों पर भी इस पत्र ने अपना महत्त्वपूर्ण विशेषाङ्क निकाला। 'हंस' के प्रगतिशील विशेषाङ्कों ने भी देश-विदेश के प्रगतिशील साहित्य से हिन्दी पाठकों का परिचय कराया। सन् १९३८ से यह पत्र प्रगतिवादी धारा का बड़ा जबरदस्त पृष्टपोषक रहा है। जब कभी हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद का इतिहास लिखा जायगा, उस समय 'हंस' की सेवाओं का बड़े आदरपूर्वक उल्लेख होगा। डा० रामविलास, प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा श्री भगवतशरण उपाध्याय आदि हिन्दी साहित्य के लेखकों ने इस पत्र के द्वारा लोगों की साहित्यिक, सामाजिक और राजनैतिक चेतना को जाग्रत करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। सामयिक प्रगतियों के साथ आगे बढ़ने का 'हंस' ने सर्वाधिक प्रयत्न किया है। हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील कविताओं को लोकप्रिय बनाने में इसी पत्र का सबसे

अधिक हाथ रहा है। हिन्दी साहित्य में 'रिपोर्ताज' लिखने की प्रथा भी इस पत्र के द्वारा ही पड़ी। 'हंस' का केवल अन्तर्प्रान्तीय महत्त्व ही नहीं है, रूस तथा अन्य देशों के साहित्य को भी प्रकाश में लाकर इसने हिन्दी पाठकों का दृष्टिकोण विस्तृत किया है। 'सरस्वती', 'विशाल भारत' और 'माधुरी' के साथ साथ 'हंस' भी हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। पार्टी विशेष का पत्र होने से कुछ लोगों की दृष्टि में इस पत्र में एकांगिता हो सकती है पर यह सत्य है कि 'हंस' ने निर्भीकतापूर्वक अपने विचारों को जनता के सामने रखा है।

'हंस' की ही भांति अन्तर्राष्ट्रीय विचारधारा को अधिकाधिक उपस्थित करने का ध्येय लेकर पिछले ८ वर्षों से प्रयाग से 'विश्ववाणी' का प्रकाशन भी हो रहा है। इसके संस्थापक पं० सुन्दरलाल हैं और इसलिए आज-कल इसमें 'हिन्दुस्तानी' भाषा के प्रयोग की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रारम्भ में श्री इलाचन्द्र जोशी ने इसका सम्पादन किया। इसका 'बौद्ध संस्कृति अङ्क' श्रीमती महादेवी वर्मा के सम्पादकत्व मे सुन्दर निकला था। इसके अतिरिक्त 'सोवियत संस्कृति अङ्क', 'चीन अङ्क', 'अन्तर्राष्ट्रीय अङ्क' आदि कई महत्वपूर्ण विशेषाङ्क निकले हैं जिनका अपना महत्व है। पिछले कई वर्षों से श्री विश्वम्भरनाथ जी के सम्पादन मे ही यह निकल रही है। गांधीवादी विचारधारा का भी सुन्दर विश्लेषण इसमें रहता है। सुसम्पादन की ओर कुछ अधिक ध्यान दिया जाय तो यह अपना स्थान सुरक्षित रख सकेगी।

पिछले वर्ष से 'जनवाणी' नामक एक मासिक पत्रिका समाजवादी विचार-धारा को लेकर बनारस से निकलने लगी है। आशा की जाती है कि हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रों में यह अपना स्थान बना लेगी। जुलाई १९४८ से 'नया समाज ट्रस्ट' ने श्री मोहनसिंह सेंगर के सम्पादकत्व में 'नया समाज' नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित करना शुरु किया है। इस पत्र को हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखकों का सहयोग प्राप्त है। इसके प्रथम अंक में ही सर्व

श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा जैनेन्द्रकुमार आदि के महत्वपूर्ण लेख हैं। 'हमारे नाखून क्यों बढ़ते हैं?' शीर्षक द्विवेदीजी का लेख अपने ढंग का अनूठा और बहुत ही सामयिक है। इस पत्र का दृष्टिकोण मूलतः सांस्कृतिक है और इसमें विचारोत्तेजक लेखों का अच्छा समावेश रहता है। इस प्रकार के विचार-प्रधान सांस्कृतिक पत्र की बड़ी आवश्यकता थी जो इस पत्र द्वारा बहुत अंशो मे पूरी होगी।

'आजकल' (१९४५) तथा 'विश्वदर्शन' (अगस्त १९४८) नामक दो पत्र भारत सरकार की ओर से दिल्ली से निकलने लगे हैं। दोनों ही पत्र कम मूल्य मे अत्यन्त उपयोगी पाठ्य-सामग्री दे रहे हैं। 'विश्वदर्शन' संभवतः हिन्दी का सबसे पहला पत्र है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को लेकर इस प्रकार के महत्वपूर्ण लेख लिखे जारहे हैं। आज के युग में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक एवं वाञ्छनीय है। भारत के प्रधान मंत्री ने तो हमेशा इस ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'बालभारती' बच्चों के लिए उपयोगी पत्र है।

डा० रामकुमार वर्मा के सम्पादकत्व में नागपुर से हाल ही में 'प्रकाश' नामक एक अच्छा पत्र निकलने लगा है। सन् १९४७ से बिहार सरकार ने 'बिहार' नाम से एक महत्वपूर्ण हिन्दी पत्र निकालना प्रारम्भ किया है। पिछले दो एक वर्षों से पटना से 'पारिजात' भी अपने ढग का अच्छा पत्र निकला। आज-कल यह द्वैमासिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। पिछले तीन वर्षों से दिल्ली से 'सरिता' नामक एक कहानी-प्रधान मासिक पत्र निकलने लगा है। हिन्दी के बहुत कम पत्र ऐसे होंगे जो छपाई-सफाई तथा सुन्दर आकार-प्रकार में इसकी बराबरी कर सकें। सन् १९२६ से इन्दौर से 'वीणा' अब तक मासिक पत्र के रूप में निकल रही है, यद्यपि इसका पहले वाला महत्व आज नहीं रह गया है। पिछले करीब १० वर्षों से बाबू गुलाबरायजी के सम्पादकत्व मे 'साहित्य सन्देश' नामक आलोचना-

प्रधान मासिक पत्र सफलता पूर्वक निकल रहा है, यद्यपि छपाई-सफाई की दृष्टि से इसमें सुधार की बहुत कुछ गुंजायश है। फर्वरी १६४८ से शारदा प्रकाशन, बाँकीपुर (पटना) से 'दृष्टिकोण' नामक आलोचनात्मक पत्र निकलने लगा है। इस पत्र के निबन्धों का स्तर काफी उच्च है। सं० २००५ (सन् १६४८) से, कलकत्ते से 'साधना' नामक एक मासिक पत्र निकलने लगा है। निरालाजी के साहित्य से सम्बन्ध रखने वाले अच्छे लेख इस पत्र में प्रकाशित होते रहते हैं। जितने मासिक पत्र निकल रहे है उन सबकी चर्चा करना यहाँ सम्भव नहीं किन्तु उन महत्वपूर्ण पत्रों के सम्बन्ध में दो शब्द कहना आवश्यक है जो पिछले वर्षों मे निकले और बाद में चलकर बन्द हो गये। हिन्दी के स्वनामधन्य कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत के सम्पादकत्व में बहुत वर्ष हुए एक 'रूपाभ' (१६३८) नामक मासिक पत्र प्रकाशित हुआ था। इस पत्र मे सुप्रसिद्ध कवियों तथा लेखकों की महत्वपूर्ण रचनायें प्रकाशित होती थीं। इस पत्र मे प्रकाशित लेखों का स्तर भी अत्यन्त उच्च होता था। अब भी 'लोकायन' की ओर से पंतजी एक पत्र निकालने लगे तो उससे साहित्य और संस्कृति का बड़ा उपकार हो सकता है।

सन् १६३१ में, सुलतानगज से 'गंगा' नामक मासिक पत्रिका श्री रामगोविन्द त्रिवेदी, गौरीनाथ झा तथा श्री शिवपूजनसहाय के सम्पादकत्व मे निकलने लगी थी। 'वेदांक' और 'पुरातत्वांक' इसके दो बड़े प्रसिद्ध विशेषांक निकले। पुरातत्वांक का सम्पादन आचार्य नरेन्द्रदेव तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने किया था। बनारस से स्त्रियोपयोगी 'कमला' नामक मासिक पत्रिका श्री पराडकरजी के संपादकत्व मे निकली थी किन्तु खेद है कि यह भी बहुत समय तक न निकल सकी। इण्डियन रिसर्च इन्स्टिट्यूट कलकत्ता से संवत् १६६८ में 'प्राचीन भारत' नामक भारतीय-शास्त्र एवं संस्कृति सम्बन्धी मासिक पत्र का प्रकाशन हुआ था। इसके सम्पादक महामहोपाध्याय सकलनारायण शर्मा तथा सह० सम्पादक श्री कालीदास मुकर्जी थे। प्रसिद्ध विद्वानों के महत्वपूर्ण अनुसंधानात्मक

लेख इस पत्र में प्रकाशित होते थे। सन् १६०० में हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् श्री गुलेरीजी ने नागरी सदन की स्थापना की थी। "सन् १६०२ में उन्होंने अपनी थोड़ी अवस्था में ही जयपुर से 'समालोचक' नामक एक मासिक पत्र अपने सम्पादकत्व में निकलवाया था। उक्त पत्र द्वारा गुलेरीजी एक बहुत ही अनूठी लेख-शैली लेकर साहित्य-क्षेत्र मे उतरे थे। ऐसा गंभीर और पांडित्यपूर्ण हास, जैसा इनके लेखों मे रहता था, और कहीं देखने में न आया। अनेक गूढ़ शास्त्रीय विषयों तथा कथा-प्रसंगों की ओर विनोद-पूर्ण सकेत करती हुई इनकी वाणी चलती थी। इसी प्रसंग-गर्भत्व के कारण इनकी चुटकियों का आनन्द अनेक विषयों की जानकारी रखने वाले पाठकों को ही विशेष मिलता था। इनके व्याकरण ऐसे रूखे विषय के लेख भी मजाक से खाली नहीं होते थे।* कई वर्ष पूर्व दिल्ली से 'हिन्दी पत्रिका' निकली थी जिसमे हिन्दी लेखों के साथ-साथ गुजराती, मराठी, तामील आदि प्रान्तीय भाषाओं के अंश हिन्दी अनुवाद या टिप्पणी सहित रहते थे। यह भी बहुत समय न निकल पाई।

संवत् १६८२ में राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता से 'राजस्थान' नाम का एक त्रैमासिक पत्र श्री किशोरसिह बार्हस्पत्य आदि के सम्पादन में प्रकाशित हुआ था जिसमें राजस्थान के इतिहास, भाषा और साहित्य, संस्कृति और कला आदि विषयों से सम्बन्ध रखने वाले महत्त्वपूर्ण निबन्ध प्रकाशित होते थे। किन्तु कुछ ही वर्ष निकलने के बाद यह उपयोगी पत्र भी बन्द हो गया। सन् १६३६ में कलकत्ता से श्री शंभूदयाल सक्सेना व श्री अगरचन्द नाहटा के संपादकत्व में 'राजस्थानी' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ किन्तु वह भी चार अंक निकलने पर बंद हो गई।

सं० १६८५ में अखिल भारतीय चारण सम्मेलन की ओर से 'चारण' नामक एक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन ठा० ईश्वरदानजी आशिया तथा श्री

---

*देखिये हिन्दी साहित्य का इतिहास (पं० रामचन्द्र शुक्ल) पृ० ६२३।

शुभकर्णजी कविया के सम्पादकत्व में हुआ था। इस पत्र में गुजराती अंश भी छपता था जिसके सम्पादक श्री खेतासिंह नारायणजी मिश्रण थे। यह पत्र कलोल (उत्तर गुजरात) से निकलता था किन्तु दो वर्ष बाद ही यह पत्र भी बन्द हो गया। राजस्थानी साहित्य और संस्कृति से हिन्दी जगत को परिचित कराने में इस पत्र के विद्वान सम्पादकों ने सराहनीय प्रयत्न किया था। अभी हाल ही में श्री देवीदान रत्नू के संपादकत्व में इस पत्र के फिर दर्शन हुए हैं। सं० १९८५ में ठा० किशोरसिंहजी वार्हस्पत्य के सम्पादकत्व में 'चारण' मासिक रूप में भी एक वर्ष तक प्रकाशित हुआ था।

हिन्दी पत्रकारिता के पिछले १२५ वर्षों के इतिहास को यदि हम देखें तो न जाने कितने उपयोगी पत्र प्रकाश में आये और अपनी अल्पकालीन झलक दिखला कर काल के गाल में समा गये। अपने जन्म के समय से अब तक जिन मासिक पत्रों ने अपनी परम्परा को अविच्छिन्न रखा है और जो अब तक निकल रहे हैं, उनमें से 'सरस्वती', 'सुकवि', 'विशाल भारत', 'हंस', 'राजपूत,' 'माधुरी' और 'कल्याण' तथा साप्ताहिकों में 'वेंकटेश्वर समाचार', 'आर्यमित्र', 'तिरहुत समाचार', 'मुजफ्फरपुर समाचार' तथा त्रैमासिकों में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'सम्मेलन पत्रिका' आदि पत्रों के नाम लिये जा सकते हैं। जहाँ तक पता चला है, हिन्दी पत्रों में सबसे अधिक ग्राहक संख्या 'कल्याण' की है। इस धार्मिक और भक्ति विषयक मासिक पत्र का प्रकाशन सन् १९२६ से होने लगा था। 'कल्याण' के सम्बन्ध में ध्यान देने की बात यह है कि इसके आद्य तथा वर्तमान संपादक श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार ही हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण विशेषाङ्क निकाल कर 'कल्याण' ने हिन्दी जनता की अनुपम सेवा की है। इसका एक-एक विशेषाङ्क संग्रहणीय और साहित्य की अमूल्य निधि है।

हिन्दी में आज अनेक मासिक पत्र निकल रहे हैं। कविता सम्बन्धी, उद्यम, सिनेमा और कला विषयक, बाल-साहित्य तथा जाति सम्बन्धी, तथा साहित्य राजनीति, विज्ञान एवं अन्यान्य विषयों से सम्बन्ध रखने वाले

जितने पत्र आज हिन्दी में निकल रहे हैं उनमें से बहुतसों का वर्णन श्री अखिल विनय और चंचलजी द्वारा परिश्रमपूर्वक सम्पादित 'हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ' शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक में मिलेगा; पिष्ट-पेषण तथा गौरव-भय के कारण उनका यहाँ उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

साप्ताहिक-पत्र

सन् १९१८ तक द्विवेदी-काल में जिन महत्त्वपूर्ण साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन हुआ था, उनमें से कुछ का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। सन् १९१९ में पंडित सुन्दरलालजी ने 'कर्मयोगी' के बाद दूसरा साप्ताहिक 'भविष्य' निकाला। जितने समय तक यह निकला, इस पत्र ने भी बड़ा नाम कमाया। यह पहले साप्ताहिक और फिर दैनिक रूप में निकला। बाद में इसे भी शीघ्र ही बन्द होना पड़ा।

सन् १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन के आसपास अनेक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुए। इनमें 'कर्मवीर' (खण्डवा) 'स्वराज्य' (खण्डवा), 'सैनिक' (आगरा) और 'स्वदेश' (गोरखपुर) तथा राजेन्द्र बाबू द्वारा संस्थापित पटना का 'स्वदेश' तथा 'राजस्थान केसरी' (वर्धा) मुख्य हैं। कर्मवीर, सैनिक और स्वराज्य आज भी निकल रहे हैं। महात्माजी का 'हिन्दी नवजीवन' भी बड़ा महत्त्वपूर्ण साप्ताहिक था जो अब 'हरिजन-सेवक' के नाम से निकल रहा है। कुछ समय तक श्री वियोगी हरिजी ने भी 'हरिजन-सेवक' का सम्पादन किया था। वर्तमान साप्ताहिकों में 'नवयुग' और 'वीर अर्जुन' (दिल्ली), 'समाज' (बनारस), 'योगी' (पटना), 'जनयुग' (बम्बई), 'भारत', 'देशदूत' (प्रयाग) आदि प्रमुख हैं। साप्ताहिकों में संभवत: 'नवयुग' सबसे अधिक संख्या में छपता है। अंग्रेजी के 'इलस्ट्रेटेड वीकली' में जिस प्रकार चित्रों का बाहुल्य रहता है, करीब-करीब उसी तरह हिन्दी के साप्ताहिकों में सबसे अधिक चित्र 'नवयुग' में ही छपते हैं। 'नवयुग' के मुख पृष्ठ का चित्र भी प्रति सप्ताह बदल कर दूसरा किया जाता है। यह पत्र श्री इन्द्रनारायणजी

गुटू के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है, इसकी पाठ्य-सामग्री विविध विषयों से विभूषित रहती है किन्तु कभी-कभी प्रूफ-संशोधन भली-भाँति न होने से इसमे वर्ण-विन्यास की अशुद्धियाँ भी रह जाती हैं। बनारस के 'समाज' मे जो १८ जुलाई १९४६ से (६ वें वर्ष के प्रारम्भ से) साप्ताहिक "आज" का परिवर्तित नाम है, संस्कृति, राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ-सभी विषयों पर महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। हिन्दी के साप्ताहिकों में यह बहुत अच्छा सुसंपादित पत्र है। 'वीर अर्जुन' उत्तर-भारत का अत्यन्त लोकप्रिय पत्र है। प्रयाग का 'भारत' बहुत वर्षों से निकलता है और हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रों मे से है। सभी प्रकार की उपयोगी पाठ्य-सामग्री इस पत्र मे पढ़ने को मिल जाती है। 'जनयुग' कम्यूनिस्ट पार्टी का पत्र है। 'देशदूत' प्रयाग से निकलने वाले अच्छे पत्रों मे से है। 'काशी' से निकलने वाला 'संसार' भी उपयोगी पत्रों मे से है। हाल ही में इलाचन्द्रजी जोशी के संपादकत्व मे प्रयाग से 'संगम' नामक अच्छा पत्र प्रकाशित होने लगा है। राजपूताना से निकलने वाले साप्ताहिको मे 'लोकवाणी' (जयपुर)और 'वसुन्धरा' (उदयपुर) का नाम लिया जा सकता है। हिन्दी के साप्ताहिकों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत पुस्तक मे मिलेगा।

दैनिक—पत्र

'प्रेमी अभिनंदन ग्रन्थ' मे श्री अंबिकाप्रसादजी वाजपेयी ने सन् १९४६ में 'भारत मे समाचार पत्र और स्वाधीनता' शीर्षक अपने लेख मे लिखा था—"आज तो हिन्दी मे चार दैनिक कलकत्ते से, दो बम्बई से, चार दिल्ली से, दो लाहौर से, तीन कानपुर से, एक प्रयाग से, तीन काशी से और दो पटने से, इस प्रकार एक दर्जन से अधिक दैनिक निकल रहे हैं।" अभी 'विश्वमित्र' में श्री मूलचन्द्रजी अग्रवाल ने 'यह पत्र-ज्वर' शीर्षक अपने लेख में लिखा है कि "देश मे ज्यादा से ज्यादा एक दर्जन पत्र सफलतापूर्वक चलने वाले कहे जा सकते हैं। परन्तु निकलते हैं कम से कम एक सौ दैनिक।

साप्ताहिकों और मासिकों की तो गणना ही संभव नहीं।" 'हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ' शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक में ५८ दैनिक पत्रों का विवरण दिया गया है। निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि हिन्दी में आजकल दैनिक पत्रों की संख्या क्या है।

द्विवेदी काल में प्रकाशित होने वाले दैनिकों का ऊपर कुछ उल्लेख हो चुका है। 'भारत मित्र' के बाद हिन्दी के दैनिक पत्रो मे काशी के 'आज' ने सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की। सन् १९२० की कृष्ण जन्माष्टमी के दिन राष्ट्ररत्न श्री शिवप्रसादजी गुप्त ने 'आज' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। मासिक पत्रों के क्षेत्र में जो स्थान 'सरस्वती' का रहा, वही स्थान दैनिक पत्रों के क्षेत्र में 'आज' का रहा। सन् १९४५ में इस पत्र की 'रजत जयन्ती' भी मनाई गई। पराडकरजी के सम्पादन में 'आज' खूब ही चमका। 'आज' की संपादकीय टिप्पणियाँ अत्यन्त मार्मिक हुआ करती थीं। देश में तथा विशेषतः काशी मे राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने का बहुत कुछ श्रेय इस पत्र तथा इसके सम्पादक श्री पराड़करजी को भी है। पराड़करजी अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार संघ के प्रथम अध्यक्ष भी रह चुके हैं। बीच मे 'आज' को छोड़ कर जब आप दैनिक 'संसार' का सम्पादन करने लगे तो यह पत्र भी चमक उठा। राष्ट्रीय पत्रों में कानपुर के 'प्रताप' तथा आगरा के 'सैनिक' का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उत्तरी भारत का सबसे अधिक लोक प्रिय दैनिक 'हिन्दुस्तान' है; राजपूताने की रियासतों में 'लोकवाणी' दैनिक का भी अपना विशेष स्थान है। शेष दैनिक पत्रों का विवरण पाठक प्रस्तुत पुस्तक में पढ़ेंगे।

त्रैमासिक पत्र

हिन्दी साहित्य मे आज अनेक महत्त्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। काशी की सुप्रसिद्ध 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'हिन्दुस्तानी' तथा हिन्दी साहित्य-सम्मेलन से प्रकाशित होने वाली 'सम्मेलन पत्रिका' बहुत पुरानी

पत्रिकाएँ हैं, जिनका अपना इतिहास है, अपना विशेष महत्त्व है। नागरी-प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन 'सरस्वती' से भी कुछ वर्षों पहले सन् १८९६ में हुआ; सम्मेलन पत्रिका सम्मेलन के जन्म-काल (१९११) से ही निकल रही है और पिछले १७ वर्षों से 'हिन्दुस्तानी' भी अच्छे ढंग से प्रकाशित हो रही है।

सन् १९४२ से शान्तिनिकेतन से पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदी के सम्पादकत्व में 'विश्वभारती' नामक त्रैमासिक पत्रिका निकल रही है। अन्य शोधपूर्ण लेखों के साथ इसमे रवीन्द्र साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। सं०१९९८ से भारतीय विद्याभवन, बम्बई से 'भारतीय विद्या' निकल रही है। भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख इसमे प्रकाशित होते रहते हैं। बीकानेर से 'राजस्थान भारती' नामक त्रैमासिक पत्रिका श्री अगरचंदजी नाहटा और डाक्टर दशरथ शर्मा के संपादकत्व में निकल रही है। राजस्थानी साहित्य और संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली यह बहुत महत्त्वपूर्ण शोध-पत्रिका है। उदयपुर के प्राचीन साहित्य-शोध-संस्थान से भी 'शोध पत्रिका' के तीन अङ्क अब तक निकल चुके हैं। हाल ही में कोटा से 'विकास' और 'भारतेन्दु' नामक दो त्रैमासिक पत्रिकाएँ निकलने लगी हैं। साहित्य, संस्कृति और अनुसंधान की दृष्टि से दोनो पत्रिकाओं का अपना अपना महत्त्व है। आध्यात्मिक पत्रिकाओं मे अरविन्द आश्रम पांडिचेरी से निकलने वाली 'अदिति' बड़ी उपयोगी पत्रिका है जिसमें गूढ़ दार्शनिक लेख छपते रहते हैं। संस्कृति सदन, रतलाम से पिछले वर्ष 'भारतीय सस्कृति' नामक पत्रिका निकली है। आरा (बिहार) से कई वर्षों से 'जैन सिद्धान्त भास्कर' नामक अनुसंधान-पत्र निकल रहा है। शोधपूर्ण लेखों का सुन्दर चयन इसमे रहता है। सरकार की ओर से 'शिक्षा' शीर्षक एक सुन्दर त्रैमासिक पत्रिका हाल ही में निकलने लगी है। सन् १९४४ में टीकमगढ़ से श्री कृष्णानंदजी गुप्त के सम्पादकत्व में 'लोकवार्ता' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का निकलना प्रारम्भ हुआ था किन्तु उसके कुछ ही अंक निकल पाये, बाद में वह बन्द हो गई। लोक-विज्ञान के सम्बन्ध में यह एक महत्त्वपूर्ण

प्रयास था । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे जनपद-साहित्यानुरागी विद्वानों का सहयोग भी इस पत्रिका को प्राप्त था । परिस्थितियों के अनुकूल होते ही यदि फिर से इस पत्रिका का प्रकाशन होने लगे तो लोक-विज्ञान के क्षेत्र में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य इस पत्रिका द्वारा सम्पन्न हो सकेगा । जनवरी १९४६ से वनस्थली विद्यापीठ से श्री सुधीन्द्रजी के सम्पादकत्व में 'वनस्थली पत्रिका' नाम की एक सुन्दर त्रैमासिक पत्रिका निकलने लगी है । 'अर्थ सन्देश' शीर्षक उपयोगी त्रैमासिक पत्रिका आचार्य श्री भगवतशरणजी अधोलिया के सम्पादकत्व में निकलने लगी है जो एक बड़े अभाव की पूर्ति करेगी ।

पुस्तक-पत्र

पिछले दो-तीन वर्षों से अनेक पुस्तक-पत्र हिन्दी साहित्य में निकलने लगे है जिनमें 'हिमालय' 'प्रतीक' सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए । 'नया साहित्य', 'समता', 'निर्माण', 'प्रतिभा', 'प्रदीप' आदि अन्य मासिक पुस्तिकाएँ भी निकलीं । 'नया साहित्य' का प्रकाशन तो अब कुछ अंक निकलने पर बंद हो गया है । आगरे का 'निर्माण' भी श्री रांगेय राघव के सम्पादन में एक अंक निकलने पर बन्द हो गया । पत्र अच्छा निकला था । इन पत्र-पुस्तिकाओं में 'हिमालय' ने सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त की है; 'प्रतीक' में प्रकाशित लेखों का स्तर अत्यन्त उच्च रहता है । सहारनपुर से 'नया जीवन' भी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के सम्पादकत्व में निकल रहा है ।

पिछले १२५ वर्षों के हिन्दी पत्रों का संक्षेप में इतिहास प्रस्तुत करना बड़ा मुश्किल काम है । कहते हैं कि आज से लगभग ३०-३५ वर्ष पूर्व श्री अनन्तविहारी माथुर 'अवन्त' ने 'हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखना शुरू किया था और वर्षों के सतत प्रयत्न और घोर परिश्रम के बाद सन् १९२७ के अन्त में वे इस ग्रन्थ को पूरा कर पाये थे। इसमें १९२५ तक के २००० हिन्दी समाचार-पत्रों का इतिहास संकलित किया गया है। इसके बाद की सामग्री श्री 'अवन्तजी' तथा और भी कईयों के

पास सुरक्षित है। श्री बंकटलालजी ओझा साहित्यमनीषी ने अखिल भारत-वर्षीय हिन्दी समाचार-पत्र-प्रदर्शिनी की आयोजना भी की थी*। तब से उक्त ओझाजी के पास बढ़ते-बढ़ते हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं का एक विशाल संग्रह हो गया है जो समाचार पत्रों के इतिहास प्रस्तुत करने में बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस संग्रहालय के अध्यक्ष श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी हैं। यह संग्रहालय कसरहट्टा रोड, हैदराबाद (दक्षिण) में अवस्थित है।

अन्य देशों के मुकाबिले में अभी भारतवर्ष के पत्रकार उतने संगठित और समृद्ध नहीं हैं। पत्रकार कला की समुचित दीक्षा भी उन्हें नहीं मिलती है। पत्र-पत्रिकाओं की सख्या भी देश की विशाल जन-संख्या को देखते हुए बहुत कम हैं। ब्रिटेन में १६०० पत्र तथा ३६०० पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं जिनमें प्रायः २० लाख व्यक्ति काम करते हैं। अपनी अधिकार-रक्षा के लिए वहाँ पत्रकारों ने अपने संघ बना रखे हैं। अमेरिका के पत्रों को पूर्ण स्वाधीनता का अधिकार प्राप्त हो चुका है। वे सब प्रकार के विचारों तथा समाचारों को प्रकाशित कर सकते हैं। अमेरिका मे कोई २५००० समाचार पत्रों तथा सामयिक पत्रों का प्रकाशन होता है। वहाँ २१०० के लगभग दैनिक पत्र प्रकाशित होते हैं। कहते हैं कि इग्लैण्ड, अमेरिका, देशों मे प्रत्येक व्यक्ति औसतन तीन पत्र पढ़ लेता है किन्तु भारतवर्ष मे तो अभी केवल १२ प्रति शत व्यक्ति ही ऐसे हैं जो साक्षर कहे जा सकते हैं। देश अब पराधीनता के बन्धन से मुक्त हुआ है। इसलिए आशा की जाती है कि साक्षरता की वृद्धि के साथ-साथ देश मे समाचार-पत्र पढ़ने वालों की संख्या भी बढ़ेगी। पाठकों और ग्राहको की संख्या बढ़ने पर तो पत्र-पत्रिकाओं की संख्या में भी अनिवार्यतः वृद्धि होगी। और वह दिन भी देखने को मिलेगा जब यहाँ के पत्र विदेशी पत्रों से मुकाबिला कर सकने में समर्थ हो सकेंगे। वर्तमान समय

---

*देखिये मार्च १९३९ के 'साहित्य सन्देश' में प्रकाशित श्री बंकटलालजी ओझा का 'समाचार पत्रों का इतिहास और हिन्दी पत्रकार' शीर्षक लेख।

में तो बँगला, मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित उच्च कोटि के पत्रों के स्तर को पहुँचने वाले हिन्दी के पत्र विरल ही हैं।

द्वितीय महायुद्ध के बाद हिन्दी मे पत्र-पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गई है किन्तु कह नहीं सकते, कितने पत्र समय की कसौटी पर खरे उतरेंगे। बहुत से पत्र तो ऐसे हैं जो अत्यन्त सामान्य कोटि के हैं, जो किसी भी हालत में अपनी सत्ता की सार्थकता सिद्ध नहीं कर सकते। अन्य देशों में पत्रकारों की शिक्षा के लिए बाकायदा शिक्षण-संस्थाएँ बनी हुई हैं, भारतवर्ष मे ऐसी संस्थाओं का बहुत कुछ अभाव है। यह हर्ष की बात है कि काशी विद्यापीठ में पत्रकार-शिक्षा का भी आयोजन किया गया है। अच्छे पत्रकार के लिए जिस विद्वत्ता, अनुभव, धैर्य, साहस और निर्भीकता आदि गुणों की आवश्यकता होती है, वे गुण बहुत से पत्रकारों में आज नहीं दिखलाई पड़ते। बहुत से पत्र तो ऐसे हैं जो अपने पत्र का कलेवर निरर्थक विज्ञापनों से भर देते हैं और अपने लाभ के लिए ग्राहकों का गला घोंटते हैं। महाकवि निराला के शब्दों में "आज के बहुत से सम्पादक ऐसी स्वतंत्रता के ढोल हैं, जो केवल बजते हैं। बोल के अर्थ, ताल-गति नहीं जानते अर्थात् उनके भीतर ही पोल भी है। वे दूसरे के हाथों की मधुर थपकियों से बोलते हैं, जनता वाह-वाह करती है और बजाने वाले देवता को पुष्पमाला देकर यथाभ्यास, जैसे उसे सुझाया गया, पूजने को दौड़ती है।" ऐसे सम्पादक सम्पादक—नाम को बदनाम करते हैं। पत्रकार और सम्पादक का पद बड़ा दायित्वपूर्ण होता है। सच कहा जाय तो पत्रकार जनता की आँख होता है, अन्धी जनता को मार्ग-दृष्टि देना सच्चे पत्रकार का ही काम है। विश्व के महान् आन्दोलन के संचालन में पत्रकारों का बड़ा हाथ रहता है। ऊपर के विवेचन का यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि हिन्दी में अच्छे सम्पादकों का नितान्त अभाव है। हिन्दी मे अब भी सम्पादकाचार्य श्री अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, पराडकरजी, शिवपूजनसहाय, चतुर्वेदीजी, श्री लक्ष्मणनारायण गर्दे तथा श्रीकृष्णदत्त पालीवाल जैसे पत्र-सम्पादक मौजूद हैं। इससे भी कोई इन्कार नहीं कर

सकता कि देश में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में बहुत से पत्रकारों का हाथ रहा है जिसका उचित श्रेय उनको मिलना चाहिए। इस बात की बड़ी भारी आवश्यकता है कि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का एक वृहद् इतिहास हिन्दी में प्रकाशित हो। डा. रामरतन भटनागर की एतद्विषयक एक पुस्तक (किताब महल इलाहाबाद से अंग्रेजी) में प्रकाशित हुई है किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी में भी इस विषय की पुस्तकें और पत्र* प्रकाशित हों। प्रस्तुत पुस्तक के दोनों सम्पादक पत्रकारिता में विशेष अभिरुचि रखने वाले हैं, उनका यह प्रारम्भिक प्रयत्न है। इसमें बहुत सी त्रुटियाँ रह गई होंगी, ऐसा वे स्वयं भी अनुभव करते हैं किन्तु उनका प्रयास निःसन्देह अभिनंदनीय है।

प्रस्तुत निबन्ध के लिखने में जिन पुस्तकों अथवा पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई है उनके नाम पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट में दे दिये गये हैं। उन सब के लेखकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आवश्यक कर्तव्य समझता हूँ।

दीपावली, २००५
बिड़ला कालेज
पिलानी, (जयपुर)

—कन्हैयालाल सहल।

---

*गांधी नगर, बनारस से श्री सतीशचन्द्र गुह-ठाकुर के सम्पादकत्व में Indiana नामक पत्रिका अंग्रेजी में निकली थी जिसमें भारत की समस्त प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित मासिक पत्रों के महत्वपूर्ण लेखों का परिचय रहता था। Indiana के परामर्श-मण्डल में हिन्दी भाषा की ओर से प्रमुख सम्पादक श्री प्रेमचन्द जी थे।

३. दैनिक-पत्र

(१) अमर उजाला—गत ५ मास से प्रकाशित; सं० श्री डोरीलाल अग्रवाल 'आनंद'; स्थानीय पत्र; प्रति -), प० वेलनगंज, आगरा।

(२) अमर भारत—संस्था० श्री गोस्वामी गणेशदत्तजी; इसी वर्ष से प्रकाशित; सं. श्रीयुत 'माधव'; व्यंग चित्र अच्छे निकलते हैं, थोड़े अर्से में ही लोकप्रिय बन गया है; वार्षिक मू. ३४), प्रति -)॥, प० दरियागंज, दिल्ली।

(३) अधिकार*—१९३९ से प्रकाशित; संस्था० कालाकांकर के श्री सुरेशसिंह; प्रारम्भ में श्री सुरेशसिंह तथा श्री सोहनलाल द्विवेदी सम्पादक रहे; प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र, प० आर्यनगर, लखनऊ।

(४) अशोक—इसी वर्ष से प्रकाशित; संचा० श्री रामकृष्ण भार्गव; सं. सर्व श्री कृष्णचन्द्र मुद्गल, 'निश्शंक', प्रति -)॥, प० ४, महारानी रोड, इन्दौर।

(५) आज—५ सितम्बर १९२० से प्रकाशित; (जन्माष्टमी १९७७ को श्री शिवप्रसाद गुप्त द्वारा संस्थापित) प्रारम्भ में श्री श्रीप्रकाश सम्पादक रहे तथा श्री बाबूराव विष्णु पराडकर ने २२ वर्ष तक (सन् १९२०–४२) सम्पादन किया। 'आज' का यही 'स्वर्णयुग' कहा जा सकता है। तब यह सर्वोत्तम राष्ट्रीय पत्र रहा। इसका 'रजत-जयन्ती अङ्क' (सम्पादक श्री परमेश्वरीलाल गुप्त) सुन्दर निकला है। सन् १९४४ से इसके सोमवार संस्करण का प्रकाशन शुरू हुआ; वा० मू. २७), प्रति -)॥, वर्तमान सम्पादक पराडकरजी; प० ज्ञानमण्डल लि०, काशी।

(६) आर्यावर्त—८ वर्ष से प्रकाशित; बिहार का पुराना राष्ट्रीय पत्र; प्रधान सं० श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार; सं० श्री व्रजनन्दन आजाद; प० इण्डियन नेशन प्रेस, पटना।

(७) इन्दौर समाचार—३ वर्ष से प्रकाशित; सं० कमलाकान्त मोदी; प्रति =), प० गांधी रोड, इन्दौर।

(८) उजाला—१० वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री गणपतिचन्द्र केला; यह दिल्ली और आगरा दोनों जगह छपता है; दिल्ली से हाल ही में प्रकाशित; वा० मू० ३०); प० उजाला प्रेस, आगरा।

(९) जनता—इसी वर्ष से प्रकाशित; सं० शिखरचन्द; राष्ट्रीय पत्र; वा० मू० २४), प्रति -); प० युनाइटेड प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, इन्दौर।

(१०) जनशक्ति—इसी वर्ष से प्रकाशित; कम्युनिस्ट दैनिक; सं० गिरिजाकुमार सिन्हा; वा० मू० २५), प्रकाशक—गंगाधरदास, नयाबिहार, पटना।

(११) जन्मभूमि*—जोधपुर।

(१२) जयभूमि—८ वर्ष से प्रकाशित; पहले साप्ताहिक निकलता था; सं० श्री गुलाबचन्द काला; वा० मूल्य० १५), प्रति)॥, प० वीर प्रेस, मनिहारों का रास्ता, जयपुर।

(१३) जयहिन्द*—१९४६ से प्रकाशित; संचा० सेठ गोविन्ददास; सं० श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'; राष्ट्रीय पत्र, प० जबलपुर।

(४१) जागरण*—१९३२ से प्रकाशित ; राष्ट्रीय नीति ; प० स्वतंत्र जर्नल्स लि०, झांसी।

(१५) जागरण*—कस्तूरबा गांधी रोड, कानपुर।

(१६) जागृत—पिछले वर्ष से प्रकाशित; सं० करतारसिंह नारंग; इसका साप्ताहिक संस्करण भी निकलता है ; वा० मू० २४), प्रति -); प० किशन-पोल बाजार, जयपुर।

(१७) जागृति*—१९४० से प्रकाशित; सं० श्री जगदीशचन्द्र 'हिमकर'; राष्ट्रीय पत्र; प० सलकिया, हवड़ा।

(१८) दरबार—१९२७ से प्रकाशित; पहले यह साप्ताहिक रूप से निकलता था; विगत वर्ष से दैनिक। प० अजमेर।

(१९) दैनिक संदेश*—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्री श्रीनारायण-प्रसाद शुक्ल; एक प्रति ≈); प० यशवंत रोड, इन्दौर।

(२०) नई दुनिया—विगत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री कृष्णकान्त व्यास; जनता का राष्ट्रीय दैनिक; प० कड़ावघाट, इन्दौर सिटी।

(२१) नव ज्योति*—१९३६ से प्रकाशित; राष्ट्रीय नीति; सं० सर्वश्री दुर्गाप्रसाद चौधरी, रामपालसिंह; प० केसरगंज, अजमेर।

(२२) नवजीवन—अक्टूबर १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री भगवतीचरण वर्मा; वा० मू० ३४), प्रति –)॥, राष्ट्रीय पत्र; प० लखनऊ।

(२३) नवप्रभात—अगस्त १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री हरिहरनिवास द्विवेदी तथा विजयगोविन्द द्विवेदी; वा० मू० २४), प्रति –); प० सराफा बाजार, लश्कर (गवालियर)

(२४) नवभारत—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री जंगबहादुर सिंह; राष्ट्रीय पत्र, उत्तरी भारत में लोकप्रिय; रविवार परिशिष्टांक भी निकलता है, जिसमें 'बाल भारत' शीर्षकान्तर्गत बालकों के लिए लेख तथा शेष में सुरुचिप्रद साहित्यिक लेख रहते हैं; वा० मू० २५), प्रति –), प० मोरीगेट, दिल्ली।

(२५) नवभारत*—१९३४ से प्रकाशित; सं० श्री रामगोपाल माहेश्वरी; राष्ट्रीय नीति; प० नागपुर।

(२६) नवराष्ट्र—कई वर्ष से प्रकाशित; राष्ट्रीय पत्र; प्रधान सं० देवव्रत शास्त्री, सं० श्री सुमंगलप्रकाश; प्रति–); 'मौजीराम की डायरी' शीर्षक से अच्छी चुटकियाँ रहती हैं; प० पटना।

(२७) नवीन भारत*—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री जगतनारायण-लाल एम. एल. ए.; राष्ट्रीय तथा स्थानीय खबरें विशेष रूप से निकलती हैं; वा० मू० २४), प्रति –), प० कदमकुआँ, पटना।

(२८) निराला*—राष्ट्रीय पत्र; सं० श्री विद्याशंकर शर्मा; विजयादशमी २००५ से प्रकाशित; प० निराला प्रेस, आगरा।

(२९) नेताजी*—गत वर्ष से प्रकाशित; अग्रगामी दल की नीति; वा० मू० २५), –)॥; प० ट्रापिकल बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

✓(३०) प्रजासेवक—७ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा; पहले यह साप्ताहिक रूप से ही निकलता था, अब कुछ समय से दैनिक संस्करण भी निकलता है; प० प्रजासेवक प्रेस, जोधपुर।

(३१) प्रताप*—१९१३ से प्रकाशित; स्व० श्री गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा संस्थापित; सं० श्री हरिशंकर विद्यार्थी तथा श्री युगलकिशोर शास्त्री; सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इस पत्र ने बहुत योग दिया है। श्री विद्यार्थी जी की टिप्पणियाँ इसमें बहुत जोरदार निकलती थीं। प० कानपुर।

(३२) प्रदीप*—पटना।

(३३) भारत—१९३३ से प्रकाशित; स्व० सी. वाई. चिंतामणि द्वारा संस्थापित; सं० श्री बलभद्रप्रसाद मिश्र; प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र; युक्तप्रान्त का प्रमुख दैनिक; वा० मू० ३७), प्रति –)॥, प० लीडर प्रेस, प्रयाग।

✓(३४) भारतवर्ष—२७ अगस्त १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री रामगोपाल विद्यालंकार; हिन्दू राष्ट्रवादी नीति का पृष्ठ पोषक; वा० मू० ३५), प्रति –)॥ प० दिल्ली द्वार, दिल्ली।

✓(३५) राष्ट्रपताका—विगत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री हेमसिंह; हिन्दू राष्ट्रवादी पत्र; प्रति –), प० मारवाड़ प्रिन्टर्स लि० जोधपुर।

✓(३६) राष्ट्रवाणी*—१९४२ से प्रकाशित; प० पटना।

✓(३७) रियासती—दो वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री सुमनेश जोशी; प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र; वा० मू० २८), प० जोधपुर।

(३८) लोकमान्य*—१९३० से प्रकाशित; सचा० श्री रामशङ्कर त्रिपाठी, सं० मदनलाल चतुर्वेदी; हिन्दुत्व की पुट लिए राष्ट्रीय; प० १६०, हरिसन रोड, कलकत्ता। (३९) १९३२ से बम्बई संस्करण भी प्रकाशित होता है। सं० श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति; प्रतिबंध के दिनों में 'हिन्दुस्थान' नाम

से प्रकाशित होता था; प० खटाउवाड़ी, गिरगाँव बम्बई ४.

(४०) लोकवाणी—गत ३ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री सिद्धराज ढड्ढा, प्रबन्ध सं० श्री जवाहिरलाल जैन; रियासती भारत का प्रमुख दैनिक; गांधीवाद का प्रबल समर्थक; वा० मू० ३०), प्रति —), प० जयपुर।

(४१) लोकमत*—१९३० से प्रकाशित; प्रथम सं० श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र; १९३१ मे प्रकाशन स्थगित भी हुआ; राष्ट्रीय पत्र; प० नागपुर।

(४२) लोकसेवक—विगत ६ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० श्री अभिन्न हरि, सं० श्री देवीचरण साहित्यरत्न; राष्ट्रीय नीति; प्रति —); पहले यह साप्ताहिक था; प० लोकसेवक प्रेस, कोटा।

(४३) वर्तमान—१९२० से प्रकाशित; संचा० श्री रमाशङ्कर अवस्थी, सं० भगवानदीन त्रिपाठी; स्तर कायम रखे हैं; प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र; वा० मू० २८), प्रति —)॥; प० सिविल लाइन्स, कानपुर।

(४४) विश्वबंधु—गत ८ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० स्व० श्री गोपाल-प्रसादसिंह; सं० श्री विश्वनाथसिंह शर्मा; राष्ट्रीय पत्र; प० १६८/१ कार्नवा-लिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

(४५) विश्वमित्र*—१९१७ से प्रकाशित; आज प्रकाशित होने वाले दैनिकों मे ख्यातिप्राप्त प्राचीन; सं० मातासेवक पाठक; राष्ट्रीय नीति; प० ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता। (४६) बम्बई से सन् १९४१ में प्रकाशित; सं० श्री बाबूलाल गुप्त, प्रति —)॥; बम्बई का प्रमुख हिन्दी पत्र; इसका सांध्य संस्करण 'मातृ भूमि' भी अप्रेल (१९४८) से निकल रहा है। प० नोबल चेम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। (४७) दिल्ली से—सन् १९४२ से प्रकाशित; प्रति —)॥ सं० श्री सत्यदेव विद्यालंकार; श्री बाबूराम मिश्र ने कई वर्षों तक सम्पादन किया; प० कनाट प्लेस, नई दिल्ली। (४८) गत वर्ष से पटना से भी इसका दैनिक संस्करण प्रारम्भ हुआ है; सं० श्री हरिश्चन्द्र अग्रवाल, वा० मू० २८) प्रति —) प० कदमकुआ, पटना। (४९) कुछ मास से कानपुर से भी यह प्रकाशित होने लगा है; प० महात्मा

गांधी रोड, कानपुर। इन सबके संचालक सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री मूलचन्द्र अग्रवाल हैं। हिन्दी के लिए यह गौरव की बात है कि एक ही पत्र पाँच स्थानों से प्रकाशित होता है। अपेक्षाकृत उच्च स्तर वांछनीय है।

(५०) वीर अर्जुन—सन् १९२३ में 'अर्जुन' स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा संस्थापित; १९३४ में प्रतिबंध (सरकारी) के कारण नाम परिवर्तित किया गया; स्वतन्त्र राष्ट्रीय नीति, आर्य-समाज की ओर झुकाव; अनेक वर्षों तक श्री रामगोपाल विद्यालंकार ने सफलता पूर्वक सम्पादन किया; श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की मार्मिक टिप्पणियाँ इसमें पढ़ने को मिलती हैं; प० श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

(५१) वीर भारत*—लाठी मोहाल, कानपुर।

(५२) स्वतन्त्र भारत*—पायोनियर प्रेस, लखनऊ।

(५३) सन्मार्ग—२४ जनवरी १९४६ से प्रकाशित; संचा० 'श्रीकृष्ण संदेश' लिमिटेड; प्रधान सं० श्री गंगाशङ्कर मिश्र, सं० श्री हरिशंकर द्विवेदी; वा० मू० ३५), प्रति =); इसका रविवार परिशिष्टांक भी प्रकाशित होता है, जिसमें साहित्यिक लेख रहते हैं तथा प्रति सप्ताह 'सम्पादक की लेखनी से' किसी सांस्कृतिक समस्या पर विचार प्रकट किये जाते हैं। प० १६० सी, चितरंजन एवेन्यु, कलकत्ता। (५४) इसका काशी संस्करण भी—(१९४६ ई०) प्रकाशित होता है; इसका भी रविवार परिशिष्टांक निकलता है; प० सन्मार्ग प्रेस, काशी। (५५) हाल ही में इसका एक संस्करण, कुछ मास से दिल्ली से भी प्रकाशित होने लगा है। हिन्दू राष्ट्रवादी नीति तथ सनातनधर्म का समर्थक; तीन स्थानों से पत्र का प्रकाशन अभिनन्दनीय है।

(५६) सैनिक—११ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० तथा प्रथम सं० श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल; प्रतिबंध के दिनों में 'अमर सैनिक' के नाम से निकला था; १९४२ के आन्दोलन मे बहुत योग दिया है। श्री जीवाराम पालीवाल पिछले कई वर्षों से इसका सम्पादन कर रहे हैं; आज भी श्रीकृष्णदत्तजी पालीवाल की मार्मिक टिप्पणियाँ इसमें पढ़ने को मिलती हैं।

वा० मू० ३७) प्रति -)॥; प० सैनिक प्रेस, किनारी बाजार आगरा।

(५७) संदेश—८ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री कालीचरण पाण्डेय; राष्ट्रीय नीति; वा० मू० १६); प्रति -); प० संदेश प्रेस, आगरा।

(५८) संसार—१६४३ में श्री पराडकरजी द्वारा संस्थापित; अब पिछले कई वर्षों से सम्पादक श्री कमलापति त्रिपाठी एम. एल. ए. हैं; सह० सं० श्री लीलाधर शर्मा पर्वतीय; इसका रविवार परिशिष्टाङ्क भी साहित्यिक सामग्री से परिपूर्ण, सुन्दर निकलता है। युक्तप्रान्त का प्रमुख दैनिक; कांग्रेसी नीति का समर्थक; प० गायघाट, बनारस।

(५९) हिन्दुस्तान—१६३३ से प्रकाशित; प्रारम्भ में कई वर्ष तक श्री सत्यदेव विद्यालंकार सम्पादक रहे। कई वर्षों तक स्थानापन्न सम्पादक रहकर पिछले ४ वर्ष से श्री मुकुटबिहारी वर्मा ही अब सम्पादक हैं। उत्तर भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय पत्र; भारत के हिन्दी दैनिकों में इसका विशिष्ट स्थान है; रविवार परिशिष्टांक भी सुसम्पादित निकलता है; वा० मू० ४०), प्रति -)॥; प० कनाट-सरकस, नई दिल्ली।

(६०) हिन्दुस्तान*—कलकत्ता।

(६१) हिन्दी मिलाप*—१६२८ से प्रकाशित; संस्था० तथा प्रारम्भ में सं० श्री खुशहालचन्द आनन्द; १८ वर्ष तक लाहौर से प्रकाशित होता रहा, पंजाब विभाजन के बाद अब दिल्ली से निकलता है; राष्ट्रीय पत्र, आर्यसमाज की ओर झुकाव; सं. श्री 'यश'। प. कनाट सरकस, नई दिल्ली।

४. धार्मिक एवं दार्शनिक

(क) आर्यसमाजी : मासिक

दयानन्द सन्देश—प्रथम प्रकाशन अगस्त १९३८ से प्रारम्भ। अगस्त १९४२ में प्रकाशन स्थागित होकर पुनः दिसम्बर १९४७ में आरम्भ हुआ; सं० सर्व श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री, देवबन्धु शर्मा; सह० सं० सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री; लेखादि अच्छे रहते हैं; वा० मू० ६), प्रति ।।≈); प० ईपोसराय, नई दिल्ली।

(२) वैदिकधर्म—२९ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री दामोदर सातवलेकर; भारतीय संस्कृति से संबंधित व वेद विषयक लेखों का बाहुल्य रहता है; वा० मू० ५), प्रति ।।); प० स्वाध्यायमण्डल, औंध (जिला सातारा)।

(३) सविता—वेद-संस्थान, अजमेर का मुख-पत्र; संस्था० श्री विद्यानन्द 'विदेह', सं० श्री विश्वदेव शर्मा। प्रथम अङ्क माघ पूर्णिमा २००४ वि० को प्रकाशित; वैदिक धर्म का प्रचारक, कलेवर क्षीण; वा० मू० ३), प० अजमेर।

(४) सार्वदेशिक*—१९२७ से प्रकाशित; सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) का मुख-पत्र; सं० श्री धर्मदेव सिद्धान्तालंकार; सभा की सूचनाओं के अतिरिक्त सामाजिक लेख भी (विशेष रूप से आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रतिपादक) रहते हैं; वा० मू० ५), प० श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली।

साप्ताहिक

(५) आर्यजगत—गत ९ वर्ष से प्रकाशित; अवैतनिक सं० प्रो० रामचन्द्र शर्मा; आर्य प्रादेशिक सभा, पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान (जालंधर

नगर) का मुख-पत्र ; वा० मू० ६), प्रति ≡) ; प० आर्यसमाज, किला, जालंधर (पूर्वी पंजाब) ।

(६) आर्यभानु—२ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री विनायकराव विद्यालंकार, सह० सं० कृष्णदत्त ; आर्य प्रतिनिधि सभा (हैदराबाद स्टेट) का मुख-पत्र ; वा० मू० ६), प्रति =)॥ ; प० हैदराबाद (दक्षिण)

(७) आर्यमार्तण्ड*—१६२३ से प्रकाशित ; राजस्थान का सबसे पुराना पत्र ; श्री चाँदकरण शारदा के सम्पादकत्व में पहले खूब चमका था ; अब कलेवर भी क्षीण तथा आर्यसमाजों के उत्सवों आदि की विज्ञप्तियाँ ही छपती हैं ; प० वैदिक यन्त्रालय, अजमेर ।

(८) आर्यमित्र—५० वर्ष से प्रकाशित ; पहले आगरा से प्रकाशित होता था, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस के लखनऊ चले जाने पर अब कितने ही वर्षों से वहीं से निकल रहा है ; अवैतनिक सं० श्री धर्मपाल विद्यालंकार । युक्तप्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र; आर्यसमाज के पत्रों में सर्वाधिक प्रचलित । अनेक विद्वान् सम्पादक रहे ; श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी तथा स्व० रुद्रदत्तजी शर्मा के सम्पादकत्व में काफी उन्नति की ; श्री हरिशंकर शर्मा के संपादन काल में विविध विषयक साहित्यिक सामग्री भी जुटाता था, टिप्पणियाँ भी जोरदार रहती थीं । वा० मू० ५), प्रति =), प० ५, हिलटन रोड, लखनऊ ।

(९) आर्यावर्त—१६ मार्च १६४५ से प्रकाशित ; सं० श्री शिवराज सिंह, सह० सं० श्री लक्ष्मीनारायण । साधारण लेख रहते हैं ; वा० मू० ५), प्रति =), प० दयानन्द वैदिक मिशन, १०, जेल रोड, इन्दौर ।

(ख) सनातनधर्मी : मासिक

(१) प्रेमसंदेश—७ वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० श्री गोस्वामी विन्दुजी सं० नाथूरामजी अग्निहोत्री 'नम्र' ; प्रेम महामण्डल (वृन्दावन) का मुखपत्र ; मुख्यतः रामायण का प्रचारक तथा अपने नाम को सार्थक बनाने वाला ; वा० मू० २।—), प्रति ।), प० प्रेमधाम, वृन्दावन ।

(२) सन्मार्ग—कार्तिक शुक्ल १५ सं० १९९९ वि० से प्रकाशित; संचा० श्री मूलचन्द चोपड़ा; सं० सर्व श्री दुर्गादत्त त्रिपाठी, गोविन्द नरहरि बैजापुरकर; प्रारम्भ में श्री विजयानन्द त्रिपाठी सम्पादक रहे; वेदादि शास्त्रानुसार भक्ति ज्ञानादि का विवेचन तथा निःश्रेयस एवं ऐहिक अभ्युदय का मार्ग प्रदर्शन करना ही मुख्य ध्येय है; वा० मू० ५), प्रति ।।), प० टाउन हाल, काशी।

साप्ताहिक

(३) श्रीवेंकटेश्वर समाचार—५३ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० श्री खेमराज श्रीकृष्णदास; प्रथम महायुद्ध के समय इसका दैनिक संस्करण भी निकला था; आज प्रकाशित सब से पुराना हिन्दी साप्ताहिक; सर्व श्री अमृतलाल चतुर्वेदी, सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा, हरिकृष्ण जौहर, राजबहादुरसिंह आदि भूतपूर्व सम्पादक रह चुके हैं; आज-कल साधारण रूप में प्रकाशित; सं० श्री देवेन्द्र शर्मा; वा० मू० ५), प्रति –)।।, प० खेतवाड़ी मेन रोड, ७ वीं गली, बम्बई ४.

(४) सन्मार्ग—२६ मई १९४७ से प्रकाशित; प्रधान सं० श्री गंगाशंकर मिश्र, सं० सर्वश्री कमलाप्रसाद अवस्थी, शिवप्रसाद मिश्र; धर्मसंघ की सूचनाएं तथा हिन्दू संगठन पर जोर देता है, कभी-कभी राजनैतिक लेख भी रहते हैं; वा० मू० ६), प्रति =), प० सन्मार्ग प्रेस, काशी।

(५) सिद्धांत—१६ अप्रैल १९४० से प्रकाशित; सं० श्री गदाधर ब्रह्मचारी; सं० श्री गंगाशंकर मिश्र, सह० सं० श्री दुर्गादत्त त्रिपाठी; सनातनधर्मी सिद्धान्तों पर शास्त्रीय लेख रहते हैं; विशेष रूप से श्री करपात्री जी के लेख ही छपते हैं; वा० मू० ४); प० सिद्धान्त कार्यालय, काशी।

(ग) जैनधर्म : मासिक

(१) अनेकांत—१९३८ से प्रकाशित; सं० श्री जुगलकिशोर मुख्तार; सदाचार विषयक तथा खोजपूर्ण लेख रहते है; वा० मू० ४), प्रति ।=), प० वीर मन्दिर, सरसावा (सहारनपुर)

(२) आत्मधर्म—३ वर्ष से प्रकाशित; सं० रामजी माणेकचंद दोशी; आध्यात्मिक लेख अच्छे रहते हैं; ग्राहक संख्या ३०००; वा० मू० ३), प्रति ।-), पृष्ठ १३; प० अनेकान्त मुद्रणालय, मोटा आँकड़िया (काठियावाड़)

(३) जिनवाणी*—५ वर्ष से प्रकाशित; सं० सर्वश्री फूलचन्द जैन 'सारंग', केशरीकिशोर 'केशव'; वा० मू० ४), प्रति ।=), प० जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ ।

(४) जैनजगत—अप्रैल १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री हीरासाव चवड़े, सह० सं० जमनालाल जैन साहित्यरत्न ; श्री दरबारीलाल 'सत्यभक्त' भूतपूर्व सम्पादक रह चुके हैं; वा० मू० २), छात्रों से १); प० भारत जैन महामण्डल वर्धा (सी० पी०)

(५) जैनप्रचारक*—४१ वर्ष से प्रकाशित ; प्रधान सं० श्री राजेन्द्र-कुमार जैन, सं० चिन्तामणि जैन; भारतवर्षीय जैन अनाथरक्षक सोसाइटी (दिल्ली) का मुख पत्र । वा० मू० ३), प्रति ।), प० दिल्ली ।

(६) जैनप्रभात—अगस्त १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री पन्नालाल साहित्याचार्य, सह० सं० श्री मुन्नालाल समगौरेया; निबंध व कहानियाँ पुरस्कृत करता है; श्री गणेश दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय, सागर का मुख-पत्र; वा० मू० ३), प्रति ।), प० सागर (सी० पी०)

(७) तरुणजैन—४ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री भँवरमल सिंघी, चंदनमल भूतोडिया; साहित्यिक सामग्री भी रहती है; वा० मू० ५), प्रति ।।), प० नवयुवक प्रेस, ३, कामर्सियल बिल्डिंगस, कलकत्ता ।

(८) दिगम्बर जैन—४१ वर्ष से प्रकाशित; कुछ अंश गुजराती में भी छपता है; वा० मू० २।।) ; सं० तथा प्रकाशक श्री मूलचन्द किशनदास कापड़िया, चंदावाड़ी, सूरत ।

(९) सनातन जैन—२१ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० ब्र० शीतलप्रसाद; अ० भा० सनातन जैन समाज का मुख-पत्र ; सं० श्री मनोहरनाथ जैन, सह० प्रसन्नकुमार जैन 'लाड'; वा० मू० २), प० बुलन्दशहर (यू० पी०)

पाक्षिक

(१०) ओसवाल—१४ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री मूलचन्द बोहरा; अ० भा० ओसवाल महासम्मेलन का मुख-पत्र; वा० मू० ४॥), प्रति ≡), प० रोशनमोहल्ला, आगरा।

(११) खण्डेलवाल जैन हितेच्छु—२८ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री नाथूलाल जैन शास्त्री, सह० सं० भँवरलाल जैन; वा० मू० २), प० रंगमहल, इन्दौर।

(१२) खण्डेलवाल जैन हितेच्छु—२८ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री नेमिचन्द्र बाकलीवाल, वा० मू० २), प० मदनगंज (किशनगढ़)

(१३) जैनबोधक*— इस पर छपने वाले आँकड़े से ज्ञात होता है कि ६४ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री; स्वर्गीय रावजी सखारामजी दोशी स्मारक संघ का प्रमुख पत्र; प० शोलापुर।

(१४) महावीर सन्देश—इसी वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री केशरलाल जैन अजमेरा, सह० सं० श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री; दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी, जयपुर का मुख-पत्र; वा० मू० ३), प्रति ≡) प० जयपुर।

(१५) वीरवाणी—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० सर्व श्री चैनसुखदास न्यायतीर्थ, भवॅरलाल न्यायतीर्थ; वा० मू० ३), प्रति ।), प० वीर प्रेस, मणिहारों का रास्ता, जयपुर।

(१६) श्वेताम्बर जैन—कई वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री जवाहरलाल लोढ़ा; वा० मू० ४) नमूना मुफ्त, प० मोतीकटरा, आगरा।

साप्ताहिक

(१७) जैनगजट—भा० व० दिगम्बर जैन महासभा (देहली) का मुख-पत्र; इस पर छपे आँकड़े से पता चलता है कि ५३ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री वंशीधर शास्त्री; वा० मू० ३॥), प्रति =), प० नई सड़क, दिल्ली।

(१८) जैनमित्र—४६ वर्ष से प्रकाशित; दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा, बम्बई का मुख-पत्र; वा० मू० ५।), प्रति =), सं० तथा प्रकाशक—श्री मूलचन्द किशनदास कापड़िया, सूरत।

(१९) जैनसंदेश—११ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री बलभद्र जैन ; साहित्यिक लेख भी रहते हैं ; प्रति बृहस्पतिवार को प्रकाशित ; वा० मू० ५), प्रति =), नमूना मुफ्त ; प्रा० मोतीकटरा, आगरा ।

(२०) ध्वज—११ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्व श्री राजमल लोढ़ा, सदनकुमार चौबे ; जैन समाचारों के अतिरिक्त स्थानीय समाचार भी रहते हैं; वा० मू० ५), प्रति –) ; प० ध्वज कार्यालय, मन्दसौर (गवालियर स्टेट)

(२१) वीर—१९२४ में पाक्षिक रूप में ब्र० शीतलप्रसादजी के सम्पादकत्व में बिजनौर से प्रकाशित हुआ । कई वर्षों से दिल्ली से निकल रहा है ; सं० श्री कामताप्रसाद जैन एम. आर. ए. एस. ; सह० स० श्री बाबूलाल जैन 'फागुल्ल', अ० भा० दिगम्बर जैन परिषद् (देहली) का मुख-पत्र, जैन संगठन व दार्शनिक विषय पर भी अच्छे लेख रहते हैं । वा० मू० ४), प्रति –)॥, प० मोरीगेट, दिल्ली ।

(२२) वीरभारत*—१० वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रूपकिशोर जैन 'प्रेमी' ; भारतीय दिगम्बर जैन महासभा का मुख-पत्र ; वा० मू० ४), प्रति –), प० आगरा ।

(२३) सुदर्शन*—२१ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री खेतीलाल अग्निहोत्री; अवैतनिक सं० श्री प्यारेलाल सारस्वत ; वा० मू० ४), प्रति –)॥, प० सुदर्शन प्रेस, एटा (यू० पी०)

(घ) बौद्धधर्म : मासिक

धर्मदूत—१२ वर्ष से प्रकाशित; महाबोधि सभा सारनाथ का मुख-पत्र; बौद्धधर्म का हिन्दी में प्रकाशित एक मात्र पत्र ; कुछ अंश पाली भाषा (नागरी लिपि) में भी छपता है । 'धर्मपाल अनागरिक' विशेषाङ्क सुन्दर निकला था; बुद्ध जयन्ती पर भी प्रति वर्ष साधारण विशेषाङ्क प्रकाशित होता है; सं० भिक्षु धर्मरत्न; वा० मू० १), विदेशों में १॥), प० सारनाथ (बनारस)

(ङ) ईसाई : मासिक

भानूदय—२२ वर्ष से प्रकाशित; संपादक पी० डी० सुखनन्दन (मिशन

अस्पताल, मुँगेली, सी०पी०) सह० सं० जोनाथन राय (सहरसा, भागलपुर) अधिकांश धार्मिक लेख ही रहते हैं, कहानियाँ भी छपती हैं; प्रचार ही मुख्य उद्देश्य है। ७८० प्रतियाँ छपती हैं; यह अंग्रेजी, गुजराती, मराठी भाषाओं में भी निकलता है। वा० मू० १), प० मिशन प्रेस, जबलपुर (सी० पी०)

(च) आध्यात्मिक : त्रैमासिक

(१) अदिति—कई वर्ष से प्रकाशित; योगिराज अरविन्द की विशाल आध्यात्मिक जीवन दृष्टि की प्रेरक पत्रिका; सं० सर्व श्री डा० इन्द्रसेन, हराधन बख्शी; योग व दर्शन संबंधी स्वस्थ मानसिक भोजन प्रस्तुत करती है। वा० मू० ५), प्रति १॥), पृष्ठ ६४; श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी का मुख-पत्र; प० पोस्ट बॉक्स ८५, नई दिल्ली तथा पाण्डिचेरी।

मासिक

(२) अखण्ड ज्योति—१६३६ में आगरा से प्रकाशित; एक वर्ष बाद कार्यालय मथुरा आ गया; संस्था० व सं० श्री श्रीराम शर्मा आचार्य, सह० सं० श्री रामचरण महेन्द्र; सदाचार विषयक काफी सामग्री रहती है, संकलित लेख ज्यादा रहते हैं; वा० मू० २॥), प्रति ।), पृष्ठ ३५; प०, अखण्ड ज्योति प्रेस, मथुरा।

(३) कल्पवृक्ष—२६ वर्ष से प्रकाशित; स० श्री डा० दुर्गाशंकर नागर; आध्यात्मिक मण्डल, उज्जैन के वार्षिक समारम्भ का विवरण भी इसी में निकलता है; लेखों का चयन प्रति मास सुन्दर रहता है। 'संकल्प की भावना' स्थायी स्तम्भ है, जिसमें प्रत्येक अङ्क में नवीन विचार रहता है; वा० मू० २॥), प्रति ।=), प० कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन।

(४) गीताधर्म—कई वर्ष से प्रकाशित, संस्था० स्वामी विद्यानन्दजी; गीता के निष्काम कर्म व सदाचार विषयक लेख रहते हैं। इसका गुजराती संस्करण भी प्रकाशित होता है। वा० मू० ४), प० गीताधर्म कार्यालय, बनारस।

(५) मानस-मणि—१६४१ से श्री अंजनीनन्दन शरण के सम्पादकत्व में ५ वर्ष तक अयोध्या से प्रकाशित होता रहा ; अब सतना से निकलता है। सं० श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र' ; गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस का प्रचार तथा मानस पर प्रकाश डालना ही मुख्य उद्देश्य है ; इसका वर्ष जनवरी से प्रारम्भ होता है ; वा० मू० ३) प्रति ।), प० मानस संघ, रामवन, सतना (सी. पी.)

(६) योगेन्द्र*—अ० भा० योगी महामंडल का मुख-पत्र ; योग विषय का ज्ञान कराने वाला, आसन एवं प्राणायाम सम्बन्धी सबसे सस्ता, सचित्र पत्र ; वा० मू० १।), प्रति =), प० योगेन्द्र कार्यालय, प्रयाग।

(७) संजय—सन् १६३३ मे साप्ताहिक रूप में हरिजन आंदोलन का उद्देश्य लेकर प्रकाशित हुआ। द्वितीय वर्ष में समाज-सेवा का उद्देश्य लेकर मासिक रूप में प्रकाशित। १६३६ के अंत तक सचित्र मासिक निकलता रहा। अब जुलाई १६४८ से पुनः सचित्र रूप में प्रकाशन प्रारम्भ हुआ; संस्था० तथा सं० श्री भद्रसेन गुप्त; लेख अच्छे रहते हैं। 'कृष्णाङ्क' 'महाभारताङ्क', 'भारतरत्नाङ्क' आदि विशेषाङ्क भी प्रकाशित हुए हैं, जनवरी १६४६ में 'कलियुग' अङ्क प्रकाशित हो रहा है। 'महाभारताङ्क' अति लोकप्रिय सिद्ध हुआ। वा० मू० ८), प्रति ॥=), पृष्ठ ४०; प० २४, क्लाइव स्कायर, नई दिल्ली।

(छ) पौराणिक : मासिक

✓ कल्याण—अगस्त सन् १६२६ (श्रावण कृष्णा एकादशी सम्वत् १६८३) से सत्संग भवन, बम्बई द्वारा एक वर्ष तक प्रकाशित। उसके बाद निरंतर गोरखपुर से निकल रहा है। प्रथम विशेषाङ्क 'भगवन्नामाङ्क' था और अब तक इसके भक्ताङ्क, गीताङ्क, रामायणाङ्क, कृष्णाङ्क, ईश्वराङ्क, शिवाङ्क, शक्ति अङ्क, योगांक, वेदान्ताङ्क, सन्ताङ्क, मानसाङ्क, गीता तत्वाङ्क, साधनाङ्क, श्रीमद्भागवताङ्क, संक्षिप्त महाभारताङ्क, संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायणाङ्क, संक्षिप्त पद्मपुराणाङ्क, गौअंक, संक्षिप्त मारकण्डेय ब्रह्मपुराणाङ्क

और नारी अङ्क निकले हैं। अगले वर्ष (१९४९) उपनिषदांक प्रकाशित होगा। इसका प्रत्येक विशेषांक साहित्य की अनमोल निधि है; प्रायः सभी अप्राप्य हैं। आद्य एवं वर्तमान सं० श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, सह० सं० सर्वश्री चिम्मनलाल गोस्वामी, पाण्डे रामनारायणदत्त, गौरीशंकर द्विवेदी, माधवशरण, शिवनाथ दुबे, रामलाल एवं कृष्णचन्द्र अग्रवाल; इस समय इसकी ग्राहक संख्या १ लाख से ऊपर है; वा० मू० ६≈) में ही विशेषांक तथा शेष ११ अंक मिलते हैं। साधारण अंकों में भी ठोस सामग्री रहती है। प० गीताप्रेस, गोरखपुर।

(ज) सांस्कृतिक : त्रैमासिक

(१) भारतीय संस्कृति*—गत वर्ष से प्रकाशित; भारतीय संस्कृति के सब अंगों (साहित्य, इतिहास, दर्शनशास्त्र, कला, शिक्षा, समाज-व्यवस्था) का अध्ययन, प्रचार तथा उन्नति करना ही उद्देश्य है, सबसे सस्ती त्रैमासिक पत्रिका; अन्य भाषाओं से अनूदित लेख भी प्रकाशित होते हैं। अवैतनिक सं० श्री प्रभाकर माचवे; वा० मू० ३), प० संस्कृति सदन, रतलाम।

मासिक

(२) कर्मयोग—वसन्त पञ्चमी २००३ से साप्ताहिक रूप में श्री हरिशंकर शर्मा कविरत्न के सम्पादकत्व में निकला; चार अंकों के बाद पाक्षिक रूप मे प्रकाशित। आज-कल मासिक रूप में श्री धर्मदेव शास्त्री दर्शनकेसरी के सम्पादन में प्रकाशित हो रहा है। लेखादि का चयन प्रारम्भ से ही सुन्दर; सं० कार्यालय-अशोक आश्रम, कालसी (देहरादून), वा० मू० ४) प० गीता-मन्दिर प्रेस, सिकन्दरा, आगरा।

(३) भारतीय—१५ अगस्त १९४७ से प्रकाशित; संचा० श्री जगन्नाथ-प्रसाद मालवीय, सं० श्री रामेश्वर भट्ट; भारतीय जीवन-दर्शन और विचार-धारा से परिपूर्ण स्वस्थ सामग्री देता है, वा० मू० ६॥≈), प्रति ।≈) प०, ५०, खुशहालपर्वत, इलाहाबाद।

(४) भारतीय विद्या पत्रिका*—श्रावण १६६८ से प्रकाशित। भारतीय विद्याभवन का मुख-पत्र; सं० सर्व श्रीकन्हैयालाल मुन्शी, सीताराम चतुर्वेदी। विद्याभवन के समाचारों के अतिरिक्त अध्ययनपूर्ण लेख रहते हैं; प० बम्बई ७.

(५) मानवधर्म—अगस्त १६४१ से प्रकाशित; सं० श्री दीनानाथ भार्गव 'दिनेश', सह० सं० श्री तिलकधर शर्मा; प्रत्येक नूतन वर्ष के प्रारम्भ में विशेषाङ्क प्रकाशित होता है, अब तक धर्माङ्क, युद्धांक, नियंत्रण अङ्क, श्रीकृष्णाङ्क, मातृभूमि अङ्क तथा गांधीअङ्क प्रकाशित हुए हैं; साधारण अङ्कों में भी लेख, कवितादि का संकलन सुन्दर रहता है; छपाई, गेटअप भी सुन्दर। वा० मू० ५), प्रति ।=), प० पीपल महादेव, दिल्ली।

(६) सात्विक जीवन—१६४० से प्रकाशित; संचा० काशीराम बनारसीलाल; प्रारम्भ में श्री गुप्तनाथसिंह इसके सम्पादक रहे। सं० श्री मनोहर मालवीय; कलेवर क्षीण है पर नामानुकूल सामग्री देता है; वा० मू० ३), प्रति ।), प० ८३, पुराना चीना बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता।

(झ) साम्प्रदायिक : मासिक

✓(१) कबीर संदेश—महात्मा कबीर के हिन्दू मुसलिम एकता के सिद्धांत का अनुमोदक; सं० श्री उदयशंकर शास्त्री; प० कबीर संदेश कार्यालय, स्थान हरक, पो० सतरिख (जिला बाराबंकी) यू. पी.

✓(२) दादू सेवक*—महात्मा दादूदयाल के 'दादू पंथ' से सम्बन्धित लेखादि छपते हैं: प० दादूसेवक प्रेस, पीतलियों का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर।

✓(३) महाशक्ति—दिसम्बर १६४७ से प्रकाशित; सं० सर्वश्री वासुदेव मेहरोत्रा, शिवनारायण उपाध्याय, बलदेवराज शर्मा 'उपवन'; इसमें सामाजिक व साहित्यिक लेखों का भी समावेश रहता है; वा० मू० ४); प्रति ।=), प० ५/५३, त्रिपुरा भैरवी, काशी।

(४) स्वसवेद—१३ वर्ष से प्रकाशित ; संचा० महन्त बालकदासजी ; सं० सर्वश्री मोतीदास, चेतनदास ; कबीर पंथ का प्रचार; प्रसार ही मुख्य ध्येय है, इसका गुजराती संस्करण भी निकलता है; वा० मू० ३), प० सीयाबाग, बड़ौदा।

(५) संगम—१६४२ से प्रकाशित ; संस्था० श्री सत्यभक्त, सं० सर्वश्री स्वामी कृष्णानन्द सोख्ता, सूरजचन्द्र सत्यप्रेमी ; यह सत्यभक्त जी द्वारा निर्मित 'सत्यसमाज' के सिद्धान्तों का प्रचारक है; वा० मू० ३), प्रति ।); प० सत्याश्रम, वर्धा।

(६) संतवाणी—फाल्गुन शुक्ला अष्टमी २००५ से प्रकाशित ; संस्था० स्वामी मंगलदास जी, सं० श्री केशवदास स्वामी ; दादू पंथ से सम्बन्धित लेख ही रहते हैं ; वा० मू० ५), प्रति ।।), प० मंगलप्रेस, जयपुर।

(ञ) विविध : मासिक

(सत्य, ज्ञान, भक्ति, हित)

(१) मानवता—मई १६४८ से प्रकाशित ; सचा० श्री किशनलाल गोयनका, सं० श्रीमती राधादेवी गोयनका तथा श्री शंकरसहाय वर्मा ; पृष्ठ १००, लेखों का चयन बहुत सुन्दर रहता है ; मानवता का संदेशवाहक, नाम को सार्थक बनाता है ; छपाई भी आकर्षक ; वा० मू० १२), प्रति १) ; प० आकोला (बरार)

(२) सतयुग—८ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री सत्यभक्त ; सत्य, न्याय और ऐक्य के आधार पर संसार के नए संगठन का पत्र ; साधारणतः लेख अच्छे रहते हैं ; वा० मू० ५), प्रति ।=), प० सतयुग प्रेस, इलाहाबाद।

(३) सर्वहितकारी—मई १६४७ से प्रकाशित ; संस्था० महात्मा शाहनशाही, सं० सच्चिदानन्द द्विजहंस ; शाहनशाही संघ का मुख-पत्र ; वा० मू० ५), प्रति ।।), प० रायबरेली (यू०पी०)

(४) साधु—मई १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री श्रीदत्त शर्मा ; बाबा

काली कमलेवाला क्षेत्र, ऋषिकेश का मुख-पत्र; वा० मू० ४), प्रति ।=),
प० साधु कार्यालय, १२ टोंटी, सदर बाजार, दिल्ली।

(५) संकीर्तन—यह पत्र लगातार नो वर्षों तक मेरठ से निकला था। प्रारम्भ में सम्पादक श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी (झूंसी) रहे व ५ वर्ष तक श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र' के सम्पादन में निकला और १९३९ में बंद होगया; अब रामनवमी चैत्र, २००५ वि० से प्रकाशित। पत्र पर प्रथम वर्ष अंकित है। वर्तमान सं० श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र'; वा० मू० ५), प्रति ।), प० मानस संघ, पो० रामवन, सतना (सी० पी०)

साप्ताहिक

(६) विश्वहितैषी—२१ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री खुशीराम शर्मा वाशिष्ठ; अ० भा० व्यापक धर्म सभा का मुख-पत्र; सर्व धर्म समन्वय ही उद्देश्य है; पृष्ठ संख्या कम रहती है; प्रकाशक—श्रीनिवास वाशिष्ठ, १०२४, रोशनपुरा, दिल्ली।

(७) ज्ञानशक्ति—३५ वर्ष से प्रकाशित; सर्व शिरोमणि मुनि समाज (गोरखपुर) का मुख-पत्र; सं० सर्वश्री योगेश्वर, शिवकुमार शास्त्री; प्रकाशन अनियमित, साधारण सामग्री रहती है; वा० मू० ३), प्रति =), प० ज्ञानशक्ति प्रेस, गोरखपुर।

---

५. ऐतिहासिक एवं शोध-पत्रिकाएँ

(क) ऐतिहासिक : मासिक

इतिहास—१५ अगस्त १९४८ से प्रकाशित ; इसमें ऐतिहासिक षडयंत्रकारियों का परिचय देकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है ; स्वतंत्रता संग्राम के खिलाड़ियों के ऐसे परिचय की बड़ी आवश्यकता भी है ; वा० मू० ४), प्रति –)॥ ; सं० तथा प्रकाशक : श्री विशनस्वरूप कोलमर्चेन्ट, कटरा बड़ियान, दिल्ली ।

(ख) साहित्य : षाण्मासिक

(१) जैनसिद्धान्त भास्कर—१९३३ से त्रैमासिक रूप में प्रकाशित; अब वर्ष में दो बार निकलती है। अवैतनिक सं० सर्वश्री ए. एन. उपाध्ये, गो० खुशाल जैन, कामताप्रसाद जैन, नेमिचन्द्र जैन शास्त्री ; प्राचीन शोध और पुरातत्व सम्बन्धी पत्रिका ; योग्य विद्वानों के अन्वेषणपूर्ण लेख रहते हैं। कुछ अंश अंग्रेजी में भी छपता है। वा० मू० ३), प्रति १।), पृष्ठ ११२, प० जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

त्रैमासिक

(२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका—जून १८९६ (सम्वत् १९५३) से प्रकाशित ; २४ वर्षों तक मासिक रूप में निकलती रही ; 'सरस्वती' की प्रतिद्वन्द्वी पत्रिका रही। २५ वें वर्ष (सं १९७७) में इसने त्रैमासिक रूप धारण किया; प्रारम्भ में सर्वश्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, मुंशी देवीप्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, श्यामसुन्दरदास सम्पादक रहे। श्री ओझाजी ने १३ वर्षों (सन् १९२०-३३) तक बड़ी लगन से सम्पादन किया ; डा. वासुदेवशरण अग्रवाल

के सम्पादकत्व मे 'विक्रमाङ्क' प्रकाशित हुआ ; सर्वश्री रामचन्द्र शुक्ल, केशवप्रसाद मिश्र, भी सम्पादक रह चुके हैं। अब सं० श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र, सह० सं० श्री शिवनाथ ; पत्रिका का प्रसार भारत के अतिरिक्त इग्लैण्ड, अमेरिका, रूस, अफ्रीका, पौलेण्ड, होलेण्ड, अरब, मोरिशस, फिजी और वर्मा में भी है। वा० मू० १०), नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्यों से ३), प० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

(३) भारतीय विद्या*—कई वर्ष से प्रकाशित; सं० सर्वश्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, सीताराम चतुर्वेदी ; भारतीय संस्कृति सम्बन्धी शोधपूर्ण लेख ही रहते हैं। इसमें कुछ अंश गुजराती मे भी छपता है। प० भारतीय विद्या भवन, हार्वेरोड, चौपाटी, बम्बई ७.

(४) विकास—श्रावणी पूर्णिमा २००५ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री डा. फतहसिंह, हारवल्लभ, 'अचल' शर्मा ; शोध सम्बन्धी लेखों के साथ-साथ सांस्कृतिक और साहित्यिक लेख विशेषतः रहते हैं। गेट अप, छपाई, सफाई भी आकर्षक, भविष्य उज्ज्वल है ; वा० मू० ५), प्रति १।।), पृष्ठ ६६ ; प० श्री भारतीय सस्कृति संसद, कोटा।

(५) विश्वभारती पत्रिका—१९४२ (पौष सं० १९९८) से प्रकाशित ; प्रारम्भ से ही सं० श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी ; रवीन्द्र साहित्य का नियमित प्रकाशन तथा देशी और विदेशी पुस्तकों की प्रामाणिक आलोचना इसकी अपनी विशेषता है ; वा० मू० ६), प्रति १।।), प० हिन्दी भवन, शांतिनिकेतन (जिला बोलपुर) बंगाल।

(६) शोधपत्रिका—मार्च १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री पुरुषोत्तम मेनारिया तथा सम्पादकमण्डल मे, सर्व श्री नरोत्तमदास स्वामी, डा० रघुवीरसिंह, मोतीलाल मेनारिया, भगवतशरण उपाध्याय, कन्हैयालाल सहल तथा देवीलाल सामर हैं; मुख्यतः प्राचीन राजस्थानी साहित्य, इतिहास, पुरातत्त्व, कला, भाषा, शास्त्र आदि के शोधपूर्ण निबन्ध रहते हैं। समीक्षा भी रहती

है ; वा० मू० ६), प्रति १॥), प० प्राचीन साहित्य शोध संस्थान, विद्यापीठ, उदयपुर।

(७) सम्मेलन पत्रिका—हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थापना काल से ही, ३५ वर्षों से, प्रकाशित ; सम्मेलन का साहित्य-मन्त्री इसका सम्पादक होता है ; डा० धीरेन्द्र वर्मा बहुत वर्षों तक सम्पादक रहे। सं. श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ; भाषा सम्बन्धी, साहित्यिक खोजपूर्ण निबन्ध अच्छे रहते हैं ; वा० मू० ३), प्रति १), प० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

(८) हिन्दुस्तानी—१७ वर्ष से प्रकाशित ; कई वर्षों से सं० श्री रामचन्द्र टण्डन ; पहले डा० धीरेन्द्र वर्मा भी इसके सम्पादक रहे ; हिन्दुस्तानी एकेडमी (अब हिन्दी एकेडमी) संयुक्तप्रान्त, की मुख-पत्रिका ; राजस्थानी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली से सम्बन्धित खोजपूर्ण लेख रहते हैं ; हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू पुस्तकों की समीक्षा भी रहती है ; वा० मू० ४), प० इलाहाबाद।

---

६. साहित्यिक एवं शैक्षणिक

(क) प्रगतिवादी : द्वैमासिक

(१) कामना—अप्रैल १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री विजय मिश्र, सह० सं० श्री अमर निर्मल ; कहानी सं० श्री राजेन्द्र सक्सेना, कविता सं० श्री 'पलायनवादी' ; लेखों का चयन सुन्दर रहता है, समालोचनात्मक टिप्पणियाँ जानदार रहती हैं ; वा० मू० ४॥), प्रति ॥), प० कामना कार्यालय, कोटा जंकशन (राजपूताना)

मासिक

(२) आदर्श—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री जवाहर चौधरी, प्रवन्ध सं० श्री पृथ्वीनाथ शर्मा ; समाजवादी दृष्टिकोण को लेकर अच्छे लेख रहते हैं। लेखादि का स्तर भी ऊँचा है ; वा० मू० ५॥), प्रति ॥), प० १३४६, पीपल महादेव, दिल्ली।

(३) जनवाणी—जनवरी १९४७ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री आचार्य नरेन्द्रदेव, रामवृक्ष बेनीपुरी, बैजनाथसिंह 'विनोद' ; समाजवादी विचारधारा को पोषित करते हुए साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयों पर योग्य विद्वानों के लेख रहते हैं, टिप्पणियाँ भी सामयिक रहती हैं ; थोड़े ही अर्से में इसने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है ; वा० मू० ८), प्रति ॥), प० गौदोलिया, बनारस।

(४) नयाकदम—हाल ही में प्रकाशित ; सं० वीरेन्द्र त्रिपाठी ; वा० मू० ४), प० बल्लीमारान, दिल्ली।

(५) नयासमाज—जुलाई १९४८ से प्रकाशित ; संचा० नयासमाज ट्रस्ट ; सं० श्री मोहनसिंह सेंगर ; परामर्श समिति में, सर्वश्री महादेवी

वर्मा, काका कालेलकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा जैनेन्द्रकुमार हैं ; नई समाज व्यवस्था का प्रतिपादन करता है ; सभी प्रसिद्ध लेखकों का सहयोग प्राप्त है। कविता व लेखों का चयन विशेष रूप से सुन्दर ; छपाई, सफाई, गेट अप भी नयनाभिराम ; अंत में लेखकों का परिचय भी रहता है। भविष्य उज्ज्वल है। वा० मू० ८), छःमाही ४), प्रति ।।।), पृष्ठ ८०; प० १००, नेताजी सुभाष बोस रोड, कलकत्ता .१.

(६) विश्ववाणी—८ वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० श्री सुन्दरलाल, सं० श्री विश्वम्भरनाथ पाण्डेय ; हिन्दुस्तानी का समर्थक ; स्वस्थ सामग्री प्रदान करता है। 'सोवियत् संस्कृति अङ्क', 'बौद्ध संस्कृति अङ्क', 'अन्तर्राष्ट्रीय अङ्क' 'गांधी अङ्क' आदि समय-समय पर कई विशेषांक प्रकाशित हुए हैं ; प्रमुख मासिकों मे एक है ; वा० मू० ८), प्रति १।।), प० साउथ मलाका, इलाहाबाद।

(७) समता—दिसम्बर १९४७ से प्रकाशित, सम्पादक-मण्डल में सर्वश्री नन्ददुलारे वाजपेयी, 'अचल', शिवदानसिंह चौहान, गजानन माधव मुक्तिबोध तथा गोपीकृष्णप्रसाद हैं ; साहित्यिक व सांस्कृतिक नवनिर्माण का ध्येय लेकर इस पत्र-पुस्तक का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है ; उच्चकोटि के लेखको का सहयोग प्राप्त है ; आशा है, शीघ्र ही सुरक्षित स्थान बना लेगी, आलोचनात्मक गंभीर लेख रहते हैं, वा० मू० १०), प्रति १); पृष्ठ १३०, प० ६०१, गोल बाजार, जबलपुर।

(८) साधना—चैत्र सं० २००५ से प्रकाशित, सं० श्री परमानन्द शर्मा ; 'निराला' सम्बन्धी साहित्य हर अङ्क में छपता है, उर्दू की गजलें भी रहती हैं, आलोचनात्मक टिप्पणियाँ सामयिक और तर्कपूर्ण रहती हैं ; वा० मू० ६), प्रति ॥=), प० १५, भवानीदत्त लेन, कलकत्ता।

(६) हंस—१९३० से प्रकाशित ; संस्था० उपन्यास-सम्राट प्रेमचंद ; उन्हीं की स्मृति में प्रकाशित ; सं० सर्वश्री अमृतराय, नरोत्तम नागर। प्रारम्भ में प्रेमचन्दजी ही सम्पादक थे, उनके देहावसान पर कुछ समय

श्री जैनेन्द्रकुमार ने भी सम्पादन किया ; निम्न विशेषांक अधिक प्रसिद्ध हुए—'प्रेमचन्द स्मृति अंक' (पराडकरजी द्वारा सम्पादित), 'एकांकी नाटक अंक', 'रेखा चित्रांक', 'कहानी विशेषांक' 'प्रगति अंक' तथा 'काशी अंक'। इसने अपना स्तर अभी तक कायम रक्खा है, अन्तर्प्रान्तीय साहित्य सम्बन्धी लेख भी समय-समय पर निकलते रहते हैं, प्रगतिशील विचार-धारा का पृष्ठपोषक प्रमुख पत्र, वा० मू० ६), प्रति ।|) , प० सरस्वती प्रेस, पो० बॉ० २२, बनारस।

गल्प व कहानी : मासिक

(१) अरुण—मई १६३२ से प्रकाशित; सं० श्री पृथ्वीराज मिश्र ; कहानियाँ सुरुचिपूर्ण निकलती हैं, 'अरुण चित्रावली' में अच्छे चित्र भी छपते हैं। पहेलियाँ भी छपती हैं, जिनपर पुरस्कार मिलता है। वा० मू० ४।|), प्रति =), पृष्ठ ५२, प० अरुण प्रेस, मुरादाबाद।

(२) आरती*—सं० श्री 'अज्ञेय' तथा श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'; वा० मू० ५), प्रति ।=) ; प० आरती मन्दिर, पटना सिटी।

(३) आँधी*—गत वर्ष से प्रकाशित, सं० श्री कमलापति त्रिपाठी ; सुरुचिपूर्ण कहानियाँ रहती हैं ; 'हिमालय' की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ कहानी पत्रिका ; प० संसार प्रेस, गायघाट, काशी।

(४) कल्पना—अप्रैल १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री 'आनन्द', सलाह-कार सं० श्री चन्द्रभूषण राजवंशी ; प्रथम अंक से ही धारावाहिक उपन्यास भी प्रकाशित ; पहेली भी छपती है। वा० मू० ६), प्रति ।|), प० कल्पना कार्यालय, मेरठ।

(५) कहानियाँ—विगत वर्ष से प्रकाशित, सं० श्री गुरुप्रसाद उप्पल ; कहानी शीर्षक के ऊपर लेखक का नाम रहता है, अन्त में पाठकों के पत्र भी छपते हैं ; कहानियाँ सुरुचिपूर्ण रहती हैं ; वा० मू० ६), प० संत पब्लिकेशन्स, कदमकुँआ, पटना।

(६) चिनगारी—जनवरी १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री कुशवाहा 'कान्त' आदि। धारावाहिक उपन्यास भी छपता है, कविताएँ व रजतपट पर आलोचना भी रहती है; वा० मू० ६), प्रति ।।); प० चिनगारी कार्यालय मिर्जापुर (यू० पी०)

(७) धूपछाँह—जुलाई १६४८ से प्रकाशित; सं० प्रो० बालमुकुन्द गुप्त, सह० सं० सर्वश्री सोमनाथ शुक्ल, रमाकान्त दीक्षित, रत्नप्रकाश हजेला; प्रसिद्ध लेखकों का सहयोग प्राप्त है, बालस्तम्भ भी है। निष्पक्ष पुस्तक समीक्षा भी उद्देश्य में घोषित है; वा० मू० ५), प्रति ।।), प० ३२/८४ बंगिया मनीराम, (पो. बॉ. २८१) कानपुर।

(८) नई कहानियाँ*—१६३६ से प्रकाशित; वा० मू० ५।।), प्रति ।≤); प० २८, एडमोन्स्टन रोड, इलाहाबाद।

(९) पराग—सितम्बर १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री कुलदीप; वा० मू० ४), प्रति ।–); प० पराग कार्यालय, आगरा।

(१०) पंकज*—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्री श्रीराम शर्मा 'राम' वा० मू० ५।।), प्रति ।।), पृष्ठ ४८; प० १८१७, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

(११) मनोहर कहानियाँ—१६३६ से प्रकाशित; सं० श्री क्षितिन्द्र-मोहन मित्र; वा० मू० ३।।।), प्रति ।–), प० १६४, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

(१२) माया—जनवरी १६३० (सौर १-१०-१६८६) में सर्वश्री क्षितिन्द्र-मोहन मित्र 'मुस्तफी', त्रिजयवर्मा के सम्पादकत्व प्रकाशित। प्रथम अङ्क में अंकित है—'माया—प्रत्येक व्यक्ति के देवत्व में विश्वास रखती है और इसे कहानियों द्वारा प्रकट करना इसका लक्ष्य है—क्योंकि कहानी ही इसके प्रकट करने का सबसे अच्छा साधन है।' तब से यह निरंतर 'मुस्तफी' जी द्वारा उन्हीं के सम्पादन से निकल रही है लेकिन संभवतः आज वह उद्देश्य भुलाया हुआ है, यद्यपि आज अनुमानतः इसकी ५० हजार से ऊपर प्रतियाँ छपती है; 'मनोहर कहानियाँ' भी इन्हीं की पत्रिका है। आज देश के नैतिक

स्तर को ऊँचा करने की आवश्यकता है ; वा० मू० ४॥), प्रति ।=) ; प० माया प्रेस; प्रयाग ।

(१३) मंजरी—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ; 'जो कथाकार अपनी कहानियों का कॉपीराइट मंजरी-संचालक को देते हैं, उनकी कहानियों पर स्वीकृति के साथ ही अग्रिम पारितोषिक भेज दिया जाता है, यह पत्रिका की नीति है ; अन्य पत्रों में प्रकाशित कहानियों की निष्पक्ष समीक्षा भी रहती है ; 'नवीन कथा साहित्य' स्तम्भ मे नवीन प्रकाशनों (कहानी संग्रह और उपन्यास) की विस्तृत समीक्षा भी रहती है । अंत मे, अङ्क के कहानी लेखकों का परिचय भी रहता है । शीघ्र ही उच्च स्थान बना लेगी । वा० मू० ६) प्रति ॥), प० इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ।

(१४) रसीली कहानियाँ—१९३९ से प्रकाशित ; प्रबन्ध सं० श्री नन्द-गोपालसिंह सहगल ; वा० मू० ४), प्रति ।-), प० २८, एडमोन्सटन रोड, इलाहाबाद ।

(१५) रानी—९ वर्ष से प्रकाशित ; संचा० तथा स० श्री दीनानाथ वर्मा , पारिवारिक मासिक पत्रिका ; सचित्र सुरुचिपूर्ण कहानियों के अति-रिक्त लेख कविताएँ भी सुन्दर रहती है ; मनोवैज्ञानिक लेख भी रहते हैं । ३-४ पृष्ठों में केवल चित्र छपते हैं जिनमें नवदम्पतियों के चित्र अधिक रहते हैं । वा० मू० ५), प० १२१, चितरंजन एवेन्यू , कलकत्ता ।

(१६) सजनी—अक्टूबर १९४३ से प्रकाशित , सं० श्री नरसिंहराम शुक्ल , यह व्यापारिक दृष्टिकोण से प्रकाशित होती है । साधारण कहानियाँ रहती हैं ; वा० मू० ४॥), प्रति ।-), प० सजनी प्रेस, इलाहाबाद ।

(१७) सरिता—३ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री विश्वनाथ ; इसका प्रकाशन हिन्दी को अभूतपूर्व देन है । आर्ट पेपर पर दुरंगी छपाई में प्रति मास आवरण पृष्ट पर आकर्षक नवीन चित्र लिये, यह सर्वश्रेष्ठ पारिवारिक पत्रिका कही जा सकती है ; सुरुचिपूर्ण कहानियों के अतिरिक्त प्रतिष्ठित

विद्वानों के लेखादि भी रहते हैं, निबन्ध प्रतियोगिता व इसमें छपे हुए चित्रों का उचित शीर्षक बनाने पर पुरस्कार भी दी जाती है। 'कुछ घर की कुछ जग की' स्थायी स्तम्भ स्त्रियों के लिए व कुछ पृष्ठ ('बाल सरिता') बालकों के लिए रहते हैं। चल-चित्रों की निष्पक्ष आलोचना रहती है और इसलिए सिनेमा विज्ञापन नहीं लिये जाते, अश्लील विज्ञापन भी नहीं छपते; सरिता-संचालकों का कहना है कि लेखकों को इसके पारिश्रमिक की दर देशी भाषाओं के पत्रों में सर्वाधिक है। वा० मू० १५), एक प्रति १।) , मूल्य कुछ अधिक जान पड़ता है, प० दिल्ली प्रेस, पो० बॉक्स १७, नई दिल्ली।

साप्ताहिक

(१८) मधुप—१३ अप्रैल १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री एम. एल. पाण्डेय; कहानी प्रधान साप्ताहिक का प्रकाशन संभवतः कहानी—जगत में एक नई चीज है; मासिक पत्र के आकार में प्रकाशित; आलोचना, सिनेमा व साहित्य-चर्चा का भी स्तम्भ है; वा० मू० १५), प्रति ।–), पृष्ठ ३४; मूल्य कुछ अधिक मालूम पड़ता है; प० नं० १, कोल्फगिरा, इलाहाबाद।

(ग) काव्यात्मक : मासिक

(१) अतीत—(विजयादशमी, २००४) नवम्बर १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री देवीदास शर्मा, सह० सं० श्री निर्भय; किसी गौरवमय एवं महत्वपूर्ण मार्मिक स्थल को लेकर प्रति मास पद्यात्मक रूप मे पुस्तकाकार प्रकाशित, हर अङ्क मे विषय परिवर्तित रहता है। अब तक 'मीना बाजार'; 'सिंहगढ़', 'कारागार', 'शिवापत्र', 'गुरु गोविन्दसिंह' आदि पाँच अङ्क निकले हैं; श्रमजीवी नवयुवक—सम्पादकों का यह प्रयत्न स्तुत्य है। वा० मू० ६), प्रति ।।=) ; प० अतीत महल, हाथरस (यू० पी०)

(२) कलाधर—अगस्त १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री मूलचन्द भौंर, सह० सं० श्री माधवेश; कविताओं का चयन सुन्दर रहता है; सम्पादकीय पृष्ठ भी है; वा० मू० ४), प्रति ।=); प० कलाधर कार्यालय, पाली (मारवाड़)

(३) सुकवि—१९२७ से प्रकाशित; संचा० श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही 'त्रिशूल', सं० मोहनप्यारे शुक्ल; समस्यापूर्ति इसकी विशेषता है; प्रत्येक अङ्क पर किसी कवि अथवा काव्यरसिक रईस वा तालुकादार का चित्र रहता है और अन्दर उसका परिचय भी छपता है। नवयुवक कवियों को विशेष प्रोत्साहन देता है; प० सुकवि प्रेस, लाठी मोहाल, कानपुर।

(घ) आलोचनात्मक : मासिक

(१) दृष्टिकोण—फरवरी १९४८ से प्रकाशित; सं० सर्वश्री नलिन-विलोचन शर्मा, शिवचन्द्र शर्मा, सम्पादक मण्डल में; सर्वश्री राहुल सांकृत्यायन, रामविलास शर्मा, नगेन्द्र नागाइच, धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, जगन्नाथ-प्रसाद शर्मा तथा देवेन्द्रनाथ शर्मा हैं। इसमे भारतीय साहित्य के अतिरिक्त विदेशी साहित्य की आलोचना भी की जाती है; पुस्तक समीक्षा एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। अधिकारी विद्वानों के योग्य लेख रहते है। निश्चय इसका प्रकाशन महत्वपूर्ण है; वा० मू० ८), प्रति ।।।); पृष्ठ ६४; प० शारदा प्रकाशन, बाँकीपुर, पटना।

(२) साहित्य संदेश—पिछले १० वर्षों से आलोचना क्षेत्र मे यही एक मात्र पत्र रहा है; संचा० श्री महेन्द्र, सं० श्री गुलाबराय एम. ए.; १९३८ में प्रकाशित होकर सन् १९४२ मे देशव्यापी आन्दोलन के कारण प्रकाशन १।। वर्ष तक स्थगित रहा; पुस्तकों की निष्पक्ष समीक्षा भी रहती है; आचार्य द्विवेदी अङ्क, आचार्य शुक्ल अङ्क, विद्यार्थी अङ्क तथा श्यामसुन्दर-दास अङ्क आदि कई विशेषाङ्क भी निकले हैं जिनका अपना महत्व है; समीक्षात्मक लेखादि अच्छे रहते हैं, कभी-कभी प्रूफ सम्बन्धी गल्तियाँ अधिक रह जाती हैं; वा० मू० ४), प० साहित्य रत्न भण्डार, गांधी रोड, आगरा।

(ङ) भाषा सम्बन्धी : मासिक

(१) उज्ज्वल—दिसम्बर १९४७ से प्रकाशित; सं० श्रीराम अट्रावलकर; सह० सं० सर्वश्री चां० ग० चौधरी, वि० श्रा० चौधरी; 'राष्ट्रभाषा' परीक्षा

के लिए यह क्षेत्र तैयार करता है, कुछ अंश मराठी में भी प्रकाशित ; वा० मू० ५), प० ८८, जिल्हापेठ, जलगाँव (पूर्व खानदेश)

(२) जयभारती—दिसम्बर १९४७ से प्रकाशित ; प्रथम अङ्क हिन्दी साहित्य सम्मेलनाङ्क है ; सं० श्री पंढरीनाथ मुकुंद डांगरे ; सह० सं० सर्वश्री श० दा० चितले, प्र० रा० भुपटकर, चि० बा० ओंकार, य० बा० उमराणीकर; श्री० रा० मुँदड़ा ; यह महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का मुख-पत्र है ; वा० मू० ४), प्रति ।=) ; प० ६०३, सदाशिव लक्ष्मी रास्ता, पो० बॉक्स ५५८, पूना २.

(३) दक्खिनी हिन्द—जनवरी १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री रामानंद शर्मा, सह० सं० रा० सारंगपाणि (एक तमील भाषी) ; यह मद्रास सरकार की हिन्दुस्तानी पत्रिका है ; उत्तर और दक्षिण के बीच सांस्कृतिक सेतु का कार्य करने के लिए यह प्रकाशित हो रही है ; भाषा सरल रहती है ; सं० कार्यालय-हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास १७ ; वा० मू० ४), प्रति ।=) प० डाइरेक्टर ऑफ इन्फोर्मेशन एण्ड पब्लिसिटी, फोर्ट सेन्ट जार्ज, मद्रास ।

(४) व्रजभारती*—गत ७ वर्ष से प्रकाशित ; व्रज साहित्य मण्डल, मथुरा का मुख-पत्र ; व्रजभाषा से सम्बन्धित लेख ही अधिक रहते हैं ; सर्वश्री जवाहरलाल चतुर्वेदी, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, मदनमोहन नागर आदि भूतपूर्व सम्पादक रह चुके हैं । वर्तमान सं० श्री सत्येन्द्र ; प० मथुरा ।

(५) राष्ट्रभाषा—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; संरक्षक, श्री शिवबिहारी तिवाड़ी ; सम्पादक मण्डल में सर्वश्री हरिप्रसाद शर्मा, जगदीशचन्द्र जैसवाल, यादवेन्द्र झा 'वियोगी' हैं ; हिन्दी साहित्य परिषद् (जयपुर) की मुख-पत्रिका ; लेखादि का चुनाव अच्छा रहता है ; वा० मू० ४।), प्रति ।=), पृष्ठ ४० ; प० जयपुर ।

(६) राष्ट्रभाषा—गत ७ वर्ष से प्रकाशित ; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) का मुख-पत्र ; सं० श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन, सह० सं० श्री शुकदेवनारायण ; राष्ट्रभाषा परीक्षाओं की प्रचार सम्बन्धी विज्ञप्तियों के

अतिरिक्त कई पत्रों से उद्धृत लेख व कविताएँ रहती हैं। कई लेख मौलिक भी निकलते हैं और बहुधा अच्छे रहते हैं; साहित्य समालोचना का स्तम्भ भी है। वा० मू० ३) ; प० वर्धा (सी. पी.)

(७) राष्ट्रभाषा पत्र—जनवरी १९४४ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री लिंगराज मिश्र, अनुसूयाप्रसाद पाठक ; उत्कल राष्ट्रभाषा प्रचार सभा का मुख-पत्र ; छोटी-छोटी कहानियाँ व लेख सुन्दर रहते हैं ; कुछ अंश उड़िया भाषा में भी छपता है। वा० मू० ४), प्रति ।=) ; प० उत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, चाँदनी चौक, कटक।

(८) हिन्दी*—कई वर्ष से प्रकाशित ; पहले काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित होती थी, अब स्वतंत्र रूप से प्रकाशित , सं० श्री चन्द्रबली पाण्डेय ; हिन्दी की समस्या को लेकर गंभीर लेख रहते हैं ; वा० मू० १), वी. पी. नहीं भेजी जाती , प० जतनबर, काशी।

(९) हिन्दी प्रचार पत्रिका—६ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री भानुकुमार जैन, हरिशंकर, सह० सं० श्री 'मधुप' ; बम्बई हिन्दी विद्यापीठ का मुख-पत्र ; विद्यापीठ की विज्ञप्तियों के अतिरिक्त लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ४), प्रति ।=), प० बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, महाराज बिल्डिंग, ४ महला, गिरगाँव ट्राम जंक्शन, बम्बई ४.

(१०) सरकारी हिन्दी—अक्टूबर १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री दिवाकर 'मणि' ; सरकारी कर्मचारियों के लिए उपयोगी पत्र ; इसमें अंगरेजी के शब्दों का उपयुक्त हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी शब्दों का उर्दू पर्याय नागरी लिपि में रहता है। तथाकथित 'सरकारी भाषा' में लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।।), पृष्ठ ३२ ; प० हिन्दी साहित्य परिषद्, गोवर्धन सराय, काशी।

(च) हास्य-रस-प्रधान : मासिक

(१) चाबुक*—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री ठाकुर बच्चासिंह चौहान ; प० १४, मदन चटरजी लेन, कलकत्ता।

(२) नोकझोंक—१९३८ से प्रकाशित ; सं० श्री रामप्रकाश पंडित ; सह० सं० श्री ओमप्रकाश शर्मा ; मीठी चुटकियाँ तथा विनोदपूर्ण कहानियाँ प्रति मास पढ़ने को मिलती हैं ; 'वर्धा की चिट्ठी' और 'चाय की चुस्कियाँ' स्थायी स्तम्भ हैं ; भूतपूर्व सं० श्री केदारनाथ भट्ट के समय में इसका बहुत प्रचार था और ऊँचे दर्जे के हास्य की सामग्री पत्र प्रस्तुत करता था। 'होलिकाङ्क' आदि कई विशेषाङ्क प्रकाशित हुए ; वा० मू० ३), प्रति ।) ; प० बाग मुजफ्फरखाँ, आगरा।

पाक्षिक

(३) अजगर*—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० आहितुण्डक भुजंगराव, जोगदण्डराव ; वा० मू० ३), प० भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन, काशी।

(४) तरंग*—कई वर्षों से प्रकाशित ; सं० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' ; प० तरंग कार्यालय, काशी।

(५) मतवाला—६ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री चन्द्र शर्मा, धर्मवीर कालिया ; 'चलती चक्की' स्थायी स्तम्भ है, व्यंग-चित्र भी निकलते हैं ; वा० मू० १०), प्रति ।।), प० 'मतवाला' कार्यालय, जोधपुर।

साप्ताहिक

(६) मतवाला*—हाल ही में प्रकाशित , सं० श्री शैलेन्द्रकुमार पाठक; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ २० ; प० चावड़ी बाजार; दिल्ली।

(७) मतवाला—२५ वर्ष से प्रकाशित , संस्था० स्व० श्री महादेवप्रसाद सेठ ; सं० श्री पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' , 'चलती चक्की' शीर्षकान्तर्गत मीठी चुटकियाँ अच्छी रहती हैं , व्यंग चित्र भी सुन्दर निकलते हैं ; योग्य सम्पादक के हाथों में पत्र पुनः चमक उठेगा, ऐसी आशा है , वा० बोतल ६) नकद, प्रति प्याला =) ; प्रकाशक—श्री हरगोविन्द सेठ, बीसवीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर (यू० पी०)

(छ) शिक्षा : त्रैमासिक

(१) शिक्षा*—जुलाई १९४८ से प्रकाशित ; सयुक्त प्रान्तीय सरकार

के शिक्षा-विभाग द्वारा निकलती है; शिक्षा सम्बन्धी प्रगतियों पर प्रकाश डालने, विभिन्न समस्याओं पर विचार एवं उन्हें सुलझाने के लिये क्रियात्मक सुझाव आदि उपस्थित करने वाली सुन्दर पत्रिका है। योग्य विद्वानों के लेख रहते हैं। आशा है यह अपने नाम को पूर्णतः सार्थक बनाएगी। प० लखनऊ।

मासिक

(२) नई तालीम*—१० वर्ष से प्रकाशित; सं० श्रीमती आशादेवी, तालीमी संघ (सेवाग्राम) का मुख-पत्र; बुनियादी शिक्षा पद्धति पर लेख रहते हैं; प० सेवाग्राम, वर्धा।

(३) विद्यार्थी—१५ अगस्त १९४७ से प्रकाशित; संचा० तथा सं० श्री गोपालप्रसाद गर्ग 'रवि', सह० सं० सर्वश्री जगन्नाथप्रसाद गुप्त, धर्मेन्द्र गुप्त; विद्यार्थियोपयोगी साधारण लेख रहते हैं; वा० मू० २॥); प्रति ।); प० विद्यार्थी मंदिर, हाथरस (यू० पी०)।

(४) शिक्षकबन्धु—जनवरी १९३३ से प्रकाशित; प्रधान सं० श्री अध्यापक जगतसिंह सेंगर, सं० श्री रामचन्द्र गुप्त, शिक्षकों का हिन्दी में प्रकाशित अकेला पत्र; वा० मू० २॥), प्रति ।); प० 'शिक्षकबंधु' कार्यालय, कटरा, अलीगढ़ (यू० पी०)

(५) शिक्षण पत्रिका—आद्य सम्पादक स्व० गिजुभाई; पिछले १५ वर्ष से श्रीमती ताराबहन मोदक के सम्पादकत्व में (बम्बई से) निकल रही थी, श्री काशीनाथ त्रिवेदी, भी संपादक रहे; सं० श्री बंशीधर; शिक्षकों के लिए सरल भाषा में मनोवैज्ञानिक लेख रहते हैं; वा० मू० ३), प० बड़वानी (इन्दौर)

(६) शिक्षासुधा—११ वर्ष से प्रकाशित; संचा० श्री रामकुमार अग्रवाल; सं० सर्वश्री वीरेन्द्रकुमार, चन्द्रप्रकाश अग्रवाल; विद्यार्थियों के उपयुक्त शिक्षा सम्बन्धी लेख व कविताएँ रहती हैं, 'दवादारू' स्वास्थ्य विषयक स्तम्भ है; इसके साथ ही कुछ पृष्ठों का 'बालबन्धु' परिशिष्टांक भी हर अङ्क

में रहता है, जिसमें बालोपयोगी सामग्री रहती है। 'पुस्तकालय अङ्क' 'विद्यार्थी अङ्क', 'परीक्षांक' आदि कई विशेषाङ्क भी प्रकाशित हुए हैं ; वा० मू० ३), प्रति ।-) ; प० मण्डी धनौरा (मुरादाबाद)

(ज) सामान्य : चातुर्मासिक

(१) आलोक—अक्टूबर १९४७ से प्रकाशित ; हिन्दी-साहित्य-समाज, महाराजा कॉलेज, जयपुर का मुख-पत्र ; सं० प्रो० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण' ; विद्वतापूर्ण साहित्यिक लेख रहते हैं ; अन्य कॉलेजों के लिए भी यह प्रयास अनुकरणीय है ; वा० मू० १॥), प्रति ॥=), प० जयपुर।

त्रैमासिक

(२) भारतेन्दु—१५ अगस्त १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री इन्द्रदत्त 'स्वाधीन', सह० सं० सर्वश्री हनुमानप्रसाद, गोकुलप्रसाद बागड़ी; यह राजस्थान हिन्दी विद्यापीठ, कोटा का मुख-पत्र है ; सारगर्भित साहित्यिक सामग्री से पत्र परिपूर्ण रहता है ; वा० मू० ४), प्रति १=), प० श्री भारतेन्दु समिति, कोटा (राजस्थान)

(३) वनस्थली पत्रिका—जनवरी १९४६ से प्रकाशित ; सं० श्री सुधीन्द्र ; वनस्थली बालिका विद्यापीठ (जयपुर) का मुख-पत्र ; 'अध्ययन और निर्माण की पत्रिका' ; साहित्य समीक्षा और 'विचार विन्दु' के अतिरिक्त सुन्दर पठनीय सामग्री रहती है, नारी विषयक लेख भी रहते हैं। वा० मू० ५), प्रति १|), प० जयपुर।

द्वैमासिक

(४) पारिजात—सितम्बर १९४५ में श्री रामखेलावन पाण्डेय के सम्पादकत्व मे त्रैमासिक के दो अंक प्रकाशित हुए ; जुलाई १९४६ से अक्टूबर १९४७ तक मासिक रहा ; इसके सम्पादक सर्वश्री विश्वमोहनकुमार, देवकुमार मिश्र रहे ; तत्पश्चात द्वैमासिक रूप में निकल रहा है ; स० सर्वश्री रघुवंश पाण्डेय, देवकुमार मिश्र ; इस पत्र पुस्तक के प्रत्येक अङ्क में

अध्ययनपूर्ण सामग्री रहती है ; फिल्म की आलोचना, सामयिक चर्चा व पुस्तक समीक्षा स्तम्भ भी हैं ; लेखादि उच्चकोटि के रहते हैं ; समीक्षात्मक लेख भी प्रकाशित ; मू० ६), प्रति १), प० ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना ।

(५) प्रतीक—जून १९४७ से प्रकाशन प्रारम्भ ; वर्ष में ६ अंक-ग्रीष्म, पावस, शरद्, वसंत आदि ऋतुओं के अनुसार निकलते हैं; प्रारम्भ में ऋतु विशेष से सबंधित संस्कृत, हिन्दी में कविताएँ भी रहती हैं ; यह पत्र भी है, पुस्तक भी ; सं० सर्वश्री सियारामशरण गुप्त, नगेन्द्र, श्रीपतराय, स० ही० वात्स्यायन ; जन संस्कृति और लोक साहित्य तथा युगीन चेतना का यह प्रतीक है ; 'स्वतंत्र गंभीर लेखकों के लिए उपयुक्त हिन्दी माध्यम प्रस्तुत करना, जो साहित्य को आज की देशव्यापी मानसिक क्लांति और कुण्ठा से मुक्त करना चाहते हैं, ही इसका प्रधान उद्देश्य है' ; अधिकारी विद्वानों की उच्चकोटि की मौलिक रचनाएँ—कहानी, लेख, एकांकी नाटक तथा समीक्षाएँ भी इसमें प्रकाशित होती हैं । हिन्दीतर भारतीय साहित्यों और विदेशी साहित्यों के साथ हिन्दी का आदान प्रदान बढ़ाने की ओर भी यह उन्मुख है ; 'पत्र-पुस्तक' का यह अभिनव प्रकाशन अभिनन्दनीय है और विशेषतः साहित्यिकों द्वारा संचालित साहित्यिक आयोजन होने के कारण । वा० मू० ६), प्रति १।।) ; प० प्रतीक कार्यालय, १४, हेस्टिंग्स रोड, इलाहाबाद ।

(६) वीरभूमि—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री रतनलाल जोशी ; 'मधुचयन', 'हमारी डाक' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; राजस्थानी भाषा पर लेख रहते हैं, बच्चों के लिए भी कुछ पृष्ठ रखे हैं ; सामग्री साधारण है ; वा० मू० ६), प्रति ।।।), प० १०, नारायणप्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता ७.

मासिक

(७) अपना हिन्दुस्तान—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री ईश्वर-प्रसाद माथुर ; ग्वालियर से ऐसा सचित्र साहित्यिक पत्र निकलना गौरव-शाली है ; वा० मू० ९), प्रति ।।।), पृष्ठ ५८ ; प० बाजार बालाबाई, लश्कर (ग्वालियर)

(८) आशा—मई १९४८ से प्रकाशित ; १९४० से हस्तलिखित रूप में निकलती थी ; प्रारम्भ से ही श्री मधुसूदन 'मधुप' इसके सम्पादक हैं ; उनका प्रयास अभिनन्दनीय है ; इस सचित्र पत्रिका में लेखों का चुनाव भी साहित्यिक रुचि की अभिव्यक्ति करता है ; वा० मू० ६), प्रति ।।-), प० १४, पलासिया, इन्दौर ।

(९) उषा*—कई वर्ष से प्रकाशित ; सं० कुमारी शकुंतला सेठ तथा श्री अयोध्यानाथ 'वीर' ; नारी विषयक व अन्य समस्याओं पर सामयिक लेख अच्छे रहते हैं ; जम्मू से निकलने वाली सुन्दर पत्रिका है ; वा० मू० ६), प० उषा कार्यालय, जम्मू (काश्मीर)

(१०) गौरव—१५ अगस्त १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री भगवानसिंह वर्मा 'विमल', सह० सं० श्री 'अशोक' बी. ए. ; सभी साहित्यांगों पर लेख रहते हैं, कहानियाँ अधिक रहती हैं ; 'बाल जगत' व 'महिला संसार' स्तम्भ भी हैं । नये लेखकों को लेकर 'गौरव' आगे बढ़ रहा है, यह अनुकूल ही है ; वा० मू० ४), प्रति ।=) ; प० राष्ट्रहितैषी कार्यालय, हाथरस (यू. पी.)

(११) चाँद—१९२३ से प्रकाशित ; सं० श्री नन्दगोपालसिंह सहगल; भूतपूर्व सम्पादकों में सर्वश्री नन्दकिशोर तिवारी, सत्यभक्त आदि उल्लेखनीय हैं ; श्रीमती महादेवी वर्मा के समय इस पत्र की नीति स्त्रियोपयोगी रही और बराबर उन्नति पर रहा ; 'फाँसी अङ्क', विशेषांक भी निकला ; 'मारवाड़ी अङ्क' के प्रकाशन के बाद इसकी लोकप्रियता को बड़ा धक्का पहुँचा; स्वामी चौखटानन्द शीर्षकान्तर्गत श्री जी. पी. श्रीवास्तव के लेख निकलते हैं ; हाल ही मे 'स्वतंत्रता अङ्क' तथा 'गांधी अङ्क' विशेषाङ्क प्रकाशित हुए हैं जो सुन्दर हैं; वा० मू० ६।।), प्रति ।।=) ; प० पोस्ट बेग नं० ३, इलाहाबाद ।

(१२) चेतना—१५ अगस्त १९४८ से प्रकाशित ; संचा० व सं. परमेश्वर श्री० बगड़का ; सांस्कृतिक व सामाजिक विषयों पर भी लेख रहते हैं, पुस्तकाकार प्रकाशित यह पत्रिका चेतनाप्रद सामग्री देती है ; लेखकों को

प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है ; ग्राहक संख्या २००० ; वा० मू० ४।।), प्रति ।=), प० १२४, गायवाड़ी, बम्बई २.

(१४) जीवन—नवम्बर १९४७ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री विष्णुकुमार शुक्ल, घनवारीलाल शर्मा, मधुसूदन वाजपेयी ; सुन्दर साहित्यिक सामग्री प्रदान करता है, 'बाल साहित्य' व 'नारी जगत' के स्तम्भों में भी रचनाएँ सुन्दर रहती हैं ; गेट अप, छपाई-सफाई आकर्षक ; वा० मू० ६), प्रति ।।=) ; प० ३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता ।

(१४) नयाजीवन*—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ; पत्र-पुस्तक रूप में प्रकाशित ; लेखों का चयन सुन्दर रहता है ; वा० मू० १०), प० विकास लिमिटेड, सहारनपुर ।

(१५) निराला—अगस्त १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री हरिशंकर शर्मा, सभी प्रसिद्ध लेखकों का सहयोग प्राप्त है, सम्पादकीय टिप्पणियाँ सजीव रहती हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।।), प० निराला प्रेस, आगरा ।

(१६) प्रवाह—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; संचा० श्री ब्रिजलाल वियाणी, सं० श्री गोविन्द व्यास ; इस सचित्र पत्र में सामाजिक, राजनैतिक आदि सभी प्रवृत्तियों पर समुचित प्रकाश डाला जाता है ; 'विचार प्रवाह' स्तम्भ में नई विचारधारा उद्धृत रहती है ; वा० मू० ६), प्रति ।।) ; प० राजस्थान प्रिंटिंग एण्ड लोथो वर्क्स लिमिटेड, आकोला (बरार)

(१७) भारती*—८ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्रीमती शान्ताकुमारी ; राष्ट्रभाषा हिन्दी की समर्थक ; लेखादि का चुनाव अच्छा रहता है ; काश्मीर की एक मात्र पत्रिका ; वहाँ के जन आन्दोलन की अग्रदूती ; वा० मू० ६) ; प० भारती प्रेस, जम्मू (काश्मीर)

(१८) मनोरंजन—अक्टूबर १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री चिरंजीत, प्रबन्ध सं० श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ; पत्र नामानुरूप मनोरंजक तो है ही, इसकी कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, लेख आदि सुरुचिपूर्ण, कलात्मक व ज्ञानवर्धक भी रहते हैं ; दोरंगी छपाई, चित्रों से अलंकृत, गेट अप भी

आकर्षक ; पत्र का भविष्य सुन्दर है ; वा० मू० ५॥), प्रति ॥), पृष्ठ ६२ ; प० श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली ।

(१९) मस्ताना जोगी—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; कई वर्षों से यह उर्दू में प्रकाशित हो रहा है, अब हिन्दी में भी निकला है ; सं० सर्वश्री सूफी लक्ष्मणप्रसाद, चेतनकुमार भटनागर ; कहानी व लेखों का चयन साधारणतः अच्छा रहता है ; पहाड़ी यात्रा सम्बन्धी लेख रहते हैं ; पत्र में सूफी धर्म की झलक भी मिलती है ; वा० मू० ६), प्रति ॥) ; प० कार्यालय हिन्दी मस्ताना जोगी, प० ७६, जी. बी. रोड, (फराशखाना) दिल्ली ।

(२०) माधुरी—अगस्त १९२१ से प्रकाशित ; संस्था० स्व० मुन्शी विष्णुनारायण भार्गव ; प्रारम्भ में सर्वश्री दुलारेलाल भार्गव, रूपनारायण पाण्डेय के सम्पादकत्व में निकली ; भूतपूर्व सम्पादकों में श्री प्रेमचन्द व श्री कृष्णबिहारी मिश्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है ; सन् १९०० के बाद हिन्दी पत्रकारिता में क्रांति आई और अपने जन्म से अब तक 'सरस्वती' के साथ इसने भी प्रमुख भाग लिया है ; लगभग पिछले १५ वर्षों से इसके सम्पादक श्री रूपनारायण पाण्डेय ही हैं ; स्वस्थ साहित्यिक सामग्री रहती है, यद्यपि अब पहले का स्तर नहीं ; प्रकाशन में भी २/३ मास पिछड़ी है । अन्य पत्रिकाओं की भांति कागज के अकाल में भी 'माधुरी' ने अपना कलेवर कभी क्षीण नहीं किया ; वा० मू० ७॥), प्रति ॥|) ; प० नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ ।

(२१) युगारम्भ—ज्येष्ठ २००४ से प्रकाशित ; सं० श्री व्यौहार राजेन्द्र-सिंह ; इसका उद्देश्य वाक्य है—'एक सदी का तत्त्वज्ञान, दूसरी में साधारण ज्ञान का स्वरूप पाता है—आवश्यक हैं विचार और चिंतन ।' पठनीय सामग्री रहती है ; वा० मू० ४), प्रति ।-) ; प० मानस-मन्दिर, जबलपुर ।

(२२) राष्ट्रवाणी—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री रामस्वरूप गर्ग ; आकर्षक आवरण से युक्त, पुस्तकाकार प्रकाशित इस सचित्र पत्रिका

में शिक्षा व साहित्य विषयक लेखों का चयन अच्छा रहता है; प्रत्येक अङ्क में किसी व्यक्ति का रेखाचित्र भी रहता है; राजस्थान से ऐसी सुन्दर पत्रिका का प्रकाशन गौरवपूर्ण है; वा० मू० ५), प्रति ||); प० श्री वाणी मन्दिर, अजमेर।

(२३) लहर—मार्च १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री जगदीश ललवाणी; सुन्दर साहित्यिक सामग्री से ओतप्रोत यह सचित्र पत्रिका उज्ज्वल भविष्य की द्योतक है; सिनेमा की आलोचना भी रहती है; दोरंगी छपाई, पुस्तकाकार प्रकाशित; प्रत्येक लेख पर पारिश्रमिक दिया जाता है; वा० मू० १०), प्रति १), पृष्ठ ८०; नवयुवक प्रेस, जोधपुर।

(२४) वसुन्धरा—फरवरी १६४८ से प्रकाशित; संस्था० श्री मनोहर-लाल राघवैद्य, सं० सर्वश्री रामेश्वर 'अरुण', लक्ष्मीकान्त 'मुक्त'; नवयुवक लेखकों को लेकर पत्रिका साहित्य-क्षेत्र मे अवतीर्ण हुई है; मानव जीवन को उच्च बनाना ही इसका ध्येय है; प्रथम अङ्क में लेखो का चयन उद्देश्यानुकूल ही है; वा० मू० १२), प्रति १); प० वसुन्धरा निकेतन, ८२८, धर्मपुरा, दिल्ली।

(२५) विश्वमित्र*—अप्रैल १६३२ से प्रकाशित; संचा० श्री मूलचन्द्र अग्रवाल, सं० श्री देवदत्त मिश्र, सह० सं० रघुनाथ पाण्डेय 'प्रदीप'; विशेषत' राजनैतिक और सामाजिक लेखों का बाहुल्य रहता है; लेखादि अच्छे रहते हैं यद्यपि पहले का स्तर नहीं; वा० मू० ६); प० ७४, धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

(२६) विशालभारत—जनवरी, १६२८ से प्रकाशित; 'प्रवासी' व 'माडर्न रिव्यू' के सम्पादक स्वर्गीय श्री रामानन्द चटर्जी द्वारा संस्थापित; इसके जन्म से लेकर १६३७ तक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी सम्पादक रहे और स्वर्गीय श्री व्रजमोहन वर्मा उनके सुयोग्य सहायक रहे; इन वर्षों को 'विशाल भारत' का स्वर्णकाल समझना चाहिए; प्रवासी भारतीयों के लिए इसका आन्दोलन सदैव स्मरणीय रहेगा। श्री चतुर्वेदीजी ने अनेक

आन्दोलनों द्वारा इसे बड़ा लोकप्रिय बनाया ; 'रवीन्द्र अङ्क', 'एण्ड्रूज अङ्क' 'पद्मसिंह शर्मा अङ्क', 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार अङ्क', 'कला अङ्क', राष्ट्रीय अंक' आदि विशेषाङ्क भी निकले हैं। सर्वश्री 'अज्ञेय' व मोहनसिंह सेंगर भी इसके सम्पादक रह चुके हैं ; विगत कई वर्षों से यह पुनः श्री श्रीराम शर्मा के सम्पादन में निकल रहा है ; इसने अपना स्तर कायम रखा है ; सम्पादकीय टिप्पणियाँ अत्यन्त मार्मिक रहती हैं; निष्पक्ष विचार प्रधान पत्र है ; विविध विषयों पर लेखादि रहते हैं, प्रत्येक अंक में आर्ट कागज पर छपा कलापूर्ण चित्र रहता है ; वा० मू० ६), प्रति ।॥) ; प० १२०/२ अपर सरक्यूलर रोड, कलकत्ता।

(२७) वीणा—१६२६ से प्रकाशित ; प्रारम्भ में श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' सम्पादक थे ; अनेक वर्षों तक आपने बड़ी योग्यतापूर्वक इसका सम्पादन किया ; उन दिनों इसकी गणना उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिकाओं में की जाती थी। अब कई वर्षों से प्रधान सं० श्री कमलाशंकर मिश्र है ; सं० श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय ; मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति (इन्दौर) की मुख-पत्रिका है ; कलेवर भी अब क्षीण और स्तर भी गिरा हुआ जान पड़ता है ; वा० मू० ४), प्रति ।=)॥ ; प० इन्दौर।

(२८) सरस्वती—१६०० में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की अनुमति से पाँच सम्पादकों द्वारा इसका प्रकाशन (इंडियन प्रेस, प्रयाग द्वारा) शुरू हुआ ; दूसरे वर्ष स्व० श्यामसुन्दरदासजी ही इसके सम्पादक रहे ; यह युगनिर्मात्री सबसे पुरानी मासिक पत्रिका है ; स्व० आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने १५ वर्षों तक (सन् १६०३–१८) इसका सफल सम्पादन किया। इसी पत्रिका द्वारा उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता में क्रांति ला दी; नए शीर्षक, नए समाचार देना तथा खड़ी बोली गद्य व पद्य का विकास उनके द्वारा हुआ ; इसी काल में अनेक नवीन लेखकों ने सिद्धहस्तता प्राप्त की ; द्विवेदीजी के सम्पादन काल में यह उन्नति के शिखर पर चढ़ी। उनके पश्चात कुछ काल श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने भी वही स्तर कायम रखा ; सर्वश्री देवीदत्त

शुक्ल, ठा० श्रीनाथसिंह व उमेशचन्द्र देव भी भूतपूर्व सम्पादक रह चुके हैं ; वर्तमान सं० सर्वश्री हरिकेशव घोप, उमेशचन्द्र मिश्र ; अब भी हिन्दी पत्रिकाओं में इसका उच्च स्तर माना जाता है ; विविध विषयक सामयिक समाचार अधिक रहते हैं ; 'विचार-विमर्ष', 'सामयिक साहित्य', 'नई पुस्तकें' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; वा० मू० ७।), प्रति ।।=) ; प० इलाहाबाद ।

(२९) हिमालय—जनवरी १९४७ से प्रकाशित ; प्रारम्भ में श्री 'दिनकर', रामवृक्ष बेनीपुरी तथा श्री शिवपूजनसहाय इसके सम्पादन मण्डल में रहे, पर तीसरे अङ्क से दूसरे वर्ष के प्रथम अङ्क तक श्री शिवपूजनसहाय के ही सम्पादन मे यह पत्र—पुस्तक के रूप में निकलता रहा । इसकी लोकप्रियता का श्रेय उन्हें ही जाता है । महत्वपूर्ण सामयिक समस्याएँ व पत्र-पत्रिकाओं की समुचित संयत आलोचना की जाती है ; दूसरे वर्ष में द्वितीय अङ्क से श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र इसके सम्पादक हैं ; इसी अङ्क से राजनीति विषयक लेखों को भी स्थान मिलने लगा है ; यद्यपि कलेवर क्षीण हो गया है । 'गांधी अङ्क' विशेषांक सुन्दर निकला है , इसका प्रकाशन हिन्दी साहित्य को एक अनुपम देन है ; आचार्य रामलोचनशरण (संस्था०) इसके लिए बधाई के पत्र हैं ; वा० मू० १०), प्रति १) ; प० पुस्तक भण्डार, हिमालय प्रेस, पटना ।

पाक्षिक

(३०) आशा—१५ जुलाई १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री तुलसी भाटिया 'सरल' ; लेखादि साधारणः अच्छे रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।) ; प० 'आशा' कार्यालय, करोलबाग, दिल्ली ।

(३१) प्रगतिशील—१५ नवम्बर से प्रकाशित; संस्था० श्री देवीनारायण मैणवाल, सं० श्री हरिनारायण मैणवाल ; विद्यार्थियों एवं साहित्यिकों का प्रिय पत्र है ; राजनीति विषयक लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।); पृष्ठ १२ ; मूल्य अधिक जान पड़ता है ; प० हरिमोहन इलेक्ट्रिक प्रेस, पुरानी बस्ती, जयपुर ।

(३२) बिजली*—कई वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री रामदयाल त्रिवेदी 'प्रवीण'; गाँवों और किसान समस्या पर भी लेख रहते हैं; प० पद्मा, हजारीबाग (बिहार)

साप्ताहिक

(३३) आगामी कल—७ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री प्रभागचन्द्र शर्मा; यह प्रति सोमवार को (जवाहरगंज) खण्डवा और इन्दौर (३६, महात्मा गाँधी रोड) से प्रकाशित होता है; जन्म से मासिक रूप में केवल खण्डवा से प्रकाशित होता था; १५ अगस्त ४७ से साप्ताहिक रूप मे निकल रहा है। मध्यभारत की खबरों के अतिरिक्त पठनीय साहित्यिक सामग्री भी रहती है; फलित ज्योतिष समाचार भी छपते हैं; वा० मू० ६), प्रति =) प० खण्डवा।

(३४) ऊषा—१६४३ से प्रकाशित; संचा० श्री राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल सं० श्री पन्नालाल महतो 'हृदय'; भूतपूर्व सम्पादक श्री शारदारंजन पाण्डेय व हंसकुमार तिवारी रहे; साहित्यिक सामग्री अच्छी रहती है; 'गया कॉलिंग' व्यंगपूर्ण शब्द चित्र का स्तम्भ है; इसका 'पत्रकार अङ्क' अच्छा निकला था; वा० मू० ५), प्रति =)॥; प० ऊषा कार्यालय, गया।

(३५) देशदूत—१६३६ से प्रकाशित; आरम्भ में श्री श्रीनाथसिंह के सम्पादकत्व में निकला; बाद से श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ही प्रधान सम्पादक हैं; हिन्दी के सचित्र साप्ताहिकों में शुरू से ही उल्लेखनीय रहा है; निर्मलजी ने पत्र को अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है। 'स्वास्थ्य और व्यायाम', 'मातृमण्डल', 'हमारा रंगमंच' 'सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ' 'हमारा साहित्य' आदि स्थायी स्तम्भ हैं और विशेषता यह है कि इन शीर्षकों के अन्तर्गत प्रति सप्ताह लेखादि छपते ही हैं; प्रति सप्ताह हास-परिहास स्तम्भ में 'श्री अघडदत्त शर्मा' की चुटकियाँ तथा 'सम्वाददाताओं की कलम से' पृष्ठ में देश के भिन्न-भिन्न भागों की खबरें भी पढ़ने को मिलती हैं; हिन्दी भाषा का समर्थक; अनेक विशेषांक भी निकाले; प्रत्येक अङ्क

साहित्यिक व राजनीतिक सामग्री से परिपूर्ण रहता है; वा० मू० ७॥), प्रति =); प० इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग।

(३६) नवयुग—१६३२ से प्रकाशित; सं० सर्वश्री इन्द्रनारायण गुर्टू; महावीर अधिकारी; श्री अवनीन्द्र विद्यालंकार भी भूतपूर्व सम्पादक रहे; हिन्दी का श्रेष्ठ सचित्र साप्ताहिक; चित्रों का बाहुल्य पत्र को खिला देता है, हर सप्ताह आवरण चित्र भी परिवर्तित रहता है तथा भारतीय चित्र कला के ढंग का होता है। जनरुचि के साहित्य की ओर विशेष ध्यान है; 'अध्यात्म के पथ पर' एक स्थायी स्तम्भ है; विज्ञापन भी बहुत रहते हैं; सम्पादकों के अनुसार एक मास में एक लाख पचास हजार प्रतियाँ बिकती हैं; लेखकों को पारिश्रमिक दिया जाता है; वा० मू० १२), प्रति ।) प० मोरी गेट, दिल्ली।

(३७) निराला—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० मण्डल में—सर्वश्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा, केदारनाथ भट्ट तथा हरिशंकर शर्मा हैं; प्रारम्भ में हास्य रसात्मक सामग्री देने का उद्देश्य लेकर कुछ अङ्क निकले थे पर अब विविध विषयक लेखादि रहते हैं; बीच में प्रकाशन स्थगित भी रहा था; वा० मू० ६), प्रति =); प० निराला प्रेस, आगरा।

(३८) प्रकाश*—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्री प्रताप साहित्यालंकार; वा० मू० ६॥); प० वैद्यनाथधाम (देवघर-बिहार)

(३९) राष्ट्रवाणी—१७ जून १६४८ से प्रकाशित; संस्था० स्वामी श्री चिदानन्द सरस्वती; सं० श्री एस. सी. आनन्द; समाचारों के अतिरिक्त श्रद्धानन्द शुद्धि सभा की विज्ञप्तियाँ भी रहती हैं; वा० मू० ८), प्रति ≡), पृष्ठ ८; पृष्ठ संख्या व सामग्री को देखते हुए मूल्य अधिक जान पड़ता है; प० आदित्य प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

(४०) लोकमत*—६ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति; स्थानीय समाचारों के अतिरिक्त साहित्यिक सामग्री भी रहती है; वा० मू० ६), प्रति =); लोकमत कार्यालय, नागपुर।

७. राजनैतिक

(क) कांग्रेसी व गांधीवादी : मासिक

(१) अमरज्योति*—हाल ही में प्रकाशित ; संचा० श्री हरिवंश मिश्र ; सं० सर्वश्री सूर्य वंश मिश्र, ललित श्रीवास्तव, राधेकृष्ण, भँवरलाल । बापू के आदर्शों पर इसका प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है ; प० अमर ज्योति कार्यालय, ११/३०६, सूटरगज, कानपुर ।

(२) जीवनसाहित्य—अगस्त १६४० से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री हरिभाऊ उपाध्याय, यशपाल जैन बी. ए., एल-एल. बी; अहिंसक नवरचना का पत्र ; पहले उच्च कोटि का साहित्यिक पत्र था, पर बीच मे गांधीजी के प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों का प्रतिपादन ही मुख्यत: करता था ; सांस्कृतिक व सामयिक विषयों पर भी लेख रहते हैं ; 'मधुकरी' स्तम्भ मे अन्य पत्रों से चयन सुन्दर रहता है ; प० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।

(३) बिहार कांग्रेस*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री श्यामसुन्दरदास; लेखादि सुन्दर रहते हैं ; वा० मू० ६) प० बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, सदाकत आश्रम, दीघा, पटना ।

(४) युगधारा*—जुलाई १६४७ से प्रकाशित ; संचा० श्री बलदेवप्रसाद; सं० सर्वश्री कमलापति त्रिपाठी, मुकुन्दीलाल, राजकुमार ; सामयिक समस्याओं और विशेषकर राजनैतिक तथा आर्थिक प्रश्नों का विवेचन करना ही मुख्य लक्ष्य है ; 'नववर्षाङ्क' विशेषाङ्क के रूप मे प्रकाशित हुआ , भविष्य उज्ज्वल है ; वा० मू० ५) ; प० संसार प्रेस, काशो ।

(५) लोक सेवक*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री बैजनाथ महोदय ; गांधीवादी नीति का समर्थक ; 'विन्ध्यवाणी' (टीकमगढ़) की निगाहों मे—"यह अत्यन्त ठोस व व्यावहारिक सामग्री से पूर्ण 'हरिजन सेवक' की

कोटि का पत्र है; प्रत्येक अङ्क सुविचारित एवं सात्विक लेखों से युक्त रहता है; प्रत्येक राष्ट्रसेवी तथा रचनात्मक कार्यकर्त्ता को इसका अवलोकन अनिवार्य रूप से करना चाहिए।" वा० मू० ६) ; प० इन्दौर।

(६) स्वयंसेवक*—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री नन्दकुमार देव वाशिष्ठ, स. वि. इनामदार, वि. म. हार्डीकर, लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', तथा रमेन्द्र वर्मा ; अ० भा० कांग्रेस सेवा दल का मुख-पत्र ; स्वयंसेवकों के कार्य की रिपोर्ट रहती है ; राष्ट्रीय सेवा के लिये युवक वर्ग को तैयार करना ही मुख्य उद्देश्य है, वा० मू० ६), प्रति ।|-) ; प० यु० प्रा० कांग्रेस कमेटी, बालाकदर रोड, लखनऊ।

पाक्षिक

(७) सेनानी*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री ओमप्रकाश ; तरुणों में अनुशासित, क्रियात्मक और उत्तरदायी नागरिकता की भावना पैदा करना ही मुख्य उद्देश्य, गांधीवादी नीति का पोषक ; प० सेनानी प्रेस, अलीगढ़ (यू० पी०)

साप्ताहिक

(८) उत्थान—१४ फरवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री मातादीन भगेरिया ; विशेष रूप से राजपूताना प्रान्त की खबरें रहती हैं ; लेखादि साधारण रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर।

(९) छत्तीसगढ़ केसरी—२६ जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री नन्दकुमार दानी, दीपचन्द डागा ; रायपुर जिला कांग्रेस कमेटी का मुख-पत्र ; वा० मू० ५), प्रति =) ; प० रायपुर (सी. पी.)

(१०) त्यागभूमि—हाल ही में प्रकाशित ; संचा० श्री हरिभाऊ उपाध्याय, सं० श्री सरस वियोगी ; नवनिर्माण की साप्ताहिक पत्रिका ; सन् १९२८ में भी इसी नाम से उपाध्याय जी द्वारा पत्रिका का संचालन

किया गया था जो कई वर्ष तक प्रकाशित होती रही, उसमें गांधीवादी विचारधारा को लेकर राजनैतिक लेख ही मुख्यतः रहते थे। वा० मू० ६), प्रति =) ; प० सस्ता साहित्य प्रेस, अजमेर।

(११) नयासंसार—१८ जून १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री सैयद कासिम अली साहित्यालंकार; महात्मा गांधी के सिद्धान्तों का प्रचार ही मुख उद्देश्य; स्थानीय खबरें मुख्य रूप से रहती हैं ; वा० मू० ३), प्रति –) ; नयासंसार कार्यालय, भोपाल।

(१२) रामराज्य—१९४२ से प्रकाशित ; स० सर्वश्री राघवेन्द्र, रामनाथगुप्त ; साहित्यिक व सांस्कृतिक लेखों का भी समावेश रहता है ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० आर्यनगर, कानपुर।

(१३) विजय—१७ वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० श्री शंकरदत्त शर्मा एम. एल. ए. ; सं० श्री सोम शर्मा, सह० सं० श्री शिवचन्द्र नागर ; भूतपूर्व सम्पादकों में श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ का नाम उल्लेखनीय है ; सरकारी प्रतिबंध के कारण कई बार प्रकाशन स्थगित ; १५ अगस्त ४७ से श्री विश्वम्भर 'मानव' के सम्पादन में पुनः प्रारम्भ हुआ ; स्थानीय समाचारों के अतिरिक्त लेख भी अच्छे निकलते हैं, मासिक संस्करण निकालने का भी आयोजन हो रहा है, ग्राहक संख्या २००० ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प०. मुरादाबाद।

(१४) विन्ध्यवाणी—११ अक्टूबर १९४८ से प्रकाशित ; संस्था० श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ; सं० श्री प्रेमनारायण खरे ; विन्ध्य-प्रदेश के समाचारों के अतिरिक्त साहित्यिक, सांस्कृतिक लेख भी रहते हैं ; कुछ समय पहले ६ वर्षों तक यहीं से श्री चतुर्वेदीजी के सम्पादन में 'मधुकर' निकलता था, आशा है उस कमी को पूरी करते हुए राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करेगी ; अन्य पत्रों से 'चयन' का स्तम्भ भी है ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० कुण्डेश्वर, टीकमगढ़।

(१५) हरिजन सेवक—१९३२ से प्रकाशित ; संस्था० महात्मा गांधीजो ;

सं० श्री किशोरलाल व० मश्रुवाला ; गांधीवादी प्रमुख पत्र ; सन् १९४२ में आन्दोलन के समय बन्द रहा ; प्रारम्भ में श्री वियोगी हरि इसके सम्पादक रहे। प्रतिबंध उठने पर श्री प्यारेलाल के सम्पादकत्व में निकला ; बापू के देहावसान पर कुछ समय प्रकाशन स्थगित रहा और मश्रुवालाजी के योग्य हाथों में सम्पादन सौंपा गया। पहले गांधीजी के ही लेख प्रमुख थे। इसके अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, गुजराती, मराठी संस्करण भी निकलते हैं ; स्तर अब भी कायम है ; भाषा हिन्दुस्तानी ; वा० मू० ६), प्रति ≈); नवजीवन मुद्रणालय, कालूपुर, अहमदाबाद।

(१६) हमारी बात—४ अक्टूबर १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री गोपीनाथ दीक्षित ; बापू की विचारधारा को जनता में प्रसारित करना व राष्ट्रनिर्माण का कार्य करना ही उद्देश्य है। छपाई-सफाई सुन्दर ; प्रति ।) ; प० 'हमारी बात' कार्यालय, लखनऊ।

अर्द्ध-साप्ताहिक

(१७) ग्राम संसार—१५ जून १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री कमलापति त्रिपाठी ; ग्रामोपयोगी लेखों के अतिरिक्त समाचार विशेष रूप से रहते हैं ; ग्रामों में बसने वालों के लिए विशेष उपयोगी है ; "बच्चों का संसार" पृष्ठ बच्चों के लिए, तथा "मिसिरजी की चिट्ठी" मनोरंजक बातों के लिए, उपयोगी स्थायी स्तम्भ हैं ; वा० मू० १०), प्रति –)॥ ; प० गायघाट, काशी।

(ख) समाजवादी : पाक्षिक

(१) मजदूर आवाज—४ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; संस्था० श्री जयप्रकाशनारायण; सं० श्री स्वामीनाथ, सह० सं० श्री बालचन्द्र 'मुजतर', दिल्ली प्रेस यूनियन का मुख-पत्र ; वा० मू० ३), प्रति ≈) ; प० 'मजदूर आवाज' कार्यालय, ओडियन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली।

साप्ताहिक

(२) अमरज्योति—३० अगस्त से प्रकाशित ; सं० नारायण चतुर्वेदी ;

लोकतंत्र की समस्या को लेकर अधिकतर लेख रहते हैं; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ १२; चौड़ा रास्ता, जयपुर।

(३) आदर्श—८ वर्ष से प्रकाशित; सचा० श्री अवधकिशोरसिंह; सं श्री विश्वनाथसिंह, सांस्कृतिक लेख भी रहते हैं; लेखों का चयन भी सुन्दर रहता है; वा० मू० ७), प्रति –), पृष्ठ २०; प० गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, १६८/१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

(४) जनता—१५ अगस्त १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री चिरंजीलाल अग्रवाल; प्रजातंत्र का पक्षपाती पत्र; वा० मू० ८), प्रति =), पृष्ठ १२, प० जनता कार्यालय, नाटानियों का रास्ता, जयपुर।

(५) जनता*—कई वर्ष से प्रकाशित; समाजवादी पार्टी का मुख-पत्र; श्री रामवृक्ष बेनीपुरी सम्पादक रहे। समाजवादी विचारधारा से सम्बद्ध ही लेखादि व कविताएँ रहती हैं; प० जनता कार्यालय, कदमकुआँ पटना।

(६) जयहिंद—२ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री हीरालाल जैन; सह० सं० श्री हीरालाल; वा० मू० ५), प्रति –); प० जयहिंद कार्यालय कोटा।

(७) नयायुग—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री योगेन्द्रदत्त शुक्ल; जनवादी विचारों का पोषक, राजनैतिक विषयों पर ही लेख रहते हैं, वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ १२; प० रेलवे रोड, फरुखाबाद (यू० पी०)

(८) नया हिन्दुस्तान—२ वर्ष से प्रकाशित; सं० सर्वश्री किशोरीरमण, ठाकुरप्रसाद, स्वामीनाथ; किसानो व जनता के हित से सम्बन्धित, राजनैतिक लेखों की प्रमुखता; वा० मू० ८), प्रति =)॥, पृष्ठ २६; प० नया हिन्दुस्तान प्रेस, जगतगंज, बनारस।

(९) निर्भीक—३१ जनवरी १६४८ से प्रकाशित; संस्था० वकील रामनारायण; सं० बाबूलाल 'इन्दु', सह० सं० श्री लक्ष्मीनारायण पटवारी; जनवादी पत्रिका; स्थानीय समाचार भी रहते हैं; वा० मू० ५), प्रति)॥, पृष्ठ ४, प० जैन प्रेस, कोटा।

(१०) प्रभात—१५ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० स्व० लाडलीनारायण गोयल; सं० बाबा नृसिंहदास, सह० सं० श्री सरस वियोगी; समाचारों के अतिरिक्त राजस्थान की राजनैतिक समस्याओं पर केन्द्रित लेख रहते हैं; विचार क्रांति का प्रतिपादक पत्र; प्रकाशन कई बार स्थगित भी हुआ; वा० मू० ६), प्रति =); प० प्रभात कार्यालय, मनोरंजन प्रेस, जयपुर।

(११) युगारम्भ—२६ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री निर्मल-कुमार सुराणा; रियासती हलचल के अन्तर्गत राजस्थान के समाचार भी छपते हैं; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ ८; प० युगारम्भ कार्यालय, चुरू (बीकानेर)

(१२) लोकमत*—हाल ही में प्रकाशित; सं श्री० अम्बालाल माथुर; जनता का प्रतिनिधित्व करने वाला पत्र; बीकानेर राज्य से इसका प्रकाशित करना साहस का ही कार्य है; वा० मू० ७), प्रति =); प० 'लोकमत' कार्यालय, बीकानेर।

(१३) वसुन्धरा—गत वर्ष से प्रकाशित; संस्था० श्री जनार्दनराय नागर; प्रथम सम्पादक श्री गिरिधारीलाल शर्मा रहे; बीच में कुछ समय अर्द्ध साप्ताहिक रूप में भी प्रकाशित; राजस्थान की जागीरदारी प्रथा की विरोधक; अन्य सामयिक विषयों पर भी लेख रहते हैं; वा० मू० ७), प्रति =)॥, पृष्ट १२; प० उदयपुर।

(१४) समाज—पहले 'आज' के नाम से जुलाई १९३८ से प्रकाशित; १८ जुलाई १९४६ (९ वें वर्ष के प्रारम्भ) से नाम बदल कर 'समाज' कर दिया गया; सं० श्री राजवल्लभसहाय; अर्थशास्त्र एवं राजनीति विषय की सभी धाराओं पर मननपूर्ण लेख रहते हैं; 'पाठकों के पत्र' शीर्षक में सभी विचारों के पत्र छपते हैं; 'सामयिक विचार' स्तम्भ में नेताओं के विचार और 'अवकाश के क्षणों में' स्तम्भ के अन्तर्गत नए नए विचार, समाचार एवं कभी चुटकियाँ रहती हैं; 'श्री संगम' द्वारा लिखित प्रति सप्ताह मीठी चुटकियाँ और व्यंग से परिपूर्ण एक लेख प्रारम्भ में पढ़ने

को मिलता है; देश-विदेश के संक्षिप्त समाचार तथा ज्योतिष का राशि फल भी प्रकाशित होता है। लेखकों को नियमित रूप से पारिश्रमिक देता है; वा० मू० १०), प्रति ।) ; प० सन्त कबीर रोड, काशी।

(१५) संघर्ष—६ वर्ष से प्रकाशित; सं० सर्वश्री आचार्य नरेन्द्रदेव; दामोदरस्वरूप सेठ, रमाकान्त शास्त्री; सोशलिस्ट पार्टी का मुख-पत्र; समाजवादी नेताओं के लेख ही विशेषतः छपते हैं, समाचार भी रहते हैं; वा० मू० ८), प्रति =), पृष्ठ १२; प० संघर्ष कार्यालय, लखनऊ।

अर्द्ध साप्ताहिक

(१६) जीवन*—६ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द; प्रारम्भ मे साप्ताहिक रूप से निकलता था, अब लगभग दो वर्ष से अर्द्ध साप्ताहिक हो गया है; इसका संचालन 'जीवन साहित्य ट्रस्ट' करता है; समाजवादी दृष्टिकोण को लेकर ही अधिकांश लेख रहते हैं, स्थानीय समाचार भी छपते हैं; प० जीवन प्रेस, लश्कर (ग्वालियर)

(ग) उग्र राष्ट्रीय मासिक

(१) विप्लव—अक्टूबर १९३८ से प्रकाशित; सं० श्री यशपाल; '३८ में प्रकाशित होकर सरकार द्वारा अधिक जमानत मांग लेने से जून १९४० में प्रकाशन स्थगित करके 'विप्लव ट्रेक्टों' का प्रकाशन किया गया परन्तु जून १९४१ में सरकारी प्रतिबन्ध के कारण वह भी बन्द हुआ; इसके प्रकाशन का ९ वाँ वर्ष चल रहा है; 'तुम करो शांति—समता प्रसार, विप्लव! गा अपना अनल गान!' यही पत्र का उद्देश्य छपता है; पहले इसका बहुत प्रचार था। राजनैतिक लेखों के अतिरिक्त साहित्यिक लेखादि भी रहते हैं; 'चक्कर क्लब', 'चाय की चुस्कियाँ' आदि स्थायी स्तम्भ हैं जिनमें व्यंग की मीठी चुटकियाँ रहती हैं; इसकी अपनी अलग आवाज है; वा० मू० ६), प्रति ।।) ; प० विप्लव कार्यालय, लखनऊ।

साप्ताहिक

(२) कल की दुनिया—२ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री गणेशचन्द्र जोशी; सह० सं० श्री जगदीश 'प्रभाकर'; साम्यवाद का परिपोषक, ज़ागीरदारों का कट्टर आलोचक पत्र; वा० मू० ६॥), प्रति ≈), पृष्ठ ८; प० ज़ोधपुर।

(३) जनयुग—१६४२ में 'लोकयुद्ध' के नाम से प्रकाशित; लगभग दो साल से इसका नाम बदल लिया गया; सं० श्री बी. एम. कौल; श्री पूरनचन्द जोशी पहले इसके सम्पादक रहे; हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी का मुख-पत्र, यद्यपि अपने पक्ष के समाचार जरा अतिशयोक्तिपूर्ण रहते हैं सम्पादन व प्रकाशन का ढंग प्रशंसनीय है, वा० मू० ६), प्रति ≈); प० जनयुग कार्यालय, राजभवन, सैण्डहर्स्ट रोड, बम्बई।

(घ) अग्रगामी : साप्ताहिक

(१) अभ्युदय*—१६०७ में महामना मालवीयजी के संरक्षण में प्रकाशित, प्रारम्भ में श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन सम्पादक रहे; पहले यह कांग्रेस की नरम दल नीति का पक्षपाती था; बीच में प्रकाशन कई बार स्थगित भी हुआ। श्री० कृष्णकान्त मालवीय के सम्पादन में इसने बहुत उन्नति की; इसने नेताजी (श्री सुभाषचन्द्र बोस) के जीवन, मिशन और आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में कई विशेषाङ्क प्रकाशित किए। राजनैतिक लेखों के साथ साहित्यिक लेख भी रहते हैं; प० अभ्युदय प्रेस, प्रयाग।

अर्द्ध साप्ताहिक

(२) संग्राम—इसी वर्ष से प्रकाशित, संचा० व सं० श्री विश्वम्भरदयालु त्रिपाठी; सह० सं० श्री प्रभुदयाल शुक्ल, लेखादि साधारण रहते हैं; स्थानीय समाचार भी छपते हैं, वा० मू० १२), प्रति ≈), पृष्ठ १२; प० शुक्ल प्रेस, उन्नाव (यू० पी०)।

(ङ) हिन्दू राष्ट्रवादी : मासिक

(१) श्रद्धानन्द*—१८ वर्ष से प्रकाशित; हिन्दू हितों का समर्थक; सामाजिक लेख भी रहते हैं; वा० मू० ५), असमर्थ नए ग्राहकों से ३); प० 'श्रद्धानन्द' कार्यालय, दिल्ली।

साप्ताहिक

(२) अरुणोदय—१९३५ से प्रकाशित; सं० श्री आदित्यकुमार वाजपेयी; हिन्दू महासभाई नीति का समर्थक; सरकारी नीति का आलोचक; बीच में प्रतिबंध लग जाने से प्रकाशन कई बार स्थगित; वा० मू० ६॥), प्रति ≈); प० हिन्दू राष्ट्र पब्लिकेशन्स, इटावा, (यू० पी०)

(३) आकाशवाणी*—सात वर्ष से प्रकाशित; १९२२ मे संस्था० स्व० भाई परमानन्द; प्रधान सं० श्री धर्मवीर एम. ए., मं० श्री विद्यारत्न 'धीर'; प० 'आकाशवाणी' कार्यालय, गोपालनगर, जालंधर (पूर्वी पंजाब)

(४) एकता—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्रीप्रह्लाददास कोकानी; राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ का पक्षपाती पत्र; वा० मू० ६), प्रति ≡); प० 'एकता' कार्यालय, ढाबा रोड, उज्जैन।

(५) चेतना—आश्विन कृष्णा ८, रविवार, सं० २००५ से प्रकाशित; सं० श्री राजारस द्रविड़, हिन्दू राष्ट्रवाद का समर्थक; सांस्कृतिक लेख भी रहते हैं; वा० मू० १०), प्रति ≡); पृष्ठ १६; प० चेतना कार्यालय, आस भैरव, काशी।

(६) पाञ्चजन्य—हाल ही मे प्रकाशित; सं० श्री राजीवलोचन अग्निहोत्री; हिन्दू राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ की नीति का पक्षपाती; 'लोक-वाणी' शीर्षक से पाठकों के पत्र प्रकाशित होते हैं; वा० मू० १०), प्रति ≡); पृष्ठ १६; प्र० पाञ्चजन्य कार्यालय, सदर बाजार, लखनऊ।

(७) युगधर्म—२५ जुलाई १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री कौशलराय; 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान' का कट्टर समर्थक; वा० मू० ६), प्रति ≡); बाकर रोड, नागपुर।

(८) शंखनाद—५ नवम्बर १६४७ से प्रकाशित ; सं० श्री नथमल शर्मा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का हिमायती ; 'भंग की तरंग' शीर्षक में व्यंग्य अच्छे रहते हैं ; प्रतिबंध के कारण कुछ समय के लिए प्रकाशन स्थगित भी हुआ ; वा० मू० ६॥), प्रति =) ; प० फैन्सी बाजार, गोहाटी (आसाम)

(६) हिन्दू—४ दिसम्बर १६३५ से प्रकाशित ; प्रारम्भ से ही सं० ठा० हरिश्चन्द्रसिंह भाटी; सह० सं० ऋषिगोपाल शास्त्री 'स्वतन्त्र' ; हिन्दुओं और विशेषतः क्षत्रिय जाति का संगठन ही इसका मन्तव्य है ; वा० मू० ५), प्रति =), प० हरद्वार।

(च) किसान व मज़दूर : साप्ताहिक

(१) किसान*—गत वर्ष से प्रकाशित, सं० सर्वश्री राजाराम शास्त्री, कृष्णबिहारी अवस्थी, कमलदेव शर्मा ; वा० मू० ६), प० कानपुर।

(२) किसान संदेश—२ वर्ष से प्रकाशित, सं० श्री शिवदयाल राजावत; वा० मू० ५), प्रति –)॥ ; प० कोटा।

(३) पंचायती राज*—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री विश्वम्भर-सहाय 'प्रेमी' ; मज़दूर और किसानों की समस्याओं को लेकर लेख प्रकाशित होते हैं ; राष्ट्र के समाज सम्बन्धी कार्यों का विशेष विवरण प्रकाशित होता है ; वा० मू० ६), प्रति =), प० मेरठ।

(४) लोकसुधार—२४ अक्टूबर १६४७ से प्रकाशित ; संचा. तथा संस्था- चौ० बलदेवराम मिरदा (आपने उच्च सरकारी पदों को त्यागकर पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया है तथा राजपूताने में किसानों का यह एक मात्र प्रतिनिधि पत्र चालू किया) . सं० कुँ० रामकिशोर, प्रारम्भ में श्री यशोराज शास्त्री के सम्पादन में निकला; गाँवों में बसने वाले किसानों व दूसरी जातियों में राजनैतिक चेतना का अग्रदूत ; किसानों और जागीरदारों के प्रश्न को लेकर प्रत्येक अंक में लेख रहते हैं ; वा० मू० ५) प्रति –)।, प० चोपासनीरोड, जोधपुर।

(छ) सरकारी पत्र : मासिक

(१) आजकल—मई १९४५ में श्री अनन्त मराल शास्त्री के सम्पादकत्व में प्रकाशित, वर्तमान सं० श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, सह० सं० सर्वश्री करुणाशंकर पण्ड्या, केशवगोपाल निगम; सचित्र रूप से आर्ट पेपर पर प्रकाशित; यह पत्र सरकारी होते हुए भी साहित्यिक सामग्री, विशेषकर कलात्मक लेखों से भरपूर रहता है; 'नई पुस्तकें', 'देश विदेश', 'चिट्ठी पत्री' 'चयनिका' आदि विशेष स्तम्भ हैं। प्रसिद्ध विद्वानो द्वारा लिखे लेख रहते हैं; प्रारम्भ में ही लेखकों का परिचय भी रहता है, इसके 'नववर्षांक' तथा 'गांधी अंक' विशेषांक सुन्दर निकले हैं। इसमें विज्ञापन नहीं लिये जाते, कम मूल्य में उत्कृष्ट सामग्री प्रस्तुत करना इसकी विशेषता है, वा० मू० ६), प्रति ।।), पृष्ट ४८, प० प्रकाशन विभाग, ऑल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली।

(२) नयायुग*—हाल ही में प्रकाशित, सं० श्री अनन्तप्रसाद विद्यार्थी किसानो को खेती, सहकारिता, शिक्षा, स्वास्थ्य, आदि विषयों की जानकारी देने वाला यह सचित्र मासिक है; कई वर्ष पूर्व एक पत्र 'हल' सरकार द्वारा निकला था, वैसा ही यह पत्र भी कहा जा सकता है; प० सूचना विभाग, संयुक्तप्रान्त सरकार, लखनऊ।

(३) बिहार—नवम्बर १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री नन्दकिशोर तिवारी; आर्ट कागज पर मुद्रित यह बिहार सरकार का मुख-पत्र है, प्रान्त की आर्थिक, राजनैतिक, औद्योगिक व कृषि सम्बन्धी प्रवृत्तियो पर प्रकाश डालता है; तिवारीजी के सुयोग्य हाथों में यह पत्र सुन्दरतापूर्वक सम्पादित हो रहा है। २००० प्रतियाँ छपती हैं; वा० मू० ५), प० प्रकाशन विभाग, बिहार सरकार, पटना।

(४) विश्वदर्शन—अगस्त १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार; आर्ट कागज पर मुद्रित, यह सचित्र पत्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से परिचित कराता है; अंतर्राष्ट्रीय व्यंग चित्रों के अतिरिक्त सामाजिक लेख

भी रहते हैं; कम मूल्य में बहुत उपयोगी सामग्री दे रहा; शीघ्र ही मासिकों में इसका ऊँचा स्थान बन जायगा; वा० मू० ६), प्रति ।।), पृष्ठ ४८; प० पब्लिकेशन डिविजन, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली।

पाक्षिक

(५) प्रकाश—१६ वर्ष से प्रकाशित; सं० ठा० अर्जुनसिंह; यह रीवाँ राज्य का मुख्य पत्र है; विन्ध्य-प्रदेश की खबरें ही मुख्यत: रहती हैं; सरकारी विज्ञप्तियाँ व अन्य विज्ञापन भी काफी रहते हैं; कभी-कभी साहित्यिक लेख भी निकलते हैं; विजयादशमी के अवसर पर प्रति वर्ष इसने उपयोगी विशेषांक निकाले हैं; 'विधानाङ्क' भी अच्छा निकला था; हाल ही में 'विन्ध्यप्रदेश अङ्क' विशेषांक प्रकाशित हुआ है जो सुन्दर है; वा० मू० ३), राजाओं से ११), प्रति -)।; प० रीवाँ (स्टेट)

(६) प्रकाश—गांधी जयंती, २ अक्टूबर १६४८ से प्रकाशित; प्रधान सं० श्री डा० रामकुमार वर्मा, सह० स० सर्वश्री इन्द्रबहादुर खरे, जीवन नायक, मु० प० भीसीकर, शरत्चन्द्र मुक्तिबोध; आर्ट कागज पर छपा, मध्यप्रान्त और बरार सरकार के समाज-शिक्षा विभाग का सचित्र पत्र है; ग्रामोन्नति और समाज का नवनिर्माण ही ध्येय है, लेखादि अच्छे हैं; वा० मू० ८), प्रति ।=); प्रकाशक—डा० वेणीशंकर झा, संचा० शिक्षा-विभाग, मध्यप्रान्त और बरार, नागपुर।

(७) प्रदीप—१५ मई १६४८ से प्रकाशित; प्रधान सं० श्री वीरेन्द्र; सं० सर्वश्री एल० आर० नायर, रजनी नायर; आर्ट कागज पर छपा यह सचित्र पत्र प्रति पक्ष पंजाब की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालता है; शरणार्थियों के समाचारों के अतिरिक्त साहित्यिक लेख भी निकलते हैं; उच्च लेखकों का सहयोग प्राप्त है, प्रत्येक लेख पर पारिश्रमिक भी दिया जाता है। स्वाधीनता अङ्क सुन्दर निकला है; वा० मू० ४।।), प्रति =); प० डाइरेक्टर पब्लिसिटी, पूर्वी पंजाब, शिमला।

(८) भारतीय समाचार—१ मई १९४० से प्रकाशित; सं० श्री सोमेश्वरदयाल, ए० एस० आयंगर; प्रतिमास १ और १५ तारीख को नियमित रूप से निकलता है; इसका उद्देश्य भारत सरकार के प्रधान कार्यों का सारांश सुविधाजनक रूप में उपस्थित करना है; इसमें बाहर के लेख नहीं छपते; पत्र निःशुल्क निकलता है किन्तु निकट भविष्य मे ही यह केवल मूल्य पर ही मिल सकेगा; इसका अंग्रेजी संस्करण भी निकलता है; प० प्रिंसिपल इन्फार्मेशन आफिसर, प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो, रायसीनारोड़, नई दिल्ली।

(९) विजय—४ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव; दतिया राज्य के प्रकाशन विभाग द्वारा निकलता है; ग्राम व नगर में आर्थिक व सांस्कृतिक प्रचार ही उद्देश्य है; वा० मू० २), प्रति =)॥; प० गोविन्द स्टेट प्रेस, दतिया।

(१०) संयुक्तप्रान्तीय समाचार—२ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री जगमोहन मिश्र; प्रान्त की विभिन्न प्रगतियों पर प्रकाश डालते हुए सूचना देता है; 'स्वतंत्रता दिवस अङ्क' सुन्दर निकला है; निःशुल्क प्रकाशित; प० प्रकाशन विभाग, संयुक्तप्रान्तीय सरकार, लखनऊ।

साप्ताहिक

(६१) सूचना—२७ मार्च १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री मगनलाल दिनेश; भोपाल राज्य का हिन्दी में प्रकाशित-पत्र; स्थानीय समाचार रहते हैं; पत्र लीथो प्रेस में छपता है; वा० मू० ५), प्रति –)॥; प० पब्लिक इन्फार्मेशन प्रेस, भोपाल।

(ज) राष्ट्रीय पत्र : मासिक

(१) जनसेवक—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री उदयनारायण शुक्ल; राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र एकता का पत्र; स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिकों का परिचय, शरणार्थी समस्या आदि पर लेख रहते हैं; 'बालपरिवार', 'देश विदेश' स्तम्भ भी हैं; वा० मू० ४॥), प्रति ।=); जनसेवक कार्यालय, मेरठ।

साप्ताहिक

(२) अलवर पत्रिका—५ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री मोदी कुँजबिहारीलाल गुप्त; मत्स्यराज्य की राष्ट्रीय पत्रिका; स्थानीय समाचार भी रहते हैं; वा० मू० ५), प्रति =); प० अलवर प्रेस, अलवर।

(३) आलोक—श्रावण कृष्णा १४, सं० २००४ से प्रकाशित; सं० सर्वश्री हरिनारायण शर्मा, ताराचन्द यादव; वा० मू० ६), प्रति =); पृष्ठ संख्या कम रहती है; प० सीताबर्डी, नागपुर।

(४) कर्मभूमि—१६ फरवरी १६३६ से प्रकाशित; प्रारम्भ में श्री भक्तदर्शन, तथा श्री भैरवदीन धुलिया सम्पादक रहे; वर्तमान सं० सर्वश्री भक्तदर्शन, ललिताप्रसाद नैथाणी, भैरवदीन धुलिया; गढ़वाल के समाचार ही मुख्यतः रहते हैं; १६४२ मे देशव्यापी आन्दोलन के कारण प्रकाशन स्थगित रहा; वा० मू० ५); प्रति =); प० कर्मभूमि कार्यालय, लैण्डसडौन (गढ़वाल-यू. पी.)

(५) कर्मवीर—१६२६ से प्रकाशित; इसके पूर्व भी १६१६ से प्रारम्भ होकर कई वर्ष तक जबलपुर से निकलता था; पुन खण्डवा से स्व० श्री विष्णुदत्त शुक्ल तथा स्व० श्री माधवराव सप्रे की स्मृति में प्रकाशित; प्रारम्भ से ही सं० श्री माखनलाल चतुर्वेदी; आज यद्यपि इसका स्तर गिरा है; लेकिन देश के राष्ट्रीय संग्राम मे इसका बहुत हाथ रहा है; मध्यप्रान्त के समाचार भी विशेषतः इसी से मिलते है; टिप्पणियाँ जोरदार रहती हैं; वा० मू० ५), प्रति =); प० कर्मवीर प्रेस, खण्डवा (सी. पी.)

(६) नवभारत—३ जनवरी १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री परशुराम नौटियाल; सर्वतोमुखी विकास, प्रगति का परिचायक सचित्र साप्ताहिक; 'नारी जगत', 'पिछला सप्ताह', 'हास परिहास' आदि स्थायी स्तम्भ हैं; लेखादि का चयन, गेटअप व छपाई सुन्दर; वा० मू० ८), प्रति =); सं० कार्यालय-पो० बॉ० ६६०७, शान्ताक्रूज, बम्बई २३; प० ३८, प्रोस्पेक्ट चेम्बर्स, होर्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई।

(७) नवराष्ट्र—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्री शिवकुमार शर्मा, सह० सं० श्री मुरारीसिंह ; स्थानीय खबरों के अतिरिक्त सामान्य साहित्यिक लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० बिजनौर (यू० पी०)

(८) नवशक्ति—१६३४ में श्री देवव्रत शास्त्री के सम्पादकत्व में प्रकाशित ; वर्तमान सं० श्री युगलकिशोर सिंह ; 'अन्तर्राष्ट्रीय घटना चक्र' और नारी जगत स्थायी स्तम्भ हैं ; सामग्री का संकलन अच्छा रहता है ; प्रमुख साप्ताहिकों मे एक , वा० मू० ७), प्रति =)॥ , पृष्ठ २० ; प० नवशक्ति प्रेस, पटना ।

(६) नयाराजस्थान—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रामनारायण चौधरी, 'राजपूताने का घटना चक्र' स्थायी स्तम्भ है ; सम्पादकीय टिप्पणियाँ महत्त्वपूर्ण रहती हैं ; प० अजमेर ।

(१०) नवज्योति*—कई वर्ष से प्रकाशित , सं० श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी, राजपूताने के समाचारों के अतिरिक्त कई लेख अच्छे भी रहते हैं ; प० केशरगंज, पो० बॉ० ७२, अजमेर ।

(११) नवजीवन–१६३६ से प्रकाशित ; सं० श्री कनक मधुकर ; दिसम्बर १६३५ से पहले इसका प्रकाशन अजमेर से हुआ था ; सामग्री साधारणतः सुन्दर रहती है ; वा० मू० ५), प्रति =) ; प० उदयपुर ।

(१२) नवयुग संदेश*—अक्टूबर १६४५ में श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी के सम्पादन मे निकला ; १६४७ में कुछ समय प्रकाशन बन्द रहा ; वर्तमान सं० श्री सांवलप्रसाद चतुर्वेदी ; सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र ; भरतपुर राज्य में जन-आन्दोलन जाग्रत करने मे प्रमुख भाग लिया ; प० भरतपुर ।

(१३) प्रजामित्र—२ वर्ष से प्रकाशित ; स० श्री तारानाथ रावल, बीकानेर से प्रकाशित होने वाला यह सर्व प्रथम राजनैतिक पत्र है । प्रेस की सुविधा न रहने से पत्र जयपुर में छपता है, अतः 'प्रकाशन अनियमित' । यह पत्र पर भी लिखा रहता है ; सम्पादकीय टिप्पणियाँ जोरदार रहती हैं ; वा० मू० ५), प्रति =), पृष्ठ २५ ; प० बीकानेर ।

(१४) प्रजापुकार*–१९४६ से प्रकाशित ; संस्था० श्री त्र्य० दा० पुस्तके; सं० सर्वश्री त्र्यम्बक सदाशिव गोखले, श्यामलाल पाण्डवीय, ग्वालियर से प्रकाशित निर्भीक राष्ट्रीय पत्र ; साहित्यिक लेख भी रहते हैं ; प० लश्कर (गवालियर)

(१५) प्रजासेवक*—७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा ; जोधपुर में जन जाग्रति का अधिकांश श्रेय इसी पत्र को है, 'गांधी जयन्ती विशेषांक', 'युद्ध विशेषाङ्क', 'आजाद हिन्द अङ्क', 'देशी राज्य अङ्क' आदि कई विशेषाङ्क उल्लेखनीय निकले, प० जोधपुर।

(१६) प्रताप*—१९१३ से प्रकाशित, संस्था० स्व० श्री गणेशशंकर विद्यार्थी, विद्यार्थीजी के समय में प्रमुख साप्ताहिक रहा ; देश के राजनैतिक आन्दोलन को प्रगति देने मे काफी हिस्सा लिया, सामयिक समस्याओं के अतिरिक्त साहित्यिक लेख भी रहते हैं, स्थानापन्न सं० सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य प० प्रताप प्रेस, कानपुर।

(१७) महाकौशल—२ वर्ष से प्रकाशित, प्रधान सं० श्री अंबिका-चरण शुक्ल, सं० श्री स्वराजप्रसाद द्विवेदी, 'लोकवाणी' स्तम्भ भी है ; महाकौशल प्रान्त की खबरों के अतिरिक्त साहित्यिक सामग्री भी रहती है ; वा० मू० ५) प्रति =), प० महाकौशल प्रेस, रायपुर (सी० पी०)

(१८) युगान्तर*—१९४१ से प्रकाशित ; सं० श्री रामकुमार शुक्ल ; प्रारम्भ में श्री वीरभारतीसिंह इसके सम्पादक रहे ; राष्ट्र निर्माण अङ्क आदि कई विशेषाङ्क निकले ; स्थानीय खबरें भी रहती हैं, टिप्पणियाँ मार्मिक छपती हैं ; प० गांधी नगर, कानपुर।

(१९) योगी*—१९३३ से प्रकाशित ; आरम्भ से ही श्री व्रजशंकर प्रधान सं० रहे ; आज के प्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिकों मे इसकी गणना की जाती है, टिप्पणियाँ बड़ी मार्मिक और सामयिक होती हैं ; राष्ट्र की सच्ची सेवा कर रहा है, वा० मू० ६), प० योगी प्रेस, पटना।

(२०) राष्ट्रपताका—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री मदनलाल काबरा ;

आर्थिक, सामाजिक विषय पर भी लेख छपते हैं, वा० मू० ६), प्रति ≡), प० राष्ट्रपताका कार्यालय, जोधपुर।

(२१) लोकवाणी—११ फरवरी १६४२ से स्व० श्री जमनालाल बजाज की स्मृति में प्रकाशित ; कई वर्षों से सं० श्री पूर्णचन्द्र जैन ; सर्वश्री राजेन्द्र-शंकर भट्ट व शिवबिहारी तिवाड़ी भूतपूर्व सम्पादक रह चुके हैं ; 'जमनालाल बजाज अङ्क,' व 'राजस्थान निर्माण अङ्क' आदि विशेषाङ्क निकले। गांधी-वादी नीति का कट्टर समर्थक ; लेखों का चयन सुन्दर रहता है, 'बाल भारत' स्तम्भ भी है ; पिछले चार मास से अब यह दैनिक लोकवाणी के साथ भी ग्राहकों को मिलता है ; वा० मू० ४) ; प० युगान्तर प्रेस, जयपुर।

(२२) वीर अर्जुन—१६३४ से प्रकाशित, १६४२ मे सरकारी प्रतिबंध के कारण बंद होगया, तत्पश्चात १६४५ से प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हुआ ; सं० श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, सह० सं० क्षितीशकुमार वेदालंकार ; इसके संचा० पहले श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति थे, बाद में ७ मई १६४० को श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स, लिमिटेड कम्पनी की स्थापना पर संचालन उसी के पास चलागया ; 'आधी दुनियां' नारी समस्या और 'गाण्डीव के तीर' व्यंग्य विषयक लेखों के स्तम्भ हैं ; यह स्वतन्त्र विचार प्रधान सचित्र साप्ताहिक है ; आर्य समाज की ओर झुकाव है ; राष्ट्रभाषा हिन्दी का समर्थक, धारा-वाहिक उपन्यास भी प्रकाशित ; पहेली भी रहती है ; उत्कृष्ट साप्ताहिकों में इसकी गणना है ; 'रजत जयन्ती अङ्क' भी प्रकाशित हुआ, अन्य कई विशेषांक भी निकले, वा० मू० ८), प्रति =) ; प० श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

(२३) शक्ति—२६ वर्ष से प्रकाशित ; १६१४ विजयादशमी को प्रथम अङ्क प्रकाशित हुआ ; प्रारम्भ में सं० श्री बद्रीदत्त पाण्डे रहे ; संरक्षक श्री गोविन्दवल्लभ पंत ; वर्तमान सं० श्री पूर्णचन्द्र तिवारी ; १६४२ से १६४६ तक पत्र (कार्यकर्ताओं के जेल में रहने के कारण) का प्रकाशन स्थगित रहा ; स्थानीय खबरें अधिक रहती हैं ; वा० मू० ६), प्रति =) प० देशभक्त प्रेस, लिमिटेड, अलमोड़ा (यू० पी०)

(२४) स्वतन्त्र भारत—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री कृपादयाल ; अलवर कांग्रेस कमेटी द्वारा संचालित , मत्स्यप्रदेश का प्रमुख राष्ट्रीय ; वा० मू० ६), प्रति =) प० अलवर।

(२५) स्वराज्य*—१६३१ से प्रकाशित ; संस्था० स्व० सिद्धनाथ माधव आगरकर ; श्री आगरकरजी के समय मे प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक रहा ; आज कल उनके सुपुत्र श्री यशवंत आगरकर संपादन कर रहे हैं ; इसमें छपाई काका कालेलकर द्वारा आविष्कृत वर्ण-लिपि से होती है, (इसका मराठी संस्करण भी निकलता है) स्थानीय खबरें ही प्रमुख रहती हैं ; प० स्वराज्य प्रेस, खण्डवा (सी० पी०)

(२६) सैनिक—२४ वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० तथा आदि सम्पादक श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल , वर्तमान सं० श्री शान्तिप्रसाद पाठक ; देश के राष्ट्रीय संग्राम में इसने बहुत योग दिया है ; प्रतिबंध लग जाने से कई बार प्रकाशन स्थगित भी हुआ , 'बालसाहित्य', 'सप्ताह की डायरी', 'संवाद-दाताओं की कलम से' आदि स्थायी स्तम्भ है ; स्तर अभी तक कायम रक्खा है , श्री पालीवालजी की टिप्पणियाँ बहुत महत्वपूर्ण होती थीं ; इसकी लोक-प्रियता उत्कृष्टता का प्रमाण है , वा० मू० ८), प्रति =) ,पृष्ठ २०, प० सैनिक प्रेस, आगरा।

(२७) संगम—हाल ही मे प्रकाशित , सं० श्री इलाचन्द्र जोशी ; साप्ताहिक समाचार, नारी निष्क्रमण, पुस्तक परिचय आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; उच्च कोटि के लेख, कहानी आदि हर अंक मे पढ़ने को मिलते हैं ; इस सचित्र साप्ताहिक ने अल्पकाल मे ही अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है ; सुयोग्य हाथो मे पत्र का सम्पादन एक विशेषता लिए रहता है। वा० मू० १२), प्रति ।), पृष्ठ ४० ; प० लीडर प्रेस, प्रयाग।

(२८) संसार—१६४३ मे श्री बाबूराव विष्णु पराडकर द्वारा संस्थापित ; सं० सर्वश्री कमलापति त्रिपाठी, काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', कांग्रेसी नीति का समर्थक यह पत्र साप्ताहिकों में प्रमुख स्थान रखता है ;

'एक साहित्यिक आवारा' द्वारा लिखित छेड़छाड़ में अच्छी चुटकियाँ रहती है, श्री 'बेधड़क बनारसी' निधड़क प्रति सप्ताह ही लिखते हैं; साप्ताहिक राशि फल भी निकलता है, सामयिक समस्याओं पर लेख अच्छे रहते हैं; टिप्पणियाँ भी प्रभावपूर्ण होती हैं। इसके 'क्रांति अङ्क', 'जेल अङ्क', 'हैदराबाद अङ्क' आदि विशेषाङ्क साहित्य की स्थायी निधि हैं। वा० मू० ८), प्रति =)॥, प० संसार प्रेस, काशी।

(२९) हुंकार*—१९४३ से प्रकाशित; सं० श्री यमुना कार्यी; पहले यह किसान सभा का पत्र था; श्री स्वामी सहजानन्दजी ने 'लोक संग्रह' बन्द होने पर इसकी स्थापना की थी; बिहार प्रान्त का प्रमुख साप्ताहिक; प्रान्त की खबरों के अतिरिक्त राजनैतिक व साहित्यिक लेख भी प्रचुर मात्रा में रहते हैं; कम मूल्य में ही उपयोगी सामग्री देता है, समय पर निकलना इसकी विशेषता है; राष्ट्रीय आन्दोलन में काफी योग दिया; वा० मू० ५), प्रति =); हुंकार, प्रेस, बांकीपुर, पटना।

अर्द्ध साप्ताहिक

(३०) शुभचिंतक—विजयादशमी सन् १९३७ से प्रकाशित; स्व० श्री शंकरलाल की स्मृति में प्रकाशित; संचा० श्री बालगोविन्द गुप्त; सं० श्री नर्मदाप्रसाद खरे; प्रारम्भ में तीन वर्ष तक श्री मंगलप्रसाद विश्वकर्मा ने सम्पादन किया, पहले साप्ताहिक था, अब लगभग ५–६ वर्षों से अर्द्ध साप्ताहिक बन गया है; 'जबलपुर की खबरें', 'नवीन प्रकाशन' स्थायी स्तम्भ हैं; मध्यप्रान्तीय राजनैतिक हलचलों का संदेशवाहक प्रमुख-पत्र; पठनीय साहित्यिक सामग्री भी रहती है; साप्ताहिक राशि फल भी निकलता है; वा० मू० ५), प्रति –)॥; प० शुभचिंतक प्रेस, जबलपुर।

(भ) सामान्य : मासिक

(१) कन्नौज समाचार—१० वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री अनीसुल रहमान; एक-आध लेख के अतिरिक्त सारा पत्र बेनीराम मूलचन्द इत्र बचने वाले के विज्ञापनों से भरा रहता है; यह उन्हीं के द्वारा प्रकाशित भी होता

है ; इस प्रकार के पत्रों से देश को कोई लाभ नहीं, यद्यपि पत्र पर 'प्रगतिशील राष्ट्रीय मासिक' अंकित रहता है ; वा० मू० १।।), प्रति =), प० कन्नौज (यू० पी०)

(२) कमल—३ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री चन्द्रशेखर शर्मा ; सह० सं० श्री कृष्णचन्द्र मुद्गल ; कुछ अच्छे लेखों के अतिरिक्त सिनेमा संबंधी चित्र व समाचार ही मुख्य रहते हैं। वा० मू० ६), प्रति ।।) ; प० कमल कार्यालय, वकीलपुरा, दिल्ली ।

(३) भारती—जून १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री नागेश्वर, सह० सं० कुमारी व्रजदेवी ; पुस्तकाकार प्रकाशित इस पत्रिका में राजनैतिक सामग्री काफी रहती है ; 'बाल-संसार' बच्चों के लिए सुरक्षित पृष्ठ हैं ; वा० मू० ४।।), प्रति ।=), पृष्ठ ६० ; प० भारती कार्यालय, ए ४/१३ तिबिया कालेज, करोलबाग, दिल्ली ।

पाक्षिक

(४) प्रजामित्र—२।। वर्ष से प्रकाशित ; संचा० श्री दौलतराम गुप्त, सं० श्री हरिप्रसाद 'सुमन', सह० सं० श्री विद्याधर ; हिमाचल प्रदेश का एक मात्र राष्ट्रीय पत्र , प्रादेशिक खबरें ही प्रमुख ; वा० मू० ३), प्रति -), पृष्ठ ४ ; प० रामा प्रेस, चम्बा ।

साप्ताहिक

(५) अंकुश—हाल ही मे प्रकाशित ; सं० श्री लक्ष्मीनारायण गौड़ 'विनोद', 'इधर उधर' हास्य का अच्छा स्तम्भ है ; गजलें भी प्रकाशित होती हैं ; वा० मू० ४), प्रति -) ; प० लालमणि प्रेस, फर्रुखाबाद (यू. पी.)

(६) जागृति—११ वर्ष से प्रकाशित ; प्रारम्भ से ही सं० श्री जगदीशचन्द्र 'हिमकर', सह० सं० श्री महावीरप्रसाद शर्मा 'प्रेमी' ; पहले यह आर्य समाजिक पत्र था और प्रचार भी बहुत था ; लेख, कवितादि

साधारण रहती हैं; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० २४, बनारस रोड, सलकिया, हबड़ा।

(७) ताजातार—७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री राजेन्द्रकुमार 'दीक्षित'; स्थानीय समाचार ही रहते हैं और विज्ञापनों की भरमार; वा० मू० ४॥), प्रति -)॥ ; प० शंकर प्रेस, बेलनगंज, आगरा।

(८) तिरहुत समाचार*—मुजफ्फरपुर से प्रकाशित सन् १९०८ से निकलने वाला यह बिहार का सबसे पुराना साप्ताहिक है।

(९) राष्ट्रपति—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० आचार्य मंगलानन्द गौतम, श्री मंगलदेव प्रभाकर ; साधारण समाचार रहते हैं; लेखादि भी साधारण ; प्रति, ।), पृष्ठ २० ; प० नई सड़क, (रोशनपुरा) दिल्ली।

(१०) लोकमत—६ दिसम्बर १९४८ से प्रकाशित , सं० श्री वेंकटेश पारीख ; शेखावाटी प्रान्त की खबरें ही प्रमुख ; दैनिक पत्र के आकार में निकलता है , वा० मू० ८), प्रति =), प० सीकर (जयपुर)

(११) लोकमित्र—३ वर्ष से प्रकाशित , सं० श्री सुरेशचन्द्र 'वीर' ; 'पाण्डेजी का पत्र' और 'रसगुल्ला' चुटकियों के अच्छे स्तम्भ हैं . वा० मू० ३), प्रति =), पृष्ठ ८ ; प० वीर प्रिंटिंग प्रेस, फीरोजाबाद (यू० पी०)

(१२) विक्रम—५ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रमापति शर्मा , प्रारंभ में श्री पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ही सम्पादक रहे ; १९४२ के आन्दोलन में बन्द रहा। उग्रजी के समय में यह स्वतंत्र विचार-पत्र के रूप में साप्ताहिकों में विशिष्ट स्थान रखता था , राष्ट्रभाषा हिन्दी का पक्षपाती , राशि फल भी छपता है ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० विक्रम प्रिंटरी, गोविन्दवाड़ी, कालबादेवी, बम्बई।

(१३) विजय—१३ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री सत्यकाम विद्यालंकार, सह० सं० श्री शक्ति दत्ता , २५ वर्ष पूर्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द ने उर्दू 'तेज' की स्थापना की थी ; तेज लिमिटेड द्वारा ही श्री देशबंधु-दास द्वारा इसका सञ्चालन होता है ; 'सम्पादक की डाक', 'जिनकी चर्चा

है' आदि स्तम्भ विशिष्ट हैं; सम्पादकीय टिप्पणियाँ शुद्ध हिन्दी में लिखी गयीं, अपना अलग महत्व रखती हैं; कविता व कहानियों का चुनाव भी सुन्दर रहता है। प्रथम अङ्क ही इस सचित्र साप्ताहिक के उज्जवल भविष्य का द्योतक है; 'स्वतंत्रता अङ्क' भी अच्छा निकला है; प्रति =); प० विजय प्रेस, नया बाजार, दिल्ली।

(१४) विश्वमित्र—३१ वर्ष से प्रकाशित; संचा० श्री मूलचन्द्र अग्रवाल; सं० श्री प्रदीप; कुछ वर्ष पूर्व राष्ट्रीय पत्रों में इसका स्थान ऊँचा था पर आज इसका स्तर गिरा है; छपाई-सफाई पर भी ध्यान नहीं; संभवतः इसीलिए निकल रहा है कि 'विश्वमित्र' का साप्ताहिक संस्करण निकलते रहना ही चाहिए; 'विश्वमित्र-संचालक की कलम से' में मूलचन्द्रजी के लेख रहते हैं, जो प्रायः प्रति सप्ताह निकलता है; 'अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच' में विदेशों की राजनीति पर प्रकाश डाला जाता है; एक अङ्क मे पृष्ठ अवश्य अधिक रहते हैं; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ ३२; प० ७४, धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

(१५) स्वतंत्र—१६२१ से प्रकाशित; सं० श्री 'शिवदर्शी'; यह स्व० जगदीशनारायण रूसिया की स्मृति में निकलता है; इस पत्र का भी राष्ट्रीय पत्रों मे विशिष्ट स्थान रहा है; अपना स्तर अब भी कायम रखे है पर अब विशेषतः साहित्यिक, सामाजिक लेख ही रहते हैं। 'साहित्य समालोचना', 'मधुकलश' और 'बाल-जगत' स्थायो स्तम्भ हैं। साप्ताहिक राशि फल भी रहता है। सामयिक समस्याओं पर टिप्पणियाँ अच्छी रहती हैं; वा० मू० ७), प्रति =), पृष्ठ २०; प० स्वतंत्र जर्नल्स लि०, झाँसी।

(१६) स्वाधीन*—१६२१ में श्री वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा संचालित व सम्पादित; सं० सर्वश्री सत्यदेव वर्मा, लालाराम वाजपेयी; प० स्वाधीन प्रेस, झाँसी।

(१७) सिपाही—२ अक्टूबर १६५७ से प्रकाशित; सं० श्री कृपाशंकर पाठक, सह० सं० श्री स्वामी कृष्णानन्द; सागर जिले की खबरें ही विशेषतः

प्रकाशित; कांग्रेसी नीति का समर्थक; शिक्षा सम्बन्धी लेख भी रहते हैं; वा० मू० ४॥), प्रति =), पृष्ठ ८; प० सागर (सी० पी०)

अर्द्ध साप्ताहिक

(१८) जयाजी प्रताप*—११ जनवरी १९०५ से प्रकाशित; सं० श्री शम्भूनाथ सक्सेना; प्रारम्भ में यह साप्ताहिक रूप से निकला था, (१९१६ में) महायुद्ध के समय में दैनिक रूप में भी प्रकाशित हुआ था और पुनः कई वर्षों तक साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होकर १९४७ के प्रारम्भ से अब अर्द्ध साप्ताहिक निकल रहा है; इसका आधा अंश प्रारम्भ से ही अंग्रेजी में भी निकलता है; कहानी आदि के अतिरिक्त गवालियर राज्य की सरकारी विज्ञप्तियाँ ही अधिक रहती हैं; वा० मू० ७); प० लश्कर (गवालियर)

---

८. सामाजिक, संस्था-प्रचारक एवं जातीय

(क) अछूतोद्धार : साप्ताहिक

(१) जनपथ*—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री देवेन्द्रकुमार ; पत्र श्रमिकों और दलितों में सुधार का संदेशवाहक है ; वा० मू० ६) प० स्टेफिल आर्ट प्रेस, ३१, बड़तल्ला स्ट्रीट. कलकत्ता ।

(२) दलितप्रकाश—प्रथम वर्ष का प्रवेशांक १२ नवम्बर १६४७ को प्रकाशित ; सं० श्री ललित श्रीवास्तव, लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी ; संचा० श्री भगवानदीन एम. एल. ए. ; दलितों के उत्थान का उद्देश्य लेकर निकला है ; वा० मू० ४), प्रति -)॥, प० लाटूशरोड़, कानपुर ।

(३)—मानवमित्र*—हाल ही में प्रकाशित ; स० श्री शिवप्रसाद दीन ; दलितों का सचित्र राष्ट्रीय पत्र है ; सुन्दर निकला है ; वा० मू० ६), प० १२; आरपुली लेन, कलकत्ता ।

(ख) ग्रामोत्थान : मासिक

(१) गाँव—११ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री अखौरी नारायणसिंह, सह० सं० श्री जगदीशप्रसाद 'श्रमिक' ; सम्पादक मण्डल में सर्वश्री दीपनारायणसिंह, गोरखनाथसिंह, रामशरण उपाध्याय तथा मथुराप्रसाद हैं ; वा० मू० ४), 'स्वाधीनता अङ्क' हमे प्राप्त हुआ है ; पृष्ठ १७५, छपाई व गेट अप आकर्षक हैं ; अधिकांश लेख सम्पादकों द्वारा लिखे ही हैं । ऐसे पत्र में गोवों में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लेख होने चाहिएँ जिन्हें क्रियात्मक जानकारी प्राप्त है, तभी ग्रामीण जीवन को सुखी और समृद्ध बनाया जा सकता है ; इतने कम मूल्य मे फिर भी उपयोगी सामग्री दी जा रही है ; प० विहार कोऑपरेटिव फेडरेशन, पटना ।

(२) ग्रामोद्योग पत्रिका—कई वर्ष से प्रकाशित ; अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, मगनवाड़ी (वर्धा) की पत्रिका है ; सं० श्री जे० सी० कुमारप्पा ; मगनवाड़ी में किये जाने वाले प्रयोगों की रिपोर्ट रहती है ; वा० मू० २) ; प० वर्धा (सी० पी०)

(३) गोसेवक*—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री शुकदेव शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, साहित्यरत्न ; गो सेवा सम्बन्धी नवीनतम साहित्य का प्रतिपादक पत्र ; वा० मू० ५) ; प० चौमूँ (जयपुर)

(४) चौपाल—गत वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० श्री राजेन्द्र मोहन शर्मा, सं० श्री रमेशचन्द्र मिश्र ; मोटे टायप में छपा यह पत्र ग्रामीणों के लिए विशेष उपयोगी है ; कृषि सम्बन्धी लेखों के साथ-साथ धार्मिक लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ४≡), प्रति ।≈), पृष्ठ ६० ; प० ग्रामहितैषी कार्यालय, श्यामबाग, हाथरस (यू० पी०)

(५) नन्दिनी—अगस्त १९४७ (श्रावण अधिक सं० २००४) से प्रकाशित ; सं० श्री धर्मलालसिंह ; इसमें गो सेवा से सम्बन्धित लेख ही रहते हैं ; गो-सेवा सम्बन्धी तथ्यपूर्ण और उपयोगी लेख रहते हैं ; अभिनन्दनीय प्रयास है। वा० मू० ४), विदेश में ६), पृष्ठ २२ ; छपाई व गेट अप भी अच्छा है ; यह बिहार प्रान्तीय गोशाला पींजरापोल संघ का मुख-पत्र है। प० सदाकत आश्रम, पटना।

पाक्षिक

(६) गाँव की बात—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री सालिगराम पथिक ; सह० सं० श्री कृष्णदास ; ग्रामीण समस्याओं पर विविध लेख रहते हैं। मोटे टायप मे प्रकाशित, गाँववासियो के लिए विशेष उपयोगी है ; वा० मू० ६) ; प० श्री मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग।

साप्ताहिक

(७) ग्राम्यजीवन—फरवरी १९४८ से प्रकाशित ; संचा० श्री पन्नालाल 'सरल', सं० श्री रामस्वरूप भारतीय ; ग्रामो में जाग्रति की आज अत्यन्त

आवश्यकता है ; उन लोगों का सम्बन्ध शेष संसार से अलग न रहना चाहिए। समाचार व ग्रामीणों के लिए उपयोगी लेख रहते हैं ; वा० मू० ५); प्रति ≈), पृष्ठ ८ ; प० ग्राम्यजीवन कार्यालय, जारखी (आगरा)

(८) देहाती—१० मई १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री रमेश ; यह प्रसन्नता का विषय है कि इसका क्षेत्र संकुचित नहीं है और सभी स्थानों के संवाद प्रकाशित होते हैं ; ग्रामोपयोगी लेख भी रहने चाहिए ; वा० मू० ६) प्रति≈) पृष्ठ ८ ; प० देहाती कार्यालय, गुड़ की मण्डी, आगरा।

(१०) परमहंस—विगत ५ मास से प्रकाशित ; सं० श्री सालिगराम पथिक ; पंचायती कार्य-प्रणाली मे क्रांति उत्पन्न करने के लिए बाबा राघवदासजी द्वारा संस्थापित ; इस सचित्र साप्ताहिक से ग्रामवासियों और विशेषकर ग्रामों में रचनात्मक कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए सरल भाषा मे उपयोगी सामग्री रहतो है। २० हजार प्रतियाँ प्रति सप्ताह छपती हैं ; प० मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग।

(ग) संस्था प्रचारक : मासिक

(१) गुरुकुल पत्रिका—भाद्रपद सं० २००५ से प्रकाशित; सं० श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार तथा श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति ; गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को मुख-पत्रिका ; ऐसी पत्रिका की नितान्त आवश्यकता थी ; प्राचीन भारतीय संस्कृति, शिक्षा से सम्बन्धित गवेषणापूर्ण लेख रहते हैं, अन्त मे लेखकों का परिचय भी रहता है। लगभग २२-२३ वर्ष पूर्व एक पत्रिका 'अलंकार' श्री देवशर्मा 'अभय' (स्वामी अभयदेव, पाण्डीचेरी) के सम्पादकत्व में भी निकली थी जिसमे गुरुकुल के समाचार भी छपते थे। वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ३४, पत्रिका का 'श्रद्धानन्द अङ्क' विशेषांक शीघ्र ही निकल रहा है। प० हरिद्वार।

(२) हिन्दी जगत—अगस्त १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री श्यामसुन्दर गुप्त ; बम्बई प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुख-पत्र, सम्मेलन से सम्बन्धित सूचनाएँ तथा बम्बई से प्रकाशित हिन्दी पत्रों की सूची व समीक्षा

छपती है ; वा० मू० २), प्रति =) ; प० सम्मेलन कार्यालय, गणेशबाग, दादी सेठ अगयारी लेन, बम्बई नं. २.

(३) हिन्दी विद्यापीठ पत्रिका*—हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर की मुख पत्रिका है, दिसम्बर १६४६ से प्रकाशित, सं० श्री गिरधारीलाल शर्मा (प्रचार मन्त्री) विद्यापीठ की गति विधि पर प्रकाश डालती है ; प. उदयपुर।

(घ) जातीय पत्र : त्रैमासिक

(१) चारण—हाल ही में प्रकाशित, सं० श्री देवीदान रत्नू ; अ० भा० चारण सम्मेलन का मुख-पत्र ; राजस्थानी साहित्य की सुन्दर सामग्री देता है, जातीय समाचार भी रहते हैं। लगभग ६ वर्ष पूर्व इसी नाम से एक त्रैमासिक सर्वश्री ईश्वरदान आसिया, शुभकरण कविया, खेतसिंह मिश्रण के सम्पादन में कड़ी (कलोल-गुजराती) से भी प्रकाशित होता था, जिसमें कुछ अंश गुजराती में भी छपता था तथा दो वर्ष तक निकलता रहा। वा० मू० ६) ; प्रकाशक—श्री मुरारीदान कीनिया, मोतीनिवास, उदयमंदिर, जोधपुर।

मासिक

(१) अग्रवाल—नवम्बर १६४६ से प्रकाशित ; सं० श्री भद्रसेन गुप्त ; धार्मिक एवम् सामाजिक लेख रहते हैं, वा० मू० ४), प्रति ।=) ; प० २४, क्लाइव स्कायर, नई दिल्ली।

(२) अग्रवाल पत्रिका*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० सर्वश्री मनोहरलाल गर्ग, गंगाशरण अग्रवाल ; सह० सं० श्री राधाकृष्ण कसेरा ; वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ३२ ; अग्रवाल पत्रिका कार्यालय, हाथरस (यू. पी.)

(४) अग्रवाल हितैषी*—कई वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री पूर्णचन्द्र अग्रवाल ; वा० मू० ५), पृष्ठ ४० ; प० हींग की मण्डी, आगरा।

(५) कान्यकुब्ज—४३ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री रमाशंकर मिश्र, 'श्रीपति'; कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र; जातीय समाचार ही अधिक रहते हैं ; वा० मू० ४) ; प० कान्यकुब्ज कार्यालय, नं० २, हुसैनगंज, लखनऊ।

(६) खत्रीहितैषी*—कई वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री लक्ष्मीनारायण टण्डन 'प्रेमी'; प० प्रेमी कुटीर, पंजाबी टोला, पास राजा बाजार, लखनऊ।

(७) त्यागी—४० वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रामचन्द्र शर्मा ; त्यागी ब्राह्मण जाति का पत्र ; वा० मू० ३), प्रचारार्थ २) ; प० मेरठ।

(८) भविष्य—२ वर्ष से प्रकाशित ; संचा० आर० सी० भरतिया, सं० श्री श्रीकृष्ण सोर ; मारवाड़ी-समाज में सुधार ही उद्देश्य ; हमारे सामने मारवाड़ी सम्मेलनाङ्क है, अनेक मारवाड़ियों के चित्रों से विभूषित ; संभवतः मारवाड़ी समाज का प्रचारक-पत्र ; प० जोगीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली।

(९) मराठा राजपूत—१ जून १९४१ से प्रकाशित ; सं० श्री रामचन्द्रराव जाधव, डा० रविप्रतापसिंह श्रीनेत, सह० सं० श्री रामचन्द्र ज्योतिषि ; राजपूत मराठा यूनियन का मुख-पत्र ; वा० मू० ५), प्रति ।) ; प० देवास, जूनियर (मध्यभारत)

(१०) मारवाड़ी गौरव—३ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री अद्भुत शास्त्री ; मारवाड़ियों का प्रशंसक पत्र ; प्रकाशन अनियमित ; वा० मू० ६), प्रति ।) प० 'मारवाड़ी गौरव' कार्यालय, जयपुर।

(११) सैंढ क्षत्रिय समाचार—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री कान्तिलाल वर्मा ; सैंढ क्षत्रिय प्रभाकर क्षत्रिय सभा का पत्र ; कुछ काल पूर्व यह पत्र श्री नानूरामजी वर्मा (इन्दौर) के सम्पादन में 'सैंढ प्रभाकर' नाम से १२ वर्षों तक निकलता रहा ; वा० मू० ३) ; प० आकोट, जिला आकोला (बरार)

(१२) यादव—२२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री राजितसिंहजी ; अ० भा० यादव महासभा का मुख-पत्र ; वा० मू० ४) ; प० दारानगर, बनारस।

(१३)—युवक हृदय—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री मनोहरलाल लढीवाले : अग्रवाल युवक परिषद (जयपुर) का मुख-पत्र; वा० मू० ३), प्रति ।); प० गोपालजी का रास्ता, जयपुर।

(१४) राजपूत—४७ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री राजेन्द्रसिंह; अ० भा० क्षत्रिय महासभा का मुख-पत्र : राजपूत संगठन आदि पर लेखादि अच्छे

रहते हैं; पहले इसका बहुत प्रचार था ; वा० २।), पृष्ठ २० ; प० राजपूत प्रेस, आगरा।

(१५) वालंटियर—सितम्बर १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री श्यामशरण सक्सेना ; संरक्षक, कायस्थ वालंटियर कोर ; वा० मू० ३), नमूना मुफ्त ; प० लश्कर (गवालियर)

(१६) ब्राह्मण—जनवरी १९४५ से प्रकाशित ; प्रधान सं० श्री देवदत्त शास्त्री ; सं० श्री सतंकुमार जोशी ; अ० भा० ब्राह्मण महासभा का मुख-पत्र-वा० मू० ४), प्रति ।=) ; प० चरखेवालाँ, दिल्ली।

(१७) सनाढ्य जीवन—१४ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री प्रभुदयाल शर्मा वा० मू० ३) ; प० शर्मन प्रेस, इटावा (यू० पी०)

(१८) सविता संदेश—७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रामचन्द्र भारती सविता समाज का मुख-पत्र ; वा० मू० ४) ; प० जोगीवाड़ा, नई सड़क दिल्ली।

पाक्षिक

(१९) मंजिल—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री मोतीलाल शर्मा 'सुमन' ; मारवाड़ी समाज में रूढ़ियों के प्रति क्रांतिकारी भाव पैदा करना ही उद्देश्य है ; वा० मू० ६।।।=), प्रति ।), पृष्ठ ४२ ; प० रघुनाथपुर (जिला मानभूम) बिहार।

साप्ताहिक

(२०) अकेला—इसी वर्ष से प्रकाशित ; संचा० श्री विश्वनाथप्रसाद गुप्त ; सं० श्री शिवनारायण शर्मा ; मारवाड़ी सम्मेलनाङ्क हमारे सम्मुख है, मारवाड़ियों के चित्रों व परिचय से भरपूर ; प० तिनसुकिया (आसाम)

(२१) वैश्य समाचार—१० वर्ष से प्रकाशित ; सं० डा० नन्दकिशोर जैन ; अ० भा० वैश्य सोसायटी द्वारा संचालित ; वा० मू० ४) ; प० नया बाजार, दिल्ली।

(२२) समाज-सेवक—४ वर्ष से प्रकाशित ; स्थानापन्न सं० बद्रीनारायण शर्मा ; अ० भा० मारवाड़ी सभा का मुख-पत्र ; कई विशेषाङ्क भी निकाले ; वा० मू० ६), प्रति =) , प० १५१ बी, हरिसन रोड, कलकत्ता ।

(२३) क्षत्रिय गौरव—३ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रावत सारस्वत ; साहित्यिक लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ६) , प० राजपूत प्रेस, लिमिटेड, जयपुर ।

(२४) क्षत्रिय-वीर—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० कुँवर रूपसिंह भाटी ; वा० मू० ८), प्रति ≡) ; प० जोधपुर ।

(ङ) साधारण : मासिक

(१) अशोक*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री सुधीर भारद्वाज ; साहित्यिक लेख भी अच्छे रहते हैं ; वा० मू० ५।।), प्रति ।।) ; प० अशोक कार्यालय, मोरीगेट, दिल्ली ।

साप्ताहिक

(२) तेजप्रताप—१६ सितम्बर १६३७ से प्रकाशित ; संचा० श्री कांतिचन्द्र जोशी ; सं० श्री अवतारचन्द्र जोशी ; सामान्य सामाजिक लेख रहते हैं ; वा० मू० ६) , प० मुन्शीबाजार, अलवर ।

(३) सीमा—जून १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री मातूलाल शर्मा ; वा० मू० ४), प्रति =)।।, पृष्ठ ८ , प० आसनसोल (मानभूम) बिहार ।

(च) स्काउटिंग : मासिक

(१) स्काउट—११ वर्ष से प्रकाशित ; जयपुर स्टेट बॉय स्काउट एसोसियेशन का मुख-पत्र ; कुछ अंश अंग्रेजी में छपता है ; वा० मू० २) ; प० जयपुर ।

(२) सेवा—२८ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री रमाप्रसाद 'पहाड़ी' ; भूतपूर्व सम्पादकों में श्री जानकीप्रसाद वर्मा का नाम उल्लेखनीय है ; यह हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन का मुख-पत्र है ; पहले इसमें इसी संस्था

विषयक लेखादि रहते थे, अब कुछ वर्ष से साहित्यिक लेख ही प्रकाशित होते हैं; वा० मू० ३), प्रति ।-) ; प० इलाहाबाद ।

(छ) प्रवासी व आदिवासी : मासिक

(१) प्रवासी—नवम्बर १६४७ से प्रकाशित ; सं० श्री भवानीदयाल सन्यासी ; प्रवासी भारतीयों की समस्याओं से सम्बन्धित लेख ही रहते हैं। 'बाल-विनोद', 'महिला मंतव्य' आदि बालकों व स्त्रियों के लिए स्तम्भ है। सुयोग्य सम्पादक प्रवासी-भारतीय-समस्या के विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वान् हैं। लेखादि अच्छे रहते हैं; आधा अंश अँग्रेजी में छपता है; वा० मू० १०), प्रति १) ; प० प्रवासी भवन, आदर्श नगर, अजमेर ।

साप्ताहिक

(२) आदिवासी—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री राधाकृष्ण ; बिहार सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा राँची जिले के आदिवासियों को शिक्षित करने के लिये प्रसारित ; उपयोगी सामग्री रहती है ; ३००० प्रतियाँ छपती है ; वा० मू० ११।), प्रति)।।, पृष्ठ ८ ; प० बिहार गवर्नमेंट प्रेस, राँची ।

(३) लोकशासन—हाल ही में प्रकाशित ; सं० सर्वश्री केशवचन्द्र, ब्रह्मदत्त तथा देवकृष्ण ; वनवासी प्रदेश का हिन्दी साप्ताहिक ; सामाजिक लेखों के साथ-साथ राजनैतिक लेख भी प्रकाशित होते हैं ; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ १२ ; प० ज्ञानमन्दिर मुद्रणालय, बामनिया (इन्दौर)

(४) होड़-सोमबाद—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० डोमन साहु 'समीर' ; यह बिहार सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा संथाल परगने के आदिवासियों मे समाज-सुधार, शिक्षा प्रसार के लिए निकलता है ; लिपि देवनागरी ही है लेकिन भाषा संथाली रहती है ; संथाली का सर्वप्रथम एक मात्र साप्ताहिक पत्र ; प० साहित्य प्रेस, वैद्यनाथ देवघर ।

६. स्वास्थ्य सम्बन्धी

(क) आरोग्य : मासिक

(१) आरोग्य—जुलाई १९४७ से प्रकाशित; संचा० तथा सं० श्री विट्ठलदास मोदी; प्राकृतिक चिकित्सा तथा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख ही रहते हैं; लेखों का चयन सुन्दर रहता है; प्रश्नोत्तर का स्तम्भ भी है; छपाई, सफाई भी सराहनीय है; वा० मू० ४), प्रति ।≈); प० आरोग्य मंदिर गोरखपुर।

(२) जीवन सखा*—१२ वर्ष से प्रकाशित; सं० डा० थालेश्वरप्रसाद सिंह; प्राकृतिक चिकित्सा, योग और व्यायाम आदि विषयों पर उपयोगी लेख रहते हैं; पाठकों के स्वास्थ्य विषयक प्रश्नों का भी समुचित उत्तर छपता है। 'जल चिकित्सा अङ्क' आदि कई विशेषाङ्क भी निकले हैं। प० लूकरगंज, प्रयाग।

(३) स्वास्थ्य सुधा—हाल ही मे प्रकाशित; सं० श्री रामचन्द्र महाजन; संचा० श्री प्रिंसिपल हरिश्चन्द्र; प्राकृतिक चिकित्सा, आहार-विहार, व्यायाम, सम्बन्धी तथा अन्य लेख अच्छे रहते हैं। वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ४२; प० स्वास्थ्य सुधा कार्यालय, चूनामण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली।

(४) होमियोपेथिक सन्देश—हाल ही मे प्रकाशित; सं० श्री डा० युद्धवीरसिंह; होमियोपेथी दावइयाँ सबसे सस्ती रहती हैं और लाभ भी होता है; गाँवों में इनका प्रचार उपयोगी हो सकता है। विदेशी पत्र-पत्रिकाओं से इसी विषय के अनूदित लेख भी रहते हैं; वा० मू० ५); प्रति ।।); प० चाँदनी चौक, दिल्ली।

(ख) आयुर्वेद : त्रैमासिक

(१) आयुर्वेद*—गत वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत,

आयुर्वेद के लुप्त अष्टाँग स्वरूप के पुनरुज्जीवन के लिये अन्वेषणपूर्ण साहित्य के प्रकाशन का उद्देश्य लेकर जन्म हुआ है ; वा० मू० ३), प्रति १) ; प० श्यामसुन्दर रसायनशाला, काशी।

द्वै-मासिक

(२) राजपूताना प्रांतीय वैद्य पत्रिका—५ वर्ष से प्रकाशित; पहले त्रैमासिक निकलती थी ; प्रारम्भ से ही प्रधान सं० श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत ; यह राजपूताना प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की मुख-पत्रिका है ; सम्मेलन के समाचारो के अतिरिक्त आयुर्वेद विषयक महत्वपूर्ण लेख रहते हैं ; वा० मू० ३) ; प० जयपुर।

मासिक

(३) अनुभूत योगमाला—२७ वर्ष से प्रकाशित ; प्रारम्भ से ही सं० श्री विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज ; पहले पाक्षिक रूप में निकलती थी अब कुछ समय से मासिक होगई है ; इसमे आयुर्वेद के अनुभूत नुस्खे रहते हैं ; वैद्यों का परिचय भी छपता है। इससे देश का बहुत लाभ हो रहा है ; वा० मू० ४), प्रति ।।) ; प० अनुभूत योगमाला कार्यालय, बरालोकपुर (इटावा) यू० पी०

(४) आयुर्वेद—जुलाई १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री रामनारायण शर्मा वैद्य ; सम्पादक महोदय श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, कलकत्ता के अध्यक्ष हैं और साथ ही अनुभवी वैद्य भी ; इस सचित्र पत्र में लेखादि अच्छे रहते हैं , वा० मू० ४) ; प० श्री वैद्यनाथ भवन ; नं० १, गुप्ता लेन (जोड़ासाँकू) कलकत्ता।

(५) आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका—३५ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री आशुतोष मजूमदार ; अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन व विद्यापीठ की विज्ञप्तियों के अतिरिक्त गवेषणापूर्ण लेख रहते हैं। कुछ अंश संस्कृत में भी रहता है। वा० मू० ५), प्रति ।|) ; प० चाँदनी चौक, दिल्ली।

(६) आयुर्वेद सेवक*—इसी वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री गुलराज

शर्मा मिश्र, शिवकरण शर्मा छांगाणी ; 'धन्वन्तरि विशेषांक छप रहा है ; वा० मू० ५=), प्रति ।।) ; प० आयुर्वेद सेवक कार्यालय, नई शुक्रवारी, नागपुर ।

(७) धन्वन्तरि*—१९२३ से प्रकाशित ; सं० श्री देवीशरण गर्ग ; प्रारम्भ में कितने ही वर्षों तक वैद्य बाँकेलाल गुप्त सम्पादक रहे, आयुर्वेद विज्ञान के अतिरिक्त स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख भी रहते हैं ; 'नारी अङ्क', 'रक्त रोगाङ्क', 'सिद्ध योगाङ्क' आदि कई विशेपाङ्क भी प्रकाशित हुए हैं ; वा० मू० ५=) , प० विजयगढ़ (अलीगढ़)

(८) प्राणाचार्य—फरवरी १९४७ से प्रकाशित ; सं० वैद्य बाँकेलाल गुप्त, सह० स० श्री गिरिजादत्त पाठक ; 'चिकित्सकों के प्रश्न', 'सिद्ध प्रयोग', 'हमारी डाक', आदि विविध स्तम्भ हैं ; आयुर्वेद विषयक विशेष जानकारी मिलती है ; वा० मू० ४=) ; प० प्राणाचार्य प्रेस, विजयगढ़ (अलीगढ़)

(९) रसायन—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० डा० गणपतसिंह वर्मा ; रसायन फार्मेसी दिल्ली का मुख-पत्र ; आयुर्वेद में आधुनिक विज्ञान की सहायता से क्रांति पैदा करना ही इसका उद्देश्य है ; गवेषणा-पूर्ण लेख रहते हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।।=) ; प० नं० ३, दरियागंज, पो० ऑ० १२५, दिल्ली ।

(१०) वैद्य—जुलाई १९२० से प्रकाशित ; संस्था० वैद्य शंकरलाल जैन ; सं० श्री वैद्य विष्णुकान्त जैन ; आयुर्वेद विज्ञान सम्बन्धी लेख अच्छे रहते हैं ; स्वास्थ्य विषयक लेख भी रहते हैं ; कई विशेषाङ्क निकले ; हमारे सामने इस वर्ष का प्रथम अङ्क 'सिद्ध योगाङ्क' है, जिसमें ७६५ अनुभूत प्रयोग दिये गए हैं ; वा० मू० ४) ; प० 'वैद्य' कार्यालय, मुरादाबाद ।

पाक्षिक

(११) सुधानिधि—जून १९०६ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री जगन्नाथ-प्रसाद शुक्ल, शिवदत्त शुक्ल, योगेन्द्रचन्द्र शुक्ल ; आरम्भ में मासिक था अब पाक्षिक रूप में प्रकाशित ; आयुर्वेद के पत्रों में सम्मानित ; स्पष्टवादी नीति ;

वा० मू० ५), प्रति ।) ; प० सुधानिधि कार्यालय, ३ सम्मेलन मार्ग, प्रयाग।

(ग) व्यायाम : मासिक

(१) व्यायाम*—कई वर्ष से प्रकाशित ; संस्था० प्रो. माणिकराव ; व्यायाम विषय की सचित्र पत्रिका ; विशेषतः आसनादि पर लेख रहते हैं ; मराठी, गुजराती संस्करण भी निकलते हैं ; वा० मू० ७); प० जुम्मादादा व्यायाम मन्दिर, बड़ौदा।

(२) बलपौरुष*—हाल ही मे प्रकाशित ; सं० श्री डा० सदानन्द त्यागी ; वर्तमान व्यायाम शैली मे वृहत परिवर्तन व वैज्ञानिक व्यायाम का दिग्दर्शन कराना ही इसका ध्येय है ; वा० मू० ६।।), प्रति ।।) ; बलपौरुष कार्यालय, ४७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

१०. वैज्ञानिक

(क) शुद्ध विज्ञान : मासिक

विज्ञान*—१६१५ से प्रकाशित, विज्ञान परिषद का मुख-पत्र ; अपने ढंग का अकेला ही पत्र है जो इतने वर्षों से निकल रहा है, आज यद्यपि कलेवर क्षीण है। युगधर्म के अनुकूल इसमें परिवर्तन और परिवर्द्धन होना चाहिए, डा. सत्यप्रकाश आदि सम्पादक रह चुके हैं ; वर्तमान प्रधान सं० श्री रामचरण मेहरोत्रा तथा ५ सम्पादकों की एक समिति है। वा० मू० ४) , प० टैगोर टाउन, प्रयाग।

(ख) मनोविज्ञान : मासिक

(१) बालहित–जनवरी १९३६ से प्रकाशित सं० श्री कालूलाल श्रीमाली, जनार्दनराय नागर ; माता-पिताओं को बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध मे उनके कर्तव्यों का ज्ञान कराना तथा बालहित की समस्या पर विचार करना ही इसका उद्देश्य है, लेख मनोवैज्ञानिक रहते हैं ; वा० मू० ३, प० विद्याभवन सोसायटी, उदयपुर।

(२) मनोविज्ञान—मई १६४८ से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री श्रीराम बोहरा, शिवप्रसाद पुरोहित, मनोविज्ञान से सम्बन्धित लेख सुन्दर रहते हैं; वा० मू० ६); प्रति ।।), पृष्ठ ३५, प० मनोविज्ञान प्रकाशन, अंधेरी, बम्बई।

(ग) भूगोल : मासिक

भूगोल*—१६४३ से प्रकाशित ; संचा० व सं० श्री रामनारायण मिश्र बी०ए० ; यह पत्र भी अपने विषय का अकेला है ; अनेक विशेषांक निकालकर इस दिशा मे इसने अद्वितीय कार्य किया है ; 'हैदराबाद अङ्क', 'देशी राज्य अङ्क' आदि बहुत से सुन्दर विशेषांक प्रकाशित हुए हैं ; वा० मू० ५) प० भूगोल कार्यालय, ककराहाघाट, इलाहाबाद ।

(घ) ज्योतिष : त्रैमासिक

(१) श्रीस्वाध्याय—७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० अमृतवाग्भव आचार्य ; सं० श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य ; वर्ष मे शारदाङ्क, हेमन्ताङ्क, वसन्ताङ्क, ग्रीष्माङ्क प्रकाशित होते है ; ज्योतिष के अतिरिक्त साहित्यिक व सांस्कृतिक लेख भी इसमे छपते हैं ; भारतीय संस्कृति का पोषक पत्र ; साहित्य समालोचना का स्तम्भ भी है ; वर्ष के प्रारम्भ मे विशेषांक, 'साहित्यांक' आदि निकलते हैं ; वा० मू० ६) प० श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

मासिक

(२) ज्योतिर्विज्ञान॰—हाल ही मे प्रकाशित ; सं० श्री मूलचन्द शर्मा ; भारतीय ज्योतिष शास्त्र का विस्तार और इस विद्या की वास्तविकता जनता के समक्ष उपस्थित कर इसका पुनरुद्धार करना ही, इसका उद्देश्य है ; वा० मू० ६), प्रति ।।।) , प० ज्योतिर्विज्ञान कार्यालय, महू (मध्यभारत)

(३) पण्डिताश्रम पत्रिका—१२ वर्ष से प्रकाशित ; स० ज्योतिषाचार्य संकर्षण व्यास ; पण्डिताश्रम सभा (उज्जैन) द्वारा संचालित ; प्रति पूर्णिमा को प्रकाशित ; राशि भविष्य, व्यापार भविष्य आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; कुछ साहित्यिक लेख भी रहते हैं , वा० मू० ३), प्रति ।=), पृष्ठ २४ ; प० श्री हरिसिद्धि प्रिंटिंग प्रेस, नई सड़क, उज्जैन ।

(४) व्यापार भविष्य—६ वर्ष से प्रकाशित , सं० श्री हीरालाल दीक्षित , यह पत्रिका केवल व्यापारी वर्ग के लिए ही है, लेख आदि एक भी नहीं रहता , सामग्री को देखते हुए मूल्य अधिक जान पड़ता है ; वा० मू० ५), प्रति ।), पृष्ठ ८ ; प. व्यापार भविष्य कार्यालय, हाथरस (यू. पी.)

(ङ) कृषि : मासिक

(१) कृषि—जनवरी १९४६ से प्रकाशित ; सं० श्री माणिकचन्द्र बोन्द्रिया, सह० सं० श्री गोरेलाल अग्निभोज ; कृषि व ग्रामोद्योग सम्बन्धी लेखों से परिपूर्ण यह पत्रिका बहुत सुन्दर रूप मे प्रकाशित हो रही है ;

अधिकारी लेखकों द्वारा लिखे गए लेख इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं; 'ज्ञान-विज्ञान-अनुसंधान', 'पशुपालन-पशुसुधार' स्थायी स्तम्भ हैं; इसका 'दीपावली अङ्क' भी सुन्दर निकला था; वा० मू० ६), प्रति ।।); प० कृषक कार्यालय, धर्मपेठ, नागपुर।

(२) कृषि संसार—मार्च १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री शिवकुमार शर्मा; देश के ८२ प्रतिशत किसानों में कृषि सम्बन्धी विज्ञान का प्रचार करना ही पत्र का लक्ष्य है; मोटे टायप में प्रकाशित यह पत्र अत्युपयोगी सामग्री से भरपूर रहता है; प्रथम अङ्क ही 'कम्पोस्ट विशेषाङ्क' निकला है; निश्चय ही कृषकों के लिए यह अपूर्व देन; मीरा बहन आदि कृषि विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त है। नवम्बर ४८ में 'गन्ना अङ्क' निकल रहा है; गेट अप व छपाई सुन्दर; वा० मू० ७), प्रति ।।), पृष्ठ ७२, प० कृषि संसार कार्यालय, बिजनौर (यू० पी०)

(च) कामविज्ञान : मासिक

(१) कामाञ्जलि*—काम विज्ञान सम्बन्धी कोई भी पत्रिका हिन्दी में न थी; इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक शिक्षा के लिए १५ अगस्त १६४८ से इसका प्रकाशन किया जा रहा है; पत्रिका विभिन्न चित्रों से सुसज्जित व रंगीन छपाई; सं० श्री 'प्रभात'; प० 'कामांजलि' कार्यालय, सिवनी (सी. पी.)

(२) छाया*—स्वास्थ्य तथा कामविज्ञान सम्बन्धी सचित्र मासिक; अनेक चित्र; वा० मू० ६), प्रति ।।); प० स्वास्थ्य सदन, दिल्ली।

(छ) ग्रंथालय : मासिक

ग्रंथालय*—पुस्तकालय विज्ञान सम्बन्धी हिन्दी मे एक भी पत्र न था; नवम्बर मास (१६४८) से श्री शास्त्री मुरारीलाल नागर, एम. ए. साहित्याचार्य, विश्वविद्यालय ग्रंथालय, दिल्ली, के सम्पादन में वहीं से शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। यह सर्वथा नूतन प्रयत्न है और है अभिनन्दनीय।

---

११. अर्थशास्त्र, वाणिज्य व व्यवसाय

(क) अर्थशास्त्रीय : त्रैमासिक

(१) अर्थसंदेश—फरवरी १९४७ से प्रकाशित; सं० श्री भगवतशरण अधौलिया, सह० सं० श्री दयाशंकर नाग; अर्थ, वाणिज्य विषयक सामयिक प्रश्नों की चर्चा करना, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए गंभीर लेखों द्वारा विचार सामग्री उपस्थित करना तथा जनता के आर्थिक कल्याण के लिए भिन्न आदर्शों तथा योजनाओं पर विवेचनात्मक एवं तात्विक प्रकाश डालना ही इसका उद्देश्य है; यह फरवरी, मई, अगस्त, और नवम्बर में प्रकाशित होता है। अब तक प्रकाशित अङ्कों से यह कहा जा सकता है कि यह अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल होगा, वा० मू० ६), विद्यार्थियों तथा पुस्तकालयों से ५), प्रति १॥), पृष्ठ ८४; प० 'अर्थसंदेश' कार्यालय, सेकसरिया कॉमर्स कालेज, वर्धा।

(२) खादीजगत—२५ जुलाई १९४१ से प्रकाशित; सं० श्रीमती आशादेवी तथा श्री० कृष्णदास गांधी, बीच में प्रकाशन कुछ समय स्थगित रहा; इसमें खादी से सम्बन्धित लेख ही रहते हैं और प्राधान्यतः खादी के अर्थशास्त्र पर ही; अ० भा० चर्खा संघ के परीक्षणों के आधार पर तैयार किये गए लेखादि रहते हैं। 'खादी परीक्षा' की सूचना व परिणाम भी छपता है; गाँवों मे बैठकर रचनात्मक कार्य करने वालों के लिए विशेष उपयोगी है, वा० मू० ६), प्रति ।≈), प० वर्धा।

(ख) व्यावसायिक : मासिक

(१) उद्यम—३० वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री वि० ना० वाडेगाँवकर; खेती, बागवानी, विज्ञान, व्यापार, उद्योग-धंधे, ग्रामसुधार और स्वास्थ्य सभी विषयों पर महत्त्वपूर्ण लेख इसमें रहते हैं, हिन्दी में इसका प्रकाशन

अभूतपूर्व है, 'व्यापारी हलचलों की मासिक समालोचना', 'जिज्ञासु जगत', 'साहित्य समालोचना' आदि स्थायी स्तम्भ हैं; अनेक व्यंगचित्रों से सुसज्जित उपयोगी सामग्री देता है। 'कृषि अङ्क', 'फोटोग्राफी अङ्क' आदि कई विशेषाङ्क निकले हैं, इसका मराठी संस्करण भी निकलता है; वा० मू० ७), प्रति ।।।), पृष्ठ ४८, प० धर्मपेठ, नागपुर।

(२) उदय—जनवरी १६४६ से प्रकाशित; सम्पादक का नाम नहीं छपता; व्यवसाय और उद्योग प्रधान सचित्र पत्र है, 'पूछताछ' स्तम्भ के अन्तर्गत पाठको के एतद्‌विषयक प्रश्नों का उत्तर रहता है; विश्व के देशों के व्यापारियों के पते भी हर अङ्क मे छपते है; चित्रपट आदि के व्यावसायिकों पहलू पर लेख रहते हैं; हिन्दी में ऐसे पत्रों की आवश्यकता है; प० न्यूज पब्लिकेशन लि०, नया कटरा, दिल्ली।

(३) जैनउद्योग*—२१ अप्रैल १६४८ से प्रकाशित; सं० श्री वी. सी. जैन; कलात्मक और छोटे व्यवसाय, गृहोद्योग पर लेख रहते हैं; वा० मू० ३), प्रति ।=); प० जैन उद्योग समिति, ३५५, गंज जामुन रोड, नागपुर सिटी।

(४) बेकार सखा*—१६३२ से प्रकाशित; इसमें गृह उद्योगों के नुस्खे तथा अन्य दस्तकारी पर पाठकों के प्रश्नोत्तर रहते हैं; विज्ञापन भी बहुत रहते है; यदि अश्लील विज्ञापन न लिए जायँ तो पत्र की उपयोगिता निश्चित है; वा० मू० ४); प० 'बेकार सखा' कार्यालय, शिकोहाबाद (यू. पी.)

(५) व्यापार*—गत वर्ष से प्रकाशित; व्यापार सम्बन्धी समस्याओं पर विचार, मासिक बाजार भाव, विवेचन तथा कुछ चीजें बनाने के सरल व उपयोगी नुस्खे तथा लेख रहते हैं; वा० मू० २।।), प्रति ।); प० १६८, क्रॉस स्ट्रीट कलकत्ता।

(६) व्यापार विज्ञान—१० नवम्बर १६४७ से प्रकाशित; सं० श्री नन्दकिशोर शर्मा, सह० सं० श्री भीमसेन कौशिक, व्यापार सम्बन्धी साधारण लेख रहते हैं; धारावाहिक उपन्यास भी निकल रहा है; भारत

के व्यापारियों के पते रहते हैं; वा० मू० ३), प्रति ।); पृष्ठ २६ ; प० सदरबाजार, मेरठ ।

(७) वाणिज्य*—जन्माष्टमी संवत् २००५ से प्रकाशित ; पृष्ठ ८० ; अंगरेजी के पत्रों 'कामर्स', 'कैपिटल' से अनूदित लेखों के अतिरिक्त व्यापार विषय पर मौलिक लेख भी रहते हैं ; बाजार भाव भी छपते हैं ; 'कलकत्ता समाचार', 'बम्बई की चिट्ठी' आदि स्थायी स्तम्भ है जिनमे उन शहरों की व्यापारिक प्रगति पर प्रकाश पडता है ; प० वाणिज्य मुद्रणालय, कलकत्ता ।

(८) विज्ञानकला—१५ अगस्त १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री निरंजनलाल गौतम ; 'प्रश्नोत्तरी', 'गृहोद्योग' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; 'प्रश्नोत्तरी' मे विभिन्न उद्योग विषयक प्रश्ना के उपयोगी उत्तर छपते है ; स्याही बनाने व अन्य गृहोद्योगों सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण नुस्खे भी रहते हैं ; आशा है पत्र उन्नति करेगा ; वा० मू० ५), प्रति ।), पृष्ठ ३० ; प० विज्ञानकला मन्दिर, ज्वालानगर, देहली शहादरा ।

साप्ताहिक

(९) ग्रामउद्योग—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री मोहनलाल हरित्स 'प्रभाकर' ; 'साप्ताहिक समाचार', 'भंग की तरंग' आदि स्तम्भों में खबरें व चुटकियाँ छपती हैं ; ग्रामोद्योग विषयक लेख भी रहते हैं ; आयुर्वेदिक नुस्खे भी छपते हैं, वा० मू० ६), प्रति, =), पृष्ठ १६ ; प० उदय प्रेस, वैदवाड़ा, दिल्ली ।

(१०) तिजारत—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री सीतानन्दनसिंह ; अर्थशास्त्र, व्यापार सम्बन्धी सामान्य लेख रहते हैं ; 'वस्तुओं के दर पर एक निगाह' स्तम्भ मे व्यापारिक भाव भी दिये जाते हैं। सचालकों के अनुसार ग्राहक संख्या ६ हजार से ऊपर है ; वा० मू० ६), प्रति =), पृष्ठ १२ ; प० पोस्ट बॉक्स ५३, बाँकीपुर, पटना ।

(११) पूँजी—प्रवेशाङ्क १ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री रामस्वरूप भालोटिया ; उच्चकोटि का औद्योगिक एवं व्यापारिक साप्ताहिक ,

आकार-प्रकार व लेखादि को देखकर इसकी उपयोगिता जंचती है और इसका प्रकाशन गौरव की वस्तु है ; इसका प्रकाशन नियमित हो तभी यथेष्ट लाभ की संभावना है ; वा० मू० ५७), प्रति २) ; प० 'पूँजी' कार्यालय, ४१ ए, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

(१२) व्यापार कानून—६ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री नेमिचन्द्र गोयल; व्यापार सम्बन्धी कानून एवं सरकारी सूचनाओं का देने वाला यह साप्ताहिक अपने ढंग का अकेला है ; योग्य विद्वानों के लेख भी रहते हैं ; 'आयात-निर्यात', 'गल्ला' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; 'स्वतंत्रता विशेषाङ्क' भी सुन्दर निकाला है ; वा० मू० ६), प्रति =) ; प० देहली दरवाजा, आगरा।

१२. बालकोपयोगी

(क) बाल वर्ग : मासिक

(१) अंगूर के गुच्छे*—प० कटरा, प्रयाग।

(२) इंद्र धनुष*—अक्टूबर १९४७ से प्रकाशित, प्रधान सं० श्री अशोक साहित्यालंकार, सं० सर्वश्री हजारीलाल श्रीवास्तव 'अधीर', केशवप्रसाद 'विद्यार्थी'; रंगीन स्याही में छपा, अच्छी सामग्री देता है; वा० मू० ४॥), प० इंद्रधनुष कार्यालय, हंसापुरी, नागपुर।

(३) किलकारी—मार्च १९४८ से प्रकाशित; सं० श्री दीपचन्द्र छंगाणी; बाल मनोविज्ञान के आधार पर बालोपयोगी सामग्री जुटाता है; छपाई सफाई सुन्दर; मूल्य कुछ अधिक जान पड़ता है; वा० मू० ५), प्रति ।); किलकारी कार्यालय, नरसिंह दड़ा, जोधपुर।

(४) खिलौना—२२ वर्ष से प्रकाशित, सं० श्री रघुनन्दन शर्मा; छोटे बच्चों के लिये इससे सुन्दर, सस्ता मासिक पत्र और कोई नहीं है; रंगीन छपाई, मोटे टाइप में छपा, प्रत्येक लेख चित्रों से युक्त; प्रसिद्ध बाल-साहित्य के लेखकों का सहयोग प्राप्त है; वा० मू० २॥), प्रति ।), पृष्ठ ३२; प० नया कटरा, प्रयाग।

(५) चमचम—१८ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय सं० सर्वश्री विश्वप्रकाश, श्रीप्रकाश, 'विमलेश'; सुन्दर टाइटिल रंगीन छपाई, मोटे टाइप में छपा यह पत्र छोटे बच्चों के लिये अच्छा है; 'दुनिया की सैर' स्थायी स्तम्भ है, वा० मू० २॥), प्रति ।), पृष्ठ २४; प० कला प्रेस, प्रयाग।

(६) तितली*—सं० श्री 'व्यथितहृदय'; वा० मू० ३), प्रति ।), प० 'तितली कार्यालय, २३२/ए. कटरा, प्रयाग।

(७) बालबोध*—अक्टूबर १९४४ से प्रकाशित; सं० श्री श्रीनाथसिंह; बच्चों का सचित्र मासिक ; वा० मू० ४॥), प्रति ।≈) ; प० दीदी कार्यालय, कटरा, प्रयाग।

(८) बालभारती*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री मन्मथनाथ गुप्त ; ८ से १४ वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिये उत्तम मानसिक भोजन देती है ; बहुत सुन्दर पत्रिका है ; यह भी भारत सरकार द्वारा प्रकाशित की जाती है; वा० मू० ३), प० पब्लिकेशन्स डिवीजन, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली।

(९) बालविनोद*—१५ वर्ष से प्रकाशित; सं० श्री सरस्वती डालमियाँ; बालकों की रुचि के अनुकूल ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रदान करता है; वा० मू० ३) प० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ।

(१०) बालसखा—जनवरी १९१७ के तीसरे हफ्ते में इसका जन्म हुआ, श्री बद्रीनाथ भट्ट प्रथम सम्पादक थे ; तदनन्तर सर्वश्री लल्लीप्रसाद पाण्डेय, कामताप्रसाद गुरु, देवीदत्त शुक्ल, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' और श्रीनाथसिंह ने सम्पादन किया। १९४५ से पुनः श्री लल्लीप्रसाद पाण्डेय के सम्पादकत्व में निकल रहा है। लेखों का चयन बालकों की रुचि के अनुकूल मनोवैज्ञानिक ढंग पर किया जाता है, बालकों को स्वस्थ सामग्री देने वाला यह सर्व श्रेष्ठ पत्र कहा जा सकता है, 'पाठकों के पत्र' स्थायी स्तम्भ हैं ; छोटे बच्चों के लिये भी कुछ पृष्ठ रहते है, बाल और किशोरो का सन्धि-कारक पत्र है। आवरण आकर्षक व लेख सचित्र प्रकाशित होते हैं ; प्रति वर्ष नववर्ष विशेषांक भी २५०-३०० पृष्ठ का निकलता है जो अतिरिक्त मूल्य पर मिलता है ; बालकों की हस्तलिखित पत्रिकाओं का भी एक विशेषांक इसने निकाला था जो वस्तुतः अनुकरणीय प्रयत्न है। वा० मू० ४), प्रति ।≈), पृष्ठ ३४ ; प० इडियन प्रेस लि० प्रयाग।

(११) लल्ला*—सं० श्री 'शिक्षार्थी', वा० मू० ३), प्रति ।), प० लल्ला कार्यालय, बाई का बाग, प्रयाग।

(१२) शिशु*—१९१६ से प्रकाशित ; संस्था० स्व० श्री सुदर्शनाचार्य;

छोटे बच्चों का मोटे टाइप में छपा सुन्दर सचित्र मासिक है, लेख आदि रोचक रहते हैं, सोहनलाल द्विवेदी भू० पू० सम्पादक रह चुके हैं ; वा० मू० २॥), प० शिशु प्रेस, प्रयाग।

(१३) शेर बच्चा*—सं० श्री यशोविमलानन्द ; वा० मू० ३), प्रति ।), प० कटरा, प्रयाग।

(१४) हमारे बालक*—१ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री रुद्रजी, दिनेश भैया ; ६ से १२ वर्ष की उम्र के लिये यह सचित्र पत्र सुयोग्य सम्पादक द्वारा प्रकाशित हो रहा है। मनोविज्ञान के आधार पर बच्चों के लिये सुरुचिपूर्ण लेख रहते हैं ; प० नई सड़क, दिल्ली।

(१५) होनहार—मार्च १६४४ को पहली बार पाक्षिक रूप में प्रकाशित हुआ, फिर ५ अंक निकल कर बन्द होगया , अब जुलाई १६४७ से पुनः प्रकाशित ; सं० श्री प्रेमनारायण टण्डन ; बच्चों के लिये हास्य और विनोदपूर्ण मनोरंजक सामग्री का विशेष ध्यान रखता है। वा० मू० ३), प० विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ।

पाक्षिक

(१६) भाग्योदय—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री टी. कृष्णा स्वामी; एक अहिन्दी भाषाभाषी द्वारा बच्चों के लिए यह सद्प्रयत्न सराहनीय है ; उपयुक्त सामग्री सरल भाषा में है , वा. मू. ५॥), प्रति ।), पृष्ठ २४ ; प० भाग्योदय कार्यालय, गोल बाजार, जबलपुर।

साप्ताहिक

(१७) होनहार*—हाल ही में प्रकाशित , सं० श्री सूर्यदेव अनुरागी ; मासिक पत्र के आकार मे प्रकाशित बच्चों का यह साप्ताहिक निकलना सम्भवतः सर्वत्र नूतन प्रयत्न है , प० २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।

(ख) किशोरवर्ग : मासिक

(१) किशोर—अप्रैल १६४८ से प्रकाशित ; संचा० श्री रामदहिन

मिश्र ; सं० श्री रघुवंश पाण्डेय ; किशोरों का मानसिक विकास और चरित्र निर्माण ही प्रमुख ध्येय है , 'उपकथांक', 'रवीन्द्र अङ्क', 'विक्रमांक', 'कालिदासाङ्क' तथा 'गांधी अंक' आदि अच्छे विशेषांक निकले हैं ; लेखकों को पारिश्रमिक नहीं दिया जाता , पत्र संयत सामग्री से परिपूर्ण ध्येयानुकूल निकल रहा है ; वा० मू० ४), प्रति ।≈) , प० बाल शिक्षा समिति, बांकीपुर, पटना ।

(२) कुमार*—१६४४ से प्रकाशित ; सं० श्री राजमल लोढ़ा ; मोटे टाइप में छपा यह पत्र बालकों के लिए अच्छी सामग्री प्रदान करता है ; वा० मू० ३) ; प० कुमार कार्यालय, मन्दसौर (ग्वालियर)

(३) तरुण—६ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री कृष्णनन्दनप्रसाद ; मुख्य रूप से युवकों और तरुणों का साहित्यिक पत्र है ; उर्दू की गजलें भी प्रकाशित होती हैं , लेख तथा कहानियाँ भी रोचक व शिक्षाप्रद रहती हैं ; वा० मू० ६), प्रति ।।), प० तरुण कार्यालय, इलाहाबाद ।

(४) झरना—नवम्बर १६४६ से प्रकाशित ; सं० श्री नेमीचन्द्र जैन 'भावुक' , कुमारोपयोगी श्रेष्ठ पत्र है ; बाल साहित्य के लेखकों का परिचय भी छपता है ; बाल पहेली पुरस्कृत होती है ; 'स्वतन्त्रता अङ्क' विशेषांक भी अच्छा निकला है ; कुछ अंश अँग्रेजी में भी छपता है ; वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ५० ; प० झरना कार्यालय, जोधपुर ।

(५) बालक—१६२७ से प्रकाशित ; सं० श्री आचार्य रामलोचनशरण ; आदि सं० श्री रामवृक्ष बेनीपुरी रहे और फिर श्री शिवपूजनसहाय अच्युतानन्द दत्त आदि ने भी सम्पादन किया ; पहले यह लहेरियासराय से प्रकाशित होता था ; युवकों का कदाचित सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र ; 'बालकों का वाचनालय' स्तम्भ चयनिका है ; 'बालक' में लिखने वाले आज के श्रेष्ठ लेखक बन गए हैं; 'एण्ड्रूज अङ्क' तथा विशेषरूप से भारतेन्दु अर्द्ध शताब्दि पर निकला विशेषांक उल्लेखनीय हैं, ; वा० मू० ४) ; प० पुस्तक भण्डार, बांकीपुर, पटना ।

(६) बाल सेवा—जून १६४८ से प्रकाशित ; सं० श्री लोकेश्वरनाथ सक्सेना ; सह० सं० धर्मदेव, केशवचन्द्र हजेला, सर्वेश्वरनाथ तथा भानुप्रताप अवस्थी ; बाल-मनोविज्ञान से सम्बन्धित लेख अच्छे रहते हैं, आर्ट-पेपर पर छपे चित्र भी रहते हैं। कुछ पृष्ठ 'बालविभाग' के हैं जो मोटे टाइप में रंगीन स्याही से छपे रहते हैं ; बच्चों से सम्बन्धित एक-एक आदर्श वाक्य प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित रहता है ; 'बालकनजी बारी' की रिपोर्ट भी इसमें प्रकाशित होती है। नूतन प्रयत्न अभिनन्दनीय है, भविष्य में आशा है अपना सुरक्षित स्थान बना लेगा ; वा० मू० ३), प्रति ।) ; प० गांधीनगर, कानपुर।

---

१३. स्त्रियोपयोगी

त्रैमासिक

(१) महिलाश्रम पत्रिका—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री भवानीप्रसाद मिश्र ; महिला आश्रम, वर्धा की मुख-पत्रिका ; सेवाग्राम की प्रवृत्तियों पर भी लेख रहते हैं। गांधीवादी विचारों की परिपोषक पत्रिका ; हाथ कागज पर छपती है ; महिलोपयोगी गंभीर लेख रहते हैं ; सम्पादक-मण्डल में सर्वश्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, कमला तायी लेले, कृष्णाबहन नाग, दामोदर मूँदड़ा, आनन्दीलाल तिवारी हैं ; वा० मू० ४॥), प्रति १।), पृष्ठ ७८ ; प० वर्धा।

मासिक

(२) आर्यमहिला*—१६१८ से प्रकाशित ; महिलाओं की सबसे पुरानी पत्रिका ; इससे स्वस्थ मानसिक सामग्री मिलती है। गृहोपयोगी लेख रहते हैं ; प० जगतगंज, बनारस।

(३) कन्या*—हाल ही में प्रकाशित, सं० सर्वश्री 'अशोक' बी. ए., केशवप्रसाद विद्यार्थी ; कन्याओं के मनोविज्ञान को ऊँचा उठाने वाली सामग्री प्रकाशित होती है ; वा० मू० ३), प्रति ।) ; प० नारायणगढ़ (मालवा)

(४) गृहिणी—जनवरी १६४८ से प्रकाशित ; सं० मण्डल में श्रीमती राधादेवी गोयनका, महाबलकुमारी राम, शारदादेवी शर्मा, शकुन्तलादेवी खरे हैं, प्रबन्ध सं० श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा ; महिलाओं में जीवन और जागृति का संचार कर उन्हें आदर्श गृहिणी और वीर जननी बनाना ही उद्देश्य है। 'गांधी पुण्य स्मृति अङ्क' (पृष्ठ ६८) हमारे सामने है ; अनेक रंगीन चित्रों से सुसज्जित, बापू के जीवन और मिशन सम्बन्धी लेखों से भरपूर है ; आशा है पत्रिका हिन्दी जगत में सम्मान प्राप्त करेगी ; वा० मू० ६), प्रति ।।) ; प० नागपुर।

(५) ज्योत्स्ना*—हाल ही में प्रकाशित ; सं० श्री शिवेन्द्रनारायण ; स्त्रियोपयोगी काफी सामग्री रहती है, वा० मू०, ८) प्रति ।॥) ; प० कदमकुआँ पार्क, पटना ।

(६) जननी—४ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री देवदत्त शास्त्री, शचीरानी गुर्टू , स्त्रियों की सांस्कृतिक पत्रिका है ; स्वास्थ्य सम्बन्धी व गृहोपयोगी लेख अच्छे रहते हैं ; 'घर की बातें', 'बालभारती', 'बिखरे फूल', 'अन्नपूर्णा भण्डार' आदि स्थायी स्तम्भ हैं । वा० मू० ५), पृष्ठ ३२ , प० जननी कार्यालय, नया बेहराना, प्रयाग ।

(७) जागृत माहिला*—फरवरी १९४८ से प्रकाशित , सं० श्री 'शलभ' तथा श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय , महिला मण्डल, उदयपुर की मुख-पत्रिका; प्रथमांक 'माता कस्तूरबा अङ्क' निकला , वा० मू० ६) , प० उदयपुर ।

(८) जैन महिलादर्श—२७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्रीमती चन्दाबाई , सह० सं० व्रजबालादेवी ; स्त्रियोपयोगी साधारण पत्रिका है, 'स्वाध्याय' तथा 'स्वास्थ्य' विषयक स्तम्भ भी हैं ; जैन समाज की विज्ञप्तियाँ ही अधिक रहती हैं ; वा० मू० ३॥), पृष्ठ ३० , प० महिलादर्श कार्यालय, कपाटिया चकला, चन्दाबाड़ी, सूरत ।

(९) दीदी—९ वर्ष से प्रकाशित, प्रधान सं० श्रीमती यशोवती तिवारी, प्रबन्ध सं० श्री श्रीनाथसिंह ; भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र पत्रिका , कविता, कहानियों आदि का चुनाव साहित्यिक दृष्टि से सुन्दर रहता है ; श्रीनाथसिंहजी के सम्पादन का शौर्य प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है ; 'विविध समाचार', 'नई किताबें', 'अपने विचार', 'प्रश्न पिटारी' आदि स्थायी स्तम्भ हैं । विदुषी महिलाओं की सम्पादिका-समिति भी है ; भाषा हिन्दुस्तानी ; कदाचित स्त्रियोपयोगी सर्वश्रेष्ठ पत्रिका इसे ही कहा जा सकता है ; इसका प्रसार भी बहुत है ; वा० मू० ६), प्रति ।) , पृष्ठ ६० ; प० दीदी कार्यालय, इलाहाबाद ।

(१०) नारी—सितम्बर १९४७ से प्रकाशित ; संरक्षिका श्रीमती

विजयलक्ष्मी पंडित; सं० कुमारी हरदेवी मलकानी; महिला जगत में सामाजिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करना तथा उनकी सामयिक समस्याओं का समाधान ही इसका उद्देश्य है; लेख उद्देश्यानुकूल अच्छे रहते हैं; उच्चशिक्षित स्त्रियों के लिए ही उपयोगी है; छपाई गेट अप सुन्दर; भविष्य उज्ज्वल है; वा० मू० ८), प्रति ।।।), पृष्ठ ६४; प० नारी कार्यालय, कमच्छा, बनारस।

(११) भारती—अगस्त १९४७ से प्रकाशित; संचा० तथा सं० डा० धनरानीकुँवर, सह० सं० श्री महिपालसिंह; लेखादि अच्छे रहते हैं; कहानियाँ ही अधिक छपती हैं; वा० मू० ३।), प्रति ।); प० एबट रोड़, लखनऊ।

(१२) मनोरमा—अप्रैल १९२४ से प्रकाशित; प्रारम्भ में श्री भक्त-शिरोमणि तथा श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' के सम्पादन मे निकली; ६ वर्ष के वाद प्रकाशन स्थगित हो गया; नवम्बर १९४७ से पुनः प्रकाशित; सं० श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी, श्री भक्तसज्जन; महिलोपयोगी पारिवारिक सचित्र पत्रिका है; इसमें सामाजिक लेख विशेषकर नारियों की समस्याओं को लेकर अधिक रहते हैं; श्री 'निर्मलजी' के समय में उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका थी; 'बच्चों की दुनियाँ', 'फव्वारे की छींट' आदि स्तम्भ सुन्दर हैं, जिनमें बाल-विषयक तथा अन्य विषयों पर उपयोगी लेख रहते हैं; कहाँनियाँ भी सुरुचिपूर्ण रहती हैं; 'होलिकांक' भी सुन्दर निकला था। वा० मू० ५।।) ; प० वेलवीडियर प्रेस, प्रयाग।

(१३) मोहिनी—जून १९४७ से प्रकाशित; संचा० श्रीमती गायत्रीदेवी वर्मा, भगवानदेवी पालीवाल; प्रबन्ध स० श्री रामदुलार शुक्ल; कहानियाँ अधिक रहती हैं, स्त्रियों की समस्याओं पर पाठकों का पृष्ठ स्तम्भ है; 'पुस्तक परिचय' स्तम्भ में समालोचना छपती है; वा० मू० ३), प्रति ।-); प० मोहिनी कार्यालय, फाफामाऊ कैसल, प्रयाग।

(१४) शान्ति—अक्टूबर १९३० से प्रकाशित; संचा० श्रीमती शान्ति

देवी ; सं० श्री वासुदेव वर्मा ; यह प्रारम्भ में लाहौर से ही निकलती थी पर अब पंजाब विभाजन के बाद दिल्ली से । 'परिवार की छाया में समाज के नवनिर्माण की प्रतीक' पत्रिका है ; पारिवारिक समस्याओं व समाज में स्त्रियों का स्थान तथा अन्य सामयिक समस्याओं पर लेख सुन्दर रहते हैं ; 'शान्ति परिवार' पृष्ठ मे पाठिकाओं के प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है ; ऐसी उपयोगी पत्रिका का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए ; वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ६२ , प० शान्ति-कार्यालय, पहाड़गंज, दिल्ली ।

पाक्षिक

(१५) क्षत्राणी—१ मई १९४८ से प्रकाशित ; सं० रामपाली भाटी 'प्रभाकर' ; जातीयता और वर्गवाद से दूर नारी जगत का उत्थान ही इसका उद्देश्य है ; 'अपनी रक्षा आप' की भावना जाग्रत करना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है ; इसमें केवल महिलाओं के ही लेखादि छपते हैं ; 'पाठिकाओं के पत्र' 'सौन्दर्य और स्वास्थ्य' स्थायी स्तम्भ हैं ; आशा है यह उन्नति करेगी ; वा० मू० ५) ; प० क्षत्राणी सेवा सदन, जोधपुर ।

१४. कला, संगीत व सिनेमा

(क) कला : त्रैमासिक

(१) कलानिधि*—चैत्र पूर्णिमा २००४ से प्रकाशित; सम्पादकमण्डल में सर्वश्री महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, हुमायूँ कबीर, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीचन्द्र, रविशंकर म० रावल, व्रजमोहन व्यास तथा रायकृष्ण-दास हैं; भारतीय कला एव संस्कृति संबंधी सचित्र पत्र; प्रति अंक में चार रंगीन तथा तीस सादे चित्र एवं डबल क्राउन अठपेजी के ६४ पृष्ठों की पठनीय सामग्री; वा० मू० १६), प्रति ५); प० भारत कला भवन, बनारस।

मासिक

(२) नृत्यशाला—हाल ही में प्रकाशित; सं० श्री 'सुधाकर'; नृत्य सम्बन्धी सचित्र, आर्ट कागज पर छपी आकर्षक पत्रिका; प्राचीन नृत्यकला को लेकर गवेषणापूर्ण लेख भी रहते हैं; लेखों पर पारिश्रमिक भी दिया जाता है; वा० मू० २४), प्रति २); प्रकाशक—श्री प्रभुलाल गर्ग, 'संगीत' कार्यालय, हाथरस (यू० पी०)।

(३) माला—हाल ही में प्रकाशित; सं० सुश्री कलावती देवी 'बच्ची'; सिलाई, कटाई, बुनाई, गृह-विज्ञान-कला, शिल्प शिक्षा की सचित्र पत्रिका; बेलबूटे, कसीदा कढ़ाई आदि सिखाया जाता है; अनेक रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित; गीत-स्वरलिपि भी रहती है; रागिनी से जानकार कराया जाता है, 'निजी पत्र' स्तम्भ में पाठिकाओं के पत्रोत्तर छपते हैं। यह अभिनव प्रयास अभिनन्दनीय है; वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ४०; प० नागरी प्रेस, दारागंज, प्रयाग।

(४) लेखक—१९३५ से प्रकाशित; दो वर्ष निकल कर प्रकाशन स्थगित होगया; अब १ जनवरी से पुनः प्रकाशित; सं० श्री 'भारतीय'; अपने विषय का एक मात्र पत्र; लेखन-कला संबंधी लेख ही छपते हैं; नवादित लेखकों के लिये बहुत उपयोगी पत्र है, वा० मू० ३), प्रति ।-), पृष्ठ १८; प० शारदा प्रेस, नया कटरा, प्रयाग।

(ख) संगीत : मासिक

(१) संगीत—१४ वर्ष से प्रकाशित; संस्था० श्री प्रभुलाल गर्ग; सं० श्री ज० दे० पत्की; सिनेमा सबंधी तथा अन्य पक्के रागों की स्वर लिपियों तथा वाद्य विषयक शिक्षा के लेख रहते हैं; रेडियो संगीत स्तम्भ भी है; 'नृत्य अंक' आदि कई विशेषाङ्क भी निकले हैं। वा० मू० ५=), पृष्ठ ४०, प० संगीत कार्यालय, हाथरस (यू० पी०)।

(२) संगीत कलाविहार—दिसम्बर १९४७ से प्रकाशित; सं० प्रो० बी० आर० देवधर; सह० सं० श्री विनयचन्द्र मौद्गल्य, प्राणलाल सहा, संगीत विषयक उपयोगी लेख रहते हैं, रागों की स्वरलिपियों का निर्देश भी इसमें रहता है; कई लेख मराठी से अनूदित रहते हैं, 'पाठकों के पत्र' स्तम्भ भी हैं। इसका मराठी संस्करण भी छपता है; वा० मू० ६), प्रति ।।), पृष्ठ ४०; प० 'संगीत कला विहार' कार्यालय, मोदी चेम्बर्स, फ्रेंच ब्रिज कॉर्नर, बम्बई नं० ४।

पाक्षिक

(३) सारंग—१३ वर्ष से प्रकाशित; सं श्री एस. एन. घोष; इसमें ऑल इण्डिया रेडियो का कार्य-क्रम प्रकाशित होता है तथा वहाँ से प्रसारित कतिपय लेख भी संगृहीत होते हैं; ग्राहक १२००० वा० मू० ७), प्रति ।-); प० ऑल इण्डिया रेडियो, कर्जन रोड, नई दिल्ली।

(ग) सिनेमा : मासिक

(१) अभिनय*—अगस्त १९३८ से प्रकाशित; संचा० श्री विश्वनाथ बूबना; सं० सर्वश्री विश्वनाथ बूबना, रणधीर साहित्यालंकार; कला की

उपयोगिता और विशेषत: सिनेमा के लिए प्रचार और आन्दोलन ही उद्देश्य है ; प्रत्येक दिवाली पर नव वर्षाङ्क भी निकलता है ; हिन्दी के सिनेमा-पत्रों में सर्वाधिक प्राचीन ; वा० मू० ६), प्रति ।।) ; प० ३५ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता ।

(२) आदर्श*—सं० श्री शान्तअरोरा ; वा० मू० ६) प्रति ।।) ; प० आदर्श कार्यालय, ७, कानर चैम्बर्स, शिवाजी पार्क ; बम्बई २८ ।

(३) कौमुदी—६ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री चन्द्रधर ; सिनेमा सम्बन्धी चित्र ही अधिक रहते हैं ; 'बाल-कौमुदी' के पृष्ठ बच्चों के लिए सुरक्षित हैं ; लेख आदि भी अच्छे रहते हैं । वा० मू० ६), प्रति ।।।) ; प० ७, दरियागंज, दिल्ली ।

(४) दीपशिखा—सितम्बर १९४७ से प्रकाशित ; सं० श्री देवेन्द्र ; 'सितारों के सन्देश', 'बौड़म की झोली' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; सिनेमा सम्बन्धी लेख अच्छे रहते हैं ; एकांकी, कहानी, गीत, कविताएँ भी छपती हैं ; वा० मू० ५), प्रति ।।), पृष्ठ ५० ; प० पाटलीपुत्र प्रकाशन मंदिर, पटना ।

(५) रजतपट*—सं० श्री के. पी. अग्रवाल ; प० १७६, बड़ा बाजार, महू (मध्यभारत) ।

(६) रंगभूमि—७ वर्ष से प्रकाशित ; सं० आचार्य मंगलानंद गौतम ; पुस्तकाकार प्रकाशित यह सचित्र पत्रिका है ; 'सम्पादक की डाक' स्तम्भ के अन्तर्गत पाठकों के पत्र का उत्तर मार्मिक रहता है ; सिनेमा सम्बन्धी समाचार ही अधिक रहते हैं ; वा० मू० १०), प्रति ।।।) ; प० रंगभूमि प्रिंटिंग प्रेस, १४१ शिवाजी पार्क, बम्बई २८ ।

(७) रसभरी—६ वर्ष से प्रकाशित ; संचा० आचार्य मंगलानंद गौतम ; सं० श्री देवेन्द्रकुमार, सह० सं० श्री मंगलदेव शर्मा ; सिनेमा संबंधी समाचारों के अतिरिक्त एक-दो कहानी भी रहती है ; वा० मू० ५), प्रति ।≈), पृष्ठ ५० ; प० रसभरी कार्यालय नई सड़क, दिल्ली ।

(८) सचित्र रंगभूमि—कुछ वर्षों से प्रकाशित ; सं० धर्मपाल गुप्ता व भास्कर ; 'सितारों की दुनियाँ में' स्थायी स्तम्भ है ; प्रतियोगिता पहेली भी रहती है ; सिनेमा सम्बन्धी आलोचनाएँ की जाती है । 'मजनू की चिट्ठी' में चुहुल रहती है ; सम्पादक की डाक में प्रश्नोत्तर, ग़जलें और गीत विशेषतया सिनेमाओं के रहते हैं । प्रति ।) ; प० दिल्ली ।

(९) सिने-तस्वीर—२ वर्ष से प्रकाशित ; सं० सर्वश्री रामचन्द्रप्रसाद आँसू , श्रीकृष्ण खत्री ; इसमें एकांकी नाटक भी रहते हैं । वा० मू० ६, प्रति ॥), पृष्ठ ६० ; प० ३७४, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

(१०) सिनेमा—अप्रैल १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री भास्कर, सह० सं० श्री सुरेशचन्द्र मिश्र साहित्यालंकार । कहानियाँ भी प्रकाशित होती हैं ; 'बम्बई की चिट्ठी' प्रधान स्तम्भ है ; सिनेमा विषयक प्रश्नों का उत्तर भी रहता है ; वा० मू० ६), प्रति ॥) , प० १७/११ महात्मा गांधी रोड, कानपुर ।

पाक्षिक

(११) नवचित्रपट—जनवरी १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री सत्येन्द्र श्याम ; 'सिनेमा समाचार' स्तम्भ में नए चित्रों की सूचना, 'मधुचक्र' में फिल्मी गाने तथा 'जुहू तट से' स्तम्भ के अन्तर्गत हास-परिहास छपता है ; इसके अतिरिक्त 'हमारी डाक' में प्रश्नोत्तर व कहानी भी रहती है । वा० मू० ६), प्रति ।=), पृष्ठ ५४ ; प० ६२, दरियागंज, दिल्ली ।

साप्ताहिक

(१२) चित्रपट*—१६ वर्ष से प्रकाशित ; स० श्री सत्येन्द्र श्याम ; ग्राहक १०,००० ; प० चित्रपट कार्यालय, २३, दरियागंज, दिल्ली ।

(१३) तारा*—सं० धर्मपाल गुप्त ; वा० मू० १२), प्रति ।) , प० तारा कार्यालय, कूँचा सेठ दरीबा, दिल्ली ।

(१४) मनोरंजन—८ वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी ; लेख व कहानियाँ अच्छे रहते हैं ; 'बाल-मनोरंजन' शीर्षक के अन्तर्गत बच्चों की पहेलियाँ भी छपती हैं। वा० मू० ६), प्रति =) ; प० मनोरंजन प्रेस, ६७ बाजल पाड़ा लेन, सलकिया, हवड़ा।

(१५) रिमझिम—१५ सितम्बर १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री देवेन्द्र, हरेन्द्र ; इसमें सिनेमा के गीत भी आते हैं ; 'सम्पादकीय डाक' स्तम्भ भी है। वा० मू० ६), प्रति =) । प० ६, डी गरदनी बाग, पटना।

---

१५. विविध

(क) कानून : मासिक

न्याय बोध—गत वर्ष से प्रकाशित ; सं० श्री नरहरि बलवंत चंदूरकर; इसमें केन्द्रीय तथा धारा सभाओं के कानून और नियम तथा विलायत की प्रीवी कौंसिल, फेड्रेलकोर्ट, नागपुर, इलाहाबाद, मद्रास, बंगाल आदि हाईकोर्टों के फैसले भी प्रकाशित होते हैं ; यह अपने विषय की हिन्दी में पहली ही पत्रिका है, आज जब कि समाज का सारा जीवन कानून मय बनता चला जारहा हैं, जन साधारण के लिये हिन्दी में ऐसी जानकारी देने के लिए यह परमोपयोगी है, इसका मराठी संस्करण भी प्रकाशित होता है वा० मू० ८) प्रति १), पिछली प्रति २), प० तिलकरोड, नागपुर।

(ख) चयन-पत्र : मासिक

(१) राजस्थान क्षितिज—अप्रेल १९४५ से प्रकाशित ; संचा० व सं० श्री कृषि जैमिनी कौशिक ; राजस्थान प्रान्त की प्रवृत्तियों के अतिरिक्त इसमें अधिकांश लेख श्रेष्ठ पत्रों से उद्धृत रहते हैं, लेखों का चयन सुन्दर रहता है, हिन्दी भाषा का यह पहला 'डाइजेस्ट' है, इसका प्रचार वांछनीय है। वा० मू० १०), प्रति १), पृष्ठ ६०, प० राजस्थान क्षितिज प्रेस, नरेन्द्र भवन, अलवर।

(२) सौरभ—अगस्त १९४८ से प्रकाशित ; सं० श्री लक्ष्मीकान्त मुक्त ; सह० सं० श्री पी० डी० जैन ; विश्वसाहित्य का संचय-पत्र : राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर देशी और विदेशी पत्रिकाओं के विशेष लेख अनूदित रहते हैं ; प्रयास अभिनन्दनीय है ; प्रामाणिक अनुवादकों के लेख रहने से उपयोगिता और विषय की महत्ता और भी बढ़ेगी, वा० मू० ५), प्रति ।।) पृष्ठ ७५ ; प० सौरभ कुटीर, नई सड़क, दिल्ली।

(ग) रेलवे तथा यातायात : मासिक

रेलवे समाचार—फरवरी १९४८ (वसंत पंचमी सं० २००४) से प्रकाशित; सं० श्री ब्रजबिहारीलाल गौड़; अंग्रेजी में 'रेलवे वर्कर' नाम से प्रयाग से एक पत्र गत आठ वर्षों से इन्हीं के सम्पादन में प्रकाशित होता रहा है; अब हिन्दी में प्रकाशित; पत्र का उद्देश्य रेलवेकर्मचारियों को लाभप्रद सुझाव देना, उनमें आये भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयत्न करना तथा रेलवे मजदूरों, यात्रियों और रेल से काम लेने वाले व्यापारी वर्ग की कठिनाइयों को दूर कराने का प्रयत्न करना है, वास्तव में इसका प्रकाशन अभूतपूर्व और अभिनन्दनीय है। वा० मू० ४), प्रति ।=), पृष्ठ ३२; प० १७६ बेरहना, इलाहाबाद तथा पो० रामबन वाया सतना (सी. पी.)

(घ) द्वैभाषिक : मासिक

नया हिन्द—जनवरी १९४५ से प्रकाशित, सं० सर्वश्री ताराचन्द, भगवानदीन, मुजफ्फरहसन, विश्वम्भर नाथ, सुन्दरलाल। हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी (प्रयाग) का मुख-पत्र, इसमें आधे पृष्ठ में लेख व कविता नागरी लिपि में रहती हैं तथा दूसरी ओर आधे पृष्ठ में फारसी लिपि में लिखे रहते हैं। इस प्रकार हिन्दुस्तानी भाषा को प्रचारित किया जाता है, दोनों तरफ लेख एक ही होता है, यहाँ तक कि लेखकों के नामों का भी उर्दू अनुवाद छपता है, मोटे टाइप में छपाई होती है, लेख साधारणतः रुचिप्रद, शिक्षापूर्ण एवं सरल भाषा में लिखे रहते हैं। वा० मू० ६) प्रति ॥=), पृष्ठ ६८, प० ४८, बाई का बाग, इलाहाबाद।

(ङ) सर्वविषयक : मासिक

जीवन विज्ञान—अप्रैल १९४६ से प्रकाशित; सं० श्री चन्द्रराज भण्डारी; जीवनोपयोगी सर्वांगीण साहित्य का पत्र, नारी समस्या, वनस्पति विज्ञान, चिकित्सा, आरोग्य, साहित्य, संस्कृति, शासन, कृषि, शिक्षा, धर्म, कला आदि सभी विषयों पर उपयोगी लेख रहते हैं; यह अपने ढंग का

निराला है ; अपने सुयोग्य सम्पादक के अधीन उन्नति करेगा, ऐसी आशा है ; 'मासिक घटना चक्र' आदि स्थायी स्तम्भ हैं ; क्रियात्मक राजनीति से सम्बन्धित लेख इसमें नहीं छपते ; वा० मू० १०), प्रति १) ; प० भानपुरा, इन्दौर।

(च) परीक्षोपयोगी : पाक्षिक

(१) विद्या*—(प्रथम खण्ड) २० नवम्बर १६४७ से प्रकाशित ; नागपुर विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा के १६२५ से १६४७ तक के प्रश्न-पत्रों का सभी मुख्य विषयों (हिन्दी, मराठी, गणित, भूगोल, नागरिकता) का उत्तर रहता है ; मराठी संस्करण भी छपता है ; एक अंक में पृष्ठ १० ; वा० मू० १०), पा० सीता वर्डी, नागपुर।

(२) विद्या—(द्वितीय खण्ड) २० नवम्बर १६४७ से प्रकाशित ; अजमेर बोर्ड की इंटर परीक्षा के विषय में (अंगरेजी, हिन्दी, मराठी, अर्थ-शास्त्र, तर्क शास्त्र और नागरिकता) पर विवेचक प्रश्नोत्तर रहते हैं। एक अङ्क में पृष्ठ ६, वा० मू० ६), इसका मराठी संस्करण भी निकलता है ; प० सीतावर्डी, नागपुर।

---

१६. विदेशों के हिन्दी-पत्र

श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

भारतवर्ष में ही अंग्रेजी भाषा के अखबारों को जितना महत्त्व दिया जाता है उतना हिन्दी के समाचारपत्रों को नहीं। फिर भी विदेशों में जहाँ अंग्रेजी आदि का अखण्ड साम्राज्य रहा है—हिन्दी पत्रों के भी पनपने का अपना इतिहास है। वहाँ हिन्दुस्तान से निकलने वाले उच्च-कोटि के अनेक हिन्दी पत्रों की भी माँग है। 'कल्याण' (गोरखपुर) और 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका, (काशी) काफी तादाद मे विदेशों को रवाना होते हैं। श्री भवानीदयालजी सन्यासी द्वारा 'प्रवासी भवन अजमेर' से प्रकाशित होने वाला 'प्रवासी' भी मुख्य रूप से विदेशों के लिये ही छपता है। यह सुरुचिपूर्ण और प्रवासी भाइयों की समस्या को सुलझाने वाला हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में छपने वाला मासिक पत्र है। इसका मूल्य १०) रु० वार्षिक है।

नेटाल में जब महात्मा गांधी ने श्री भवानीदयालजी सन्यासी को बुला लिया था, तब गांधीजी के 'इण्डियन ऑपिनियन' में हिन्दी-विभाग भी रखा जाने लगा। उन दिनों हिन्दी पाठकों की वहाँ बहुत कमी थी। जितने थे, उन्होंने भी विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई। अन्ततोगत्वा यह विभाग बन्द कर देना पड़ा। पर सन्यासीजी का विश्वास था कि प्रवासी भारतीयों मे आत्माभिमान की जाग्रति एवं स्वदेशोन्नति विषयक संगठन के लिये हिन्दी को साधन बनाना जरूरी है। फलस्वरूप धार्मिक भावनाओं को आधार बना कर वे 'धर्मवीर' नामक साप्ताहिक का सम्पादन करने लगे। यह पत्र चार वर्ष तक चला। फिर श्री भवानीदयालजी ने 'हिन्दी' का सञ्चालन किया। अनेकों उपनिवेशों में इसका प्रचार हो जाने पर भी आर्थिक

स्थिति सुदृढ़ न हो सकी। वैसे भी राजनैतिक कार्यों में अधिक व्यस्त रहने के कारण 'हिन्दी' का प्रकाशन सन्यासीजी अधिक दिन न कर सके। बाद में वहाँ हिन्दी में 'राइजिंग सन्' निकला तो सही किन्तु 'असूर्या नाम ते लोकाः' में हिन्दी की उज्ज्वल ज्योति उचित रूप में आज तक भी न फैल सकी।

पोर्ट लुईस के 'मोरिशस इण्डियन टाइम्स' (साप्ताहिक) में भी हिन्दी की सामग्री रहती थी। आर्यसमाज के दृष्टिकोण को उपस्थित करने के लिये 'आर्य-वीर' और 'आर्य-पत्रिका' भी हिन्दी में प्रकाशित होने लगे। प्रतिक्रिया स्वरूप 'सनातन धर्मार्क' का भी उदय हुआ। पर उसे अस्त होने में भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। 'आर्य-पत्रिका' भी चोला बदल कर 'जाग्रति' कहलाने लगी। 'आर्य वीर' के दर्शन भी कुछ समय पहले तक होते थे। 'आर्यवीर जाग्रति' पं० लक्ष्मणदत्त के सम्पादन में २२, फर्कुतार स्ट्रीट, पोर्ट लुईस (मोरिशस) से निकलती है। मोरिशस आदि की ओर हिन्दी की चर्चा उन्नति-पथ पर है और यह प्रयास है कि उधर से किसी सुव्यवस्थित हिन्दी पत्र का सञ्चालन किया जाय।

सुवा में 'फीजी समाचार' का प्रकाशन आरम्भ से ही जन सेवा का लक्ष्य लेकर हुआ। यह समाचार प्रधान साप्ताहिक है। यह 'इण्डियन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी, मार्क्स स्ट्रीट, सुवा' की ओर से प्रकाशित होता है। आजकल इसके सम्पादक श्री रामखिलावन शर्मा हैं। इसमें पृष्ठ संख्या १२ से १६ तक रहती है। एक प्रति का मूल्य ३ पेनी और वर्ष भर का १० शिलिंग है। इसके कुछ पृष्ठ अंग्रेजी के लिये सुरक्षित रहते हैं। 'इण्डिया सेटलर्स' मे भी लीथो से मुद्रित हिन्दी विभाग रहता था। सम्प्रदायवादी नीति को लेकर 'वैदिक संदेश' और 'सनातन धर्म' मासिक रूप में निकले। पर दोनों ही चिरस्थायी न हो सके।

डॉ० बी० टी० नामक अंग्रेज ने अपने प्रेस से पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र के सम्पादकत्व में 'वृद्धि' नामक मासिक पत्र निकाला। कुछ समय तक यह

साप्ताहिक रूप में भी छपा, फिर भी अल्पप्राण ही रहा। इसी प्रकार श्री काशीराम के सम्पादकत्व में 'प्रवासिनी' (मासिक पत्रिका), श्री केशवराम द्वारा सम्पादित 'सनातन प्रकाशक' श्री ज्ञानीदास के सम्पादकत्व में 'ज्ञान' (मासिक) और श्री शमीम के सम्पादकत्व में 'जिल जाल' (मासिक) का हिन्दी संस्करण आदि भी प्रकाशित होते रहे और धीरे २ अदृश्य भी।

एक यूरोपियन एल्फोर्ड बार्कर का 'शान्तिदूत' (साप्ताहिक) आज १३ वर्षों से हिन्दी सेवा कर रहा है। वहाँ की अर्धशिक्षित जनता इस समाचार प्रधान पत्र को बहुत पसन्द करती है, किन्तु वैसे भाषा भाव और गेटअप के दृष्टिकोण से यह साधारण कोटि का ही है। इसमें अंग्रेजी भी रहती है। पृष्ठ संख्या और मूल्य 'फीजी-समाचार' के अनुसार ही हैं। यह 'फीजी टाइम्स प्रेस' सूवा से प्रकाशित होता है।

'राजदूत' ने भी कुछ दिनों तेजी रक्खी, पर महाप्राण न निकला। 'किसान' (साप्ताहिक) ने किसानों के हित की संरक्षा में आवाज बुलन्द की। पर कुछ समय बाद दलबन्दी के चक्कर में इस का प्रभाव क्षीण होगया। इन दिनों नियमित छपता भी नहीं। 'भारतपुत्र' और 'स्कूल जर्नल' (त्रैमासिक) भी अधिक दिनों प्रकाशित न हुए।

१६४२ में 'तारा' नामक मासिक पत्रिका श्री ज्ञानीदास के सम्पादकत्व में निकली। कुछ दिनों यह पाक्षिक भी रही और कुछ दिनों लीथो में ही छपी। आज-कल इसका त्रैमासिक संस्करण निकलता है। इस सुव्यवस्थित पत्रिका में साहित्यिक सामग्री के साथ ही राजनैतिक चेतना के विषय भी रहते हैं। प्रत्येक अङ्क करीब १०० पृष्ठ संख्या में पुस्तकाकार निकलता है। कागज अच्छा है। एक प्रति का ३ शिलिंग और वार्षिक मू० १२ शिलिंग है। 'तारा कार्यालय' नसीनू, सूवा (फीजी) से प्रकाशित होती है।

१६४५ के आस-पास श्री रामखेलावन शर्मा के सम्पादकत्व में 'प्रकाश' भी प्रकाशित हुआ था। यह साप्ताहिक पत्र था, पर शीघ्र ही अन्तर्धान होगया। श्री रामसिंहजी के सम्पादकत्व में 'इण्डियन टाइम्स' आज

भी हिन्दी और अंग्रेजी के संयुक्त मासिक संस्करण रूप में चालू है। पृष्ठ संख्या २४ और कागज रफ ही रहता है। कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है। वार्षिक मूल्य ६ शिलिंग और एक प्रति का ६ पेनी है। इण्डियन टाइम्स प्रेस, बक्स ३४१ सूवा (फीजी) से प्रकाशित होता है।

आर्य-पुस्तकालय की ओर से 'पुस्तकालय' नामक पत्र भी निकला था, कहने की आवश्यकता नहीं अचिरस्थायी निकला। हाँ, नान्दा से 'दीनबन्धु' आज कल भी निकलता है। सायक्लोस्टाइल पर छपता है और पेज भी चार ही रहते हैं। दीनबन्धु कार्यालय से प्रकाशित होता है। सम्पादक का नाम और मूल्य पत्र पर छापने की जरूरत नहीं समझी जाती।

इस प्रकार अनेक उपनिवेशों में हिन्दी-पत्रों के सांगोपांग विकास के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी है। आवश्यकता है सेवा भावी कार्यकर्ताओं की। यदि ट्रांसवाल, युगाण्डा, केनिया, जंजिबार, मेडागास्कर, रोडेसिया, मोजम्बिक आदि मे हिन्दी-पत्रों के प्रकाशन की व्यवस्था की जाए, तो वह शीघ्र ही फलवती हो सकती है। हमे तो विश्वास है कि स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी के आसीन होते ही विदेशों में भी हिन्दी पत्रों का तेजी से प्रकाशन और प्रचार अनिवार्य रूप से प्रगति करेगा।

परिशिष्ट १.

पत्रों का वर्णानुक्रम

अ

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ सं.
३३	अयोध्या-वासी पंच	सा.	फर्रुखाबाद	×
३४	अशोक	दै.	इन्दौर	४४
३५	अशोक	मा.	दिल्ली	११६
	आ			
३६	आकाशवाणी	सा.	जालंधर	६५
३७	आगामीकल	सा.	खण्डवा	८५
३८	„	सा.	इन्दौर	×
३९	आज	दै.	काशी	४४
४०	आजकल	मा.	दिल्ली	६७
४१	आजाद-सैनिक	सा.	पटना	×
४२	आजादहिंद	सा.	पटना	×
४३	आत्मधर्म	मा.	मोटाआंकडिया	५५
४४	आदर्श	सा	कलकत्ता	६१
४५	आदर्श	मा.	दिल्ली	६६
४६	आदर्श	मा.	बम्बई	१४०
४७	आदर्श-राजस्थान	सा.	भरतपुर	×
४८	आदिवासी	सा.	राँची	११७
४९	आनन्द	सा.	उरई (झांसी)	×
५०	आनन्द	मा.	जोलौन (यूपी)	×
५१	आनन्द	सा.	लखनऊ	×
५२	आर्य	सा.	अमृतसर	×
५३	आर्य-गौरव	मा.	जयपुर	×
५४	आर्य-जगत	सा.	जालंधर	५१
५५	आर्यबन्धु	मा.	नागपुर	×
५६	आर्यभानु	सा.	हैदराबाद	५२
५७	आर्यभानु	सा.	शोलापुर	×
५८	आर्य-महिला	मा.	बनारस	×
५९	आर्य-मार्तण्ड	सा.	अजमेर	५२
६०	आर्यमित्र	सा.	लखनऊ	५२
६१	आर्यावर्त	दै०	पटना	४४
६२	आर्यवीर-जागृति	सा.	मोरिशस	×
६३	आर्य सेवक	पा.	नागपुर	×
६४	आयुर्वेद	मा.	कलकत्ता	११९
६५	आयुर्वेद	त्रै.	काशी	११८
६६	आयुर्वेद पत्रिका	मा.	दिल्ली	११९
६७	आयुर्वेद सेवक	मा.	नागपुर	११९
६८	आयुर्वेद संदेश	मा.	अम्बाला	×
६९	आरती	मा.	पटना	६८
७०	आरती	मा.	नागपुर	×

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
७१	आरोग्य	मा.	गोरखपुर	११८
७२	आरोग्य-मित्र	मा.	लश्कर	×
७३	आलोक	सा.	नागपुर	१००
७४	आलोक	चा. मा.	जयपुर	७७
७५	आवाज	सा.	कलकत्ता	×
७६	आवाज	सा.	बम्बई	×
७७	आशा	मा.	इन्दौर	७६
७८	आशा	पा.	दिल्ली	८४
७९	आसरा	मा.	बनारस	×

इ-अं

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
८०	इतिहास	मा.	दिल्ली	६३
८१	इन्द्रधनुष	मा.	नागपुर	१२९
८२	इन्दौर समाचार	दै.	इन्दौर	४५
८३	उज्ज्वल	मा.	जलगाँव	७२
८४	उजाला	दै.	आगरा	४५
८५	उत्तराखण्ड समाचार	पा.	देहरादून	×
८६	उत्थान	सा.	जयपुर	८८
८७	उदय	मा.	दिल्ली	१२६
८८	उदय	मा.	काशी	×
८९	उद्यम	मा.	नागपुर	१२५
९०	उर्वशी	मा.	कानपुर	×
९१	उषा	मा.	जम्मू	७६
९२	ऊषा	सा.	गया	८५
९३	ऊषा	मा.	दिल्ली	×
९४	एकता	सा.	उज्जैन	६५
९५	ओसवाल	पा.	आगरा	५५
९६	अंकुश	सा.	खण्डवा	×
९७	अंकुश	सा.	फर्रुखाबाद	१०६
९८	अंगूर के गुच्छे	मा.	प्रयाग	१२६
९९	अंगरेजी शिक्षक	सा.	अलीगढ़	×

क

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१००	कनौज समाचार	मा.	कनौज	१०५
१०१	कन्या	मा.	नारायणगढ़	१३४
१०२	कबीर संदेश	मा.	सतरिक	६०
१०३	कबीर संदेश	मा.	काशी	×
१०४	कमल	मा.	दिल्ली	१०६
१०५	कर्मभूमि	सा.	लेण्ड्सडौन	१००
१०६	कर्मयोग	मा.	आगरा	५६
१०७	कर्मयोगी	पा.	प्रयाग	×
१०८	कर्मवीर	सा.	खण्डवा	१००
१०९	कल की दुनियाँ	सा.	जोधपुर	६४

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
११०	कलाधर	मा.	पाली	७१
१११	कलानिधि	त्रै.	काशी	१३८
११२	कल्पना	मा.	मेरठ	६८
११३	कल्पवृक्ष	मा.	उज्जैन	५७
११४	कल्याण	मा.	गोरखपुर	५८
११५	कहानियाँ	मा.	पटना	६८
११६	कान्यकुब्ज	मा.	लखनऊ	११३
११७	कामना	द्वै. मा.	कोटा	६६
११८	कामाञ्जलि	मा.	सिवनी	१२४
११९	कायाकल्प	मा.	सफीदों (जींद)	×
१२०	किरण	मा.	प्रयाग	×
१२१	किलकारी	मा.	जोधपुर	१२९
१२२	किशनगढ़ समाचार	मा.	किशनगढ़	×
१२३	किशोर	मा.	पटना	१३१
१२४	किसान	सा.	कानपुर	६६
१२५	किसान	सा.	फैजाबाद	×
१२६	किसान	सा.	भरतपुर	×
१२७	किसान सेवक	सा.	जोधपुर	×
१२८	किसान संदेश	सा.	कोटा	६६
१२९	कृषक	मा.	नागपुर	१२३
१३०	कृषक	सा.	बक्सर (बिहार)	×
१३१	कृषक बंधु	सा.	हरदोई (यू.पी.)	×
१३२	कृषक बंधु	पा.	हरसूद (सी.पी.)	×
१३३	कृषिसंसार	मा	बिजनौर	१२४
१३४	कुमाऊँ-राजपूत	मा.	अलमोड़ा	×
१३५	कुमार	मा.	मन्दसौर	१३२
१३६	कुमावत-क्षत्रिय	मा.	जयपुर	×
१३७	कुंकुम	मा.	कानपुर	×
१३८	कुकुंम	मा.	बम्बई	×
१३९	केसरी	मा.	गया	×
१४०	कौमुदी	मा.	दिल्ली	१४०
	ख			
१४१	खण्डेलवाल-जै. हि.	पा.	इन्दौर	५५
१४२	,, ,,	पा.	मदनगंज	५५
१४३	खत्री-हितैषी	मा	लखनऊ	११४
१४४	खादी-जगत	मा.	वर्धा	१२५
१४५	खिलौना	मा.	इलाहाबाद	१२९
	ग			
१४६	गढ़वाली	पा.	देहरादून	×
१४७	गवालियर-समाचार	—	गवालियर	×
१४८	गाँव	मा.	पटना	११०

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१४९	गाँव की-बात	पा.	प्रयाग	१११
१५०	गीताधर्म	मा.	बनारस	५७
१५१	गृहस्थ	सा.	गया	×
१५२	गृहिणी	मा.	नागपुर	१३४
१५३	गुमाश्ता	मा.	इन्दौर	×
१५४	गुरुकुल-पत्रिका	मा.	कांगड़ी	११२
१५५	गुरु-घटाल	सा.	बाली (यू.पी.)	×
१५६	गुरुदेव	मा.	अमरावती-(सी.पी)	×
१५७	गोपाल	सा.	दिल्ली	×
१५८	गोरखपुर-अखबार	सा.	गोरखपुर	×
१५९	गो शुभ-चिंतक	मा.	गया	×
१६०	गोसेवक	मा.	चौमूँ	१११
१६१	गोस्वामी	मा.	प्रयाग	×
१६२	गौतम-ब्राह्मण-पत्रिका	मा.	कानपुर	×
१६३	गौरव	मा.	हाथरस	७९
१६४	गौंडा-समाचार	—	गौंडा (सी.पी)	×
१६५	ग्रामदूत	सा.	हाथरस	×
१६६	ग्राम-संसार	अ. सा.	काशी	९०
१६७	ग्रामोड्योग	सा.	दिल्ली	१२७
१६८	ग्रामोद्योग-पत्रिका	मा.	वर्धा	१११
१६९	ग्राम्य-जीवन	सा.	जारखी	१११
१७०	ग्रंथालय	मा.	दिल्ली	१२९

च

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१७१	चतुर्वेदी	मा.	प्रयाग	×
१७२	चमचम	मा.	प्रयाग	१२४
१७३	चम्पारन	सा.	आरा (बिहार)	×
१७४	चम्पारन-समाचार	सा०	मोतीहारी (बिहार)	×
१७५	चलचित्र	मा०	कलकत्ता	×
१७६	चातक	सा०	परताबगढ़ (यू० पी०)	×
१७७	चाबुक	मा०	कलकत्ता	७४
१७८	चारण	त्रै०	जोधपुर	११३
१७९	चाँद	मा०	प्रयाग	७९
१८०	चिकित्सा-समाचार	सा०	कलकत्ता	×

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१८१	चिनगारी	मा०	मिर्जापुर	६६
१८२	चित्रपट	सा०	दिल्ली	१४१
१८३	चित्र-प्रकाश	मा०	दिल्ली	×
१८४	चित्रलोक	मा०	कलकत्ता	×
१८५	चित्रा	मा.	कलकत्ता	×
१८६	चित्रालय	—	बम्बई	×
१८७	चेतना	सा.	काशी	६५
१८८	चेतना	मा.	बम्बई	७६
१८९	चौपाल	मा.	हाथरस	१११

छ

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१९०	छत्तीसगढ़-केसरी	सा.	रायपुर	८८
१९१	छाया	सा.	कलकत्ता	×
१९२	छाया	मा.	इलाहाबाद	×
१९३	छाया	मा.	दिल्ली	१२४
१९४	छाया	सा.	बम्बई	×
१९५	छायालोक	सा.	बम्बई	×

ज

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
१९६	जनता	दै.	इन्दौर	४५
१९७	जनता	सा.	कलकत्ता	×
१९८	जनता	सा.	जययुर	६१
१९९	जनता	सा.	पटना	६१
२००	जनता	सा.	लखनऊ	×
२०१	जननी	मा.	प्रयाग	१३५
२०२	जनपथ	सा.	कलकत्ता	११०
२०३	जनमत	सा.	इटावा	×
२०४	जनयुग	सा.	बम्बई	६४
२०५	जनवाणी	मा.	बनारस	६६
२०६	जनशक्ति	दै.	पटना	४५
२०७	जनशिक्षक	मा.	पटना	×
२०८	जनसेवक	मा.	मेरठ	६६
२०९	जनार्दन	सा.	मथुरा	×
२१०	जन्मभूमि	दै.	जोधपुर	×
२११	जन्मभूमि	सा.	पटना	×
२१२	जन्मभूमि	दै.	जोधपुर	×
२१३	जयभारत	दै.	इन्दौर	×
२१४	जयभारती	मा.	पूना	७३
२१५	जयभूमि	दै.	जयपुर	४५
२१६	जयहिन्द	सा.	कोटा	६१
२१७	जयहिन्द	दै.	जबलपुर	४५
२१८	जयाजी-प्रताप	अ. सा.	लश्कर	१०६
२१९	जवान	सा.	दिल्ली	×
२२०	जागरण	दै.	कानपुर	४५
२२१	जागरण	दै.	झाँसी	४५
२२२	जागृत	दै.	जयपुर	४५
२२३	जागृत	दै.	गाजियाबाद	×
२२४	जागृत-	सा.	हलद्वानी	

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
२२५	जागृत-महिला	मा.	उदयपुर	१३५
२२६	जागृति	दै.	कलकत्ता	८५
२२७	जागृति	सा.	कलकत्ता	१०६
२२८	जागृति	सा.	मेरठ	×
२२९	जाट	सा.	दिल्ली	×
२३०	जाटवीर	मा.	अलीगढ़	×
२३१	जायसवाल	मा.	अलीगढ़	×
२३२	जिनवाणी	मा.	भोपालगढ़	५४
२३३	जीवन	सा.	अलीगढ़	×
२३४	जीवन	पा.	आगरा	×
२३५	जीवन	मा.	कलकत्ता	८०
२३६	जीवन	अ. सा.	लश्कर	६३
२३७	जीवन प्रभा	मा.	आगरा	×
२३८	जीवन विज्ञान	मा.	इन्दौर	१४४
२३९	जीवन-सखा	मा.	प्रयाग	११८
२४०	जीवन साहित्य	मा.	नई दिल्ली	८७
२४१	जैन	मा.	भावनगर	×
२४२	जैन उद्योग	मा.	नागपुर	१२६
२४३	जैन गजट	सा.	कलकत्ता	×
२४४	जैन गजट	सा.	दिल्ली	५५
२४५	जैन जगत	मा.	वर्धा	५४
२४६	जैन प्रचारक	मा.	दिल्ली	५४
२४७	जैन प्रभात	सा.	खण्डवा	×
२४८	जैन प्रभात	मा.	सागर	५४
२४९	जैन बोधक	पा.	शोलापुर	५५
२५०	जैन बन्धु	सा.	कलकत्ता	×
२५१	जैन महिलादर्श	मा.	सूरत	१३५
२५२	जैनमित्र	सा.	सूरत	५५
२५३	जैन सिद्धान्त भास्कर	अ. वा.	आरा	६३
२५४	जैन संदेश	सा.	आगरा	५६
२५५	ज्योति विज्ञान	मा.	मंहू	१२३
२५६	ज्योत्स्ना	मा.	पटना	१३५
	झ			
२५७	झरना	मा.	जोधपुर	१३२
२५८	झाड़खण्ड	सा.	रांची	×
	त			
२५९	तत्व	मा.	कलकत्ता	×
२६०	तरुण	मा.	इलाहाबाद	१३२
२६१	तरुण जैन	मा.	कलकत्ता	५४

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
२६२	तरंग	पा.	काशी	७५
२६३	तस्वीर	सा.	कलकत्ता	×
२६४	ताजातार	सा.	आगरा	१०७
२६५	तारा	मा.	दिल्ली	×
२६६	तारा	मा.	फौजी	१४८
२६७	त्यागभूमि	मा.	अजमेर	८८
२६८	त्यागी	मा.	मेरठ	११४
२६९	तिजारत	सा.	पटना	१२७
२७०	तितली	मा.	प्रयाग	१२६
२७१	तिरहुत-समाचार	सा.	मुजफ्फरपुर	१०७
२७२	तूफान	सा.	बम्बई	×
२७३	तेजप्रताप	सा.	अलवर	११६

द

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
२७४	दक्खिनी-हिन्द	मा.	मद्रास	७३
२७५	दयानन्द-सन्देश	मा.	नई दिल्ली	५१
२७६	दरबार	दै.	अजमेर	४५
२७७	दलित-प्रकाश	सा.	कानपुर	११०
२७८	दादूसेवक	मा.	जयपुर	६०
२७९	दिगम्बर-जैन	मा.	सूरत	५४
२८०	दीदी	मा.	प्रयाग	१३५
२८१	दीपशिखा	मा.	पटना	१४६
२८२	दृष्टिकोण	मा.	पटना	७२
२८३	दुनिया	सा.	दिल्ली	×
२८४	दूतपत्रिका	मा.	प्रयाग	×
२८५	देशदर्शन	मा.	प्रयाग	×
२८६	देशदूत	सा.	प्रयाग	८५
२८७	देहात	सा.	पटना	×
२८८	देहाती	सा.	आगरा	११२
२८९	देहाती	मा.	जबलपुर	×
२९०	देहाती	सा.	मेरठ	×
२९१	दैनिक-पुकार	दै०	इन्दौर	×
२९२	दैनिक-सन्देश	दै०	इन्दौर	४६

ध

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
२९३	धन्वन्तरि	मा.	विजयगढ़	१२०
२९४	धर्मदूत	मा.	सारनाथ	५६
२९५	धूपछाँह	मा.	कानपुर	६६
२९६	ध्वज	सा.	मन्दसौर	५६

न

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
२९७	नई-कहानियाँ	मा.	इलाहाबाद	६६
२९८	नईतालीम	मा.	सेवाग्राम	७६
२९९	नईदुनिया	दै०	इन्दौर	४६
३००	नन्दिनी	मा.	पटना	१११

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
३०१	नयाकदम	मा.	दिल्ली	६६
३०२	नयाजीवन	मा.	सहारनपुर	८०
३०३	नया युग	सा.	फरुखाबाद	६१
३०४	नया युग	मा.	लखनऊ	६७
३०५	नयाराज-स्थान	सा.	अजमेर	१०१
३०६	नयासमाज	मा.	कलकत्ता	६६
३०७	नयासंसार	सा.	कानपुर	×
३०८	नयासंसार	सा.	भोपाल	८६
३०९	नयासंसार	सा.	सीतापुर यू.पी.	×
३१०	नयासंसार	सा.	मथुरा	×
३११	नयाहित	मा.	एटा	×
३१२	नयाहिन्द	मा.	इलाहाबाद	१४४
३१३	नया-हिन्दुस्तान	सा.	काशी	६१
३१४	नव चित्र-पट	पा.	दिल्ली	१४१
३१५	नवजीवन	सा.	उदयपुर	१०१
३१६	नवजीवन	सा.	नागपुर	×
३१७	नवजीवन	दै.	लखनऊ	४६
३१८	नवज्योति	सा.	अजमेर	१०१
३१९	नवज्योति	दै.	अजमेर	४६
३२०	नवप्रभात	दै.	लश्कर	४६
३२१	नवभारत	दै.	दिल्ली	४६
३२२	नवभारत	सा.	बम्बई	१००
३२३	नवयुग	सा.	दिल्ली	८६
३२४	नवयुग-सन्देश	सा.	भरतपुर	१०१
३२५	नवयुवक	सा.	इन्दौर	×
३२६	नवराष्ट्र	दै०	पटना	४६
३२७	नवराष्ट्र	सा.	बिजनौर	१०१
३२८	नवशक्ति	सा.	पटना	१०१
३२९	नवीन-भारत	दै०	पटना	
३३०	नागरी प्र०-पत्रिका	त्रै.	काशी	६३
३३१	नाम-महात्म्य	मा.	वृन्दावन	×
३३२	नारी	मा.	काशी	१३५
३३३	निराला	दै.	आगरा	४६
३३४	निराला	सा.	आगरा	८६
३३५	निराला	मा.	आगरा	८०
३३६	निर्भीक	सा.	फिरोजाबाद	६१
३३७	निष्पक्ष	सा.	बस्ती (यू. पी.)	×
३३८	निष्पक्ष	सा.	फरुखाबाद	×
३३९	नृत्यशाला	मा.	हाथरस	१३८
३४०	नीलमकल	मा.	दिल्ली	×
३४१	नेताजी	दै.	दिल्ली	४७
३४२	नोंकझोंक	मा.	आगरा	७५
३४३	नंदिनी	मा.	पटना	१११
३४४	न्यायबोध	मा.	नागपुर	१४३

सं. नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
प			
३४५ पताका	सा.	अलमोड़ा	×
३४६ पथिक	सा.	रायबरेली	×
३४७ पद्मप्रभा	सा.	लश्कर	×
३४८ परमहंस	सा.	प्रयाग	११२
३४९ पराग	मा.	आगरा	६९
३५० परिवर्तन	सा.	इटावा	×
३५१ परिवर्तन	सा.	बदायूँ	×
३५२ पारिजात	द्वै.	पटना	७७
३५३ पारीक	मा.	जयपुर	×
३५४ पालीवाल	मा.	अलीगढ	×
३५५ पालीवाल बन्धु	मा	आगरा	×
३५६ पालीवाल संदेश	मा.	आगरा	×
५५७ पुकार	सा.	चन्दौसी	×
३५८ पुकार	सा.	हमीरपुर	×
३५९ पुराण	सा.	कलकत्ता	×
३६० पूँजी	सा.	कलकत्ता	१२७
३६१ पंकज	मा.	आगरा	×
३६२ पकज	मा.	दिल्ली	६९
३६३ पंचायत	सा.	बाराबंकी	×
३६४ पचायती-राज	सा.	मेरठ	९६
३६५ पंडिताश्रम	पा.	उज्जैन	१२३
३६६ पाञ्चजन्य	सा.	लखनऊ	६५
३६७ प्रकाश	पा.	नागपुर	६८
३६८ प्रकाश	मा.	प्रयाग	×
३६९ प्रकाश	मा.	बनारस	×
३७० प्रकाश	सा.	मेरठ	×
३७१ प्रकाश	सा.	रीवाँ	६८
३७२ प्रकाश	सा.	वैद्यनाथधाम	८६
३७३ प्रकाश	मा.	हरदोई	×
३७४ प्रगतिशील	पा.	जयपुर	८४
३७५ प्रजापुकार	सा.	जबलपुर	×
३७६ प्रजापुकार	अ. सा.	लश्कर	१०२
३७७ प्रजाबंधु	मा.	दिल्ली	×
३७८ प्रजाबंधु	सा.	रानीखेत	×
३७९ प्रजाबंधु	सा	सीकर	
३८० प्रजामित्र	पा.	चम्बा	१०६
३८१ प्रजामित्र	द्वै.	झाँसी	×
३८२ प्रजामित्र	मा.	झाँसी	×
३८३ प्रजामित्र	सा.	बीकानेर	१०१
३८४ प्रजामण्डल पत्रिका	सा.	इन्दौर	×
३८५ प्रजा सेवक	सा.	जोधपुर	१०२
३८६ प्रजा सेवक	द्वै.	जोधपुर	४७
३८७ प्रताप	सा.	कानपुर	१०२

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
३८८	प्रताप	दै.	कानपुर	४५
३८९	प्रतीक	द्वै.	इलाहबाद	७८
३९०	प्रदीप	पा.	शिमला	६८
३९१	प्रदीप	दै.	पटना	×
३९२	प्रभाकर	सा.	मुंगेर (बिहार)	×
३९३	प्रभात	सा.	जयपुर	६२
३९४	प्रभाती	सा.	जबलपुर	×
३९५	प्रमादिनी	मा.	दिल्ली	×
३९६	प्रवासी	मा.	अजमेर	११७
३९७	प्रवाह	मा.	आकोला	८०
३९८	प्रसाद	सा.	हैदराबाद	×
३९९	प्राकृतिक-चिकित्सक	मा.	जोधपुर	×
४००	प्राच्यप्रभा	चा. मा.	बक्सर	×
४०१	प्राचीन-भारत	मा.	कलकत्ता	×
४०२	प्राणाचार्य	मा.	विजयगढ़	१२०
४०३	प्रेम-प्रभाकर	मा.	जोधपुर	×
४०४	प्रेमसंदेश	मा.	वृन्दावन	५२
४०५	प्रेमसंदेश	दै.	हैद० दक्षिण	×
	फ			
४०६	फिल्मी-चित्र	सा.	दिल्ली	×
	ब			
४०७	बालपौरुष	मा.	कलकत्ता	१२१
४०८	बारासेनी	मा.	अलीगढ़	×
४०९	बान्धव-बन्धु	सा.	रीवाँ	×
४१०	बालक	मा.	पटना	१३२
४११	बालबोध	मा.	प्रयाग	१३०
४१२	बाल-भारती	मा.	दिल्ली	१३०
४१३	बाल-विनोद	मा.	लखनऊ	१३०
४१४	बालसखा	मा.	प्रयाग	१३०
४१५	बालसेवा	मा.	कानपुर	१३३
४१६	बालहित	मा.	उदयपुर	१२२
४१७	बिजली	पा.	पन्ना	८५
४१८	बिहार	मा.	पटना	६७
४१९	बिहार कांग्रेस	मा.	पटना	८७
४२०	बीकानेर राजपत्र	—	बीकानेर	×
४२१	बीकानेर-समाचार	मा.	बीकानेर	×
४२२	बेकारसखा	मा.	शिकोहाबाद	११६
४२३	ब्रजवानी	सा.	मथुरा	×
४२४	ब्रज-भारती	मा.	मथुरा	७३
४२५	ब्राह्मण	मा.	दिल्ली	११५

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
	भ			
४२६	भविष्य	मा.	दिल्ली	११४
४२७	भविष्य-वाणी	मा.	वर्धा	×
४२८	भाग्योदय	पा.	जबलपुर	१३१
४२९	भानूदय	मा.	जबलपुर	५६
४३०	भारत	दै.	प्रयाग	४७
४३१	भारत	सा.	प्रयाग	×
४३२	भारतवर्ष	दै.	दिल्ली	४७
४३३	भारत-विजय	सा.	हरदा (सी.पी.)	×
४३४	भारती	मा.	दिल्ली	१०६
४३५	भारती	मा.	लखनऊ	१३६
४३६	भारती	मा.	जम्मू	८०
४३७	भारतीय	मा.	इलाहाबाद	५६
४३८	भारतीय-विद्या	त्रै.	बम्बई	६४
४३९	भारतीय वि०प०(प)	मा.	बम्बई	६०
४४०	भारतीय समाचार	पा.	दिल्ली	६६
४४१	भारतीय संस्कृति	त्रै.	रतलाम	५६
४४२	भारतेन्दु	त्रै.	कोटा	७७
४४३	भास्कर	सा.	रीवाँ	×
४४४	भूगोल	मा.	इलाहा०	१२२
४४५	भंडाफोड़	सा.	गया	×
	म			
४४६	मजदूर	सा.	जोधपुर	×
४४७	मजदूर आवाज	पा.	नई दिल्ली	६०
४४८	मजदूर संदेश	सा	इन्दौर	×
४४९	मतवाला	पा	जोधपुर	७५
४५०	मतवाला	सा.	दिल्ली	७५
४५१	मतवाला	सा.	मिर्जापुर	७५
४५२	मधुप	मा.	इलाहा०	×
४५३	मधुप	सा.	इलाहा०	७२
४५४	मनोरमा	मा	इलाहा०	१३६
४५५	मनोरंजन	मा.	दिल्ली	८०
४५६	मनोरंजन	सा.	हबड़ा	१४२
४५७	मनोहर कहानियाँ	मा.	प्रयाग	६६
४५८	मनोविज्ञान	मा.	बम्बई	१२२
४५९	मराठा राजपूत	मा.	देवास	११४
४६०	मस्ताना जोगी	मा.	दिल्ली	८१
४६१	मस्ती	मा.	बम्बई	×
४६२	महाकौशल	सा.	रायपुर	१०२
४६३	महावीर संदेश	पा.	जयपुर	५५

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
४६४	महाशक्ति	मा.	काशी	६०
४६५	महिलाश्रम पत्रिका	त्रै.	वर्धा	१३४
४६६	मातृभूमि	सा.	लखनऊ	×
४६७	माधुरी	मा.	लखनऊ	८१
४६८	माथुर सेवक	सा. मा.	दिल्ली	×
४६९	मानव	पा.	जयपुर	×
४७०	मानवता	मा.	आकोला	६१
४७१	मानवधर्म	मा.	दिल्ली	६०
४७२	मानवमित्र	सा.	कलकत्ता	११०
४७३	मानसमणि	सा.	रामवन	५८
४७४	माया	मा.	इलाहाबाद	६६
४७५	मारवाड़ी गौरव	मा.	जयपुर	११४
४७६	मारवाड़ी ब्राह्मण सभा	मा.	कलकत्ता	×
४७७	मारवाड़ी समाचार	मा.	इलाहाबाद	×
४७८	मार्त्तण्ड	सा.	देवास	×
४७९	माला	मा.	इलाहाबाद	१३८
४८०	माहेश्वरी	पा.	बम्बई	×
४८१	मिठाई	पा०	रायपुर	×
४८२	मुंगेर समाचार	सा.	मुंगेर	×
४८३	मेटल गजट	सा.	कलकत्ता	×
४८४	मेरा घर	मा.	बम्बई	×
४८५	मेलमिलाप	सा:	पटना	×
४८६	मैढ़ क्षे.स.	मा:	आकोला	११४
४८७	मोहनी	मा.	दिल्ली	×
४८८	मोहनी	मा.	लखनऊ	×
४८९	मंजरी	मा.	प्रयाग	७०
४९०	मंजिल	पा.	रघुनाथपुर	११५
४९१	मंजूषा	सा.	कलकत्ता	×

य

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
४९२	यादव	मा.	काशी	११४
४९३	यामा	मा.	लखनऊ	×
४९४	युग-प्रवर्तक	मा.	उज्जैन	×
४९५	युगधर्म	सा.	नागपुर	६५
४९६	युगधारा	मा.	काशी	८७
४९७	युगवाणी	सा.	एटा	×
४९८	युगवाणी	मा.	कलकत्ता	×
४९९	युगवाणी	मा.	बम्बई	×
५००	युगसंदेश	सा.	वृन्दावन	×
५०१	युगान्तर	सा.	कानपुर	१०२
५०२	युगान्तर	सा.	जोधपुर	×
५०३	युगारम्भ	सा.	चुरु	६२
५०४	युगारम्भ	मा:	जबलपुर	८१

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
५०५	युवकहृदय	सा.	जयपुर	११४
५०६	योगी	सा.	पटना	१०८
५०७	योगेन्द्र	सा.	पटना	×
५०८	योगेन्द्र	मा.	प्रयाग	५८
५०९	रजतपट	मा.	महु	१४०
५१०	रसभरी	सा.	दिल्ली	१४०
५११	रसायन	मा.	दिल्ली	१२०
५१२	रसीली-कहानियाँ	मा.	इलाहाबाद	७०
५१३	राजपूत	मा.	आगरा	११४
५१४	राजपूत-हितैषी	सा.	फरुखाबाद	×
५१५	राजपूताना-आ० प०	द्वै. मा.	जयपुर	११६
५१६	रानी	मा.	कलकत्ता	७०
५१७	रामराज्य	सा.	कानपुर	८६
५१८	राष्ट्रधर्म	सा.	जोधपुर	×
५१९	राष्ट्रधर्म	मा.	लखनऊ	×
५२०	राष्ट्र-पताका	दै.	जोधपुर	४७
५२१	राष्ट्र-पताका	सा.	जोधपुर	१०२
५२२	राष्ट्रपति	सा.	दिल्ली	×
५२३	राष्ट्रभाषा	मा.	जयपुर	७२
५२४	राष्ट्रभाषा	मा.	वर्धा	७३
५२५	राष्ट्रभाषा-पत्र	मा.	कटक	७४
५२६	राष्ट्रवाणी	मा.	अजमेर	८१
५२७	राष्ट्रवाणी	पा.	इन्दौर	×
५२८	राष्ट्रवाणी	सा.	दिल्ली	८६
५२९	राष्ट्रवाणी	दै.	पटना	४७
५३०	राष्ट्रीय-मोर्चा	सा.	कानपुर	×
५३१	राष्ट्रीय-हलचल	सा.	कन्नौज	×
५३२	रिमझिम	सा.	पटना	१४२
५३३	रियासती	दै.	जोधपुर	४७
५३४	रीवाँराज गजट	मा.	रीवाँ	×
५३५	रूपवाणी	मा.	कलकत्ता	×
५३६	रेलवे समाचार	मा.	रामवन	
५३७	रंगभूमि	मा.	बम्बई	१४०
	ल			
५३८	लल्ला	मा.	प्रयाग	१३०
५३९	लहर	सा.	जोधपुर	८२
५४०	लहर	मा.	प्रयाग	×
५४१	लोकजीवन	मा.	दिनारा (ग्वालियर)	×

सं.	नाम	स्थान	विगत	पृष्ठ
५४२	लाल बुझक्कड़	सा.	बाली (यू.पी.)	×
५४३	लेखक	मा.	प्रयाग	१३६
५४४	लोकमत	दै.	नागपुर	४८
५४५	लोकमत	सा.	नागपुर	८६
५४६	लोकमत	सा.	बीकानेर	६२
५४७	लोकमत	सा.	सीकर	१०७
५४८	लोकमान्य	दै.	कलकत्ता	४७
५४९	लोकमान्य	दै.	बम्बई	४७
५५०	लोकमित्र	सा.	फिरोजाबाद	१०७
५५१	लोकवाणी	दै.	जयपुर	४८
५५२	लोकवाणी	सा.	जयपुर	१०३
५५३	लोकशासन	सा.	ब्रामनिया	११७
५५४	लोकसुधार	सा.	जोधपुर	६६
५५५	लोकसेवक	सा.	इन्दौर	८७
५५६	लोकसेवक	दै.	कोटा	४८
	व			
५५७	वर्तमान	दै.	कानपुर	४८
५५८	वनस्थलि पत्रिका	त्रै.	जयपुर	७७
५५९	वसुन्धरा	सा.	उदयपुर	६२
५६०	वसुन्धरा	मा.	दिल्ली	८२
५६१	वाणिज्य	मा.	कलकत्ता	१२७
५६२	वालंटियर	मा.	लश्कर	११५
५६३	व्यापार	मा.	कलकत्ता	१२६

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
५६४	व्यापार	सा.	हैदराबाद	×
५६५	व्यापार-कानून	सा.	आगरा	१२८
५६६	व्यापार-पत्रिका	मा.	कानपुर	×
५६७	व्यापार-विज्ञान	मा.	मेरठ	१२६
५६८	व्यापार-समाचार	सा.	जयपुर	×
५६९	व्यायाम	मा.	बड़ौदा	१२१
५७०	विक्रम	सा.	बम्बई	१०७
५७१	विकास	त्रै.	कोटा	६४
५७२	विकास	सा.	सहारनपुर	×
५७३	विजय	सा.	अजमेर	×
५७४	विजय	सा.	दिल्ली	१०७
५७५	विजय	सा.	मुरादाबाद	८६
५७६	विजय	पा.	दतिया	६६
५७७	विद्या	पा.	नागपुर	१४५
५७८	विद्यार्थी	मा.	प्रयाग	×
५७९	विद्यार्थी	मा.	हाथरस	७६
५८०	विन्ध्य-वाणी	सा.	टीकमगढ़	८६
५८१	विप्लव	मा.	लखनऊ	६३
५८२	विश्वदर्शन	मा.	दिल्ली	६७
५८३	विश्वबन्धु	दै.	कलकत्ता	४८

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
५८४	विश्वबन्धु	दै.	हैदराबाद	×
५८५	विश्वबन्धु	सा.	सुल० (यू.पी.)	×
५८६	विश्वव्यापी-सनातनधर्म	मा.	अम्बाला	×
५८७	विश्वभारती-पत्रिका	त्रै	शांतिनिकेतन	६४
५८८	विश्वमित्र	मा.	कलकत्ता	८२
८८६	,,	मा.	गया	×
५६०	,,	सा.	कलकत्ता	१०८
५६१	,,	दै.	कानपुर	४८
५६२	,,	दै.	दिल्ली	४८
५६३	,,	दै.	दिल्ली	४८
५६४	,,	दै.	पटना	४८
५६५	,,	दै.	बम्बई	४८
५६६	विश्ववाणी	मा.	प्रयाग	६७
५६७	विश्वहितैषी	सा.	दिल्ली	६२
५६८	विशाल-भारत	मा.	कलकत्ता	८२
५६६	विज्ञान	मा.	प्रयाग	१२२
६००	विज्ञानकला	मा.	दिल्ली	१२७
६०१	वीकली	सा	कलकत्ता	×
६०२	वीणा	मा.	इन्दौर	८३
६०३	वीर	सा.	दिल्ली	५६
६०४	वीरअर्जुन	सा.	दिल्ली	१०३
६०५	वीरअर्जुन	दै.	दिल्ली	४६

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
६०६	वीरभारत	सा.	आगरा	५६
६०७	वीरभारत	दै.	कानपुर	४६
६०८	वीरभूमि	द्वै. मा.	कलकत्ता	७८
६०६	वीरराजपूत	सा.	हबड़ा	×
६१०	वीरवाणी	पा.	जयपुर	५५
६११	वीरेन्द्र	सा.	कौंच (यू पी.)	×
६१२	वैद्य	मा.	मुरादाबाद	१२०
६१३	वैदिकधर्म	मा.	औंध	५१
६१४	वैदिकसंदेश	मा.	राजकोट	×
६१५	वैश्य-समाचार	सा.	दिल्ली	११५
	श			
६१६	शक्ति	सा.	अलमोड़ा	×
६१७	शक्ति	सा.	जबलपुर	×
६१८	शक्ति	मा.	फैजाबाद (यू पी.)	×
६१६	शांत	मा.	जयपुर	×
६२०	शांति	मा.	दिल्ली	१३६
६२१	शांतिदूत	मा.	फीजी	×
६२२	श्वेताम्बर-जैन	पा.	आगरा	×
६२३	शिशु	मा.	प्रयाग	१३०
६२४	शिक्षक	मा.	इन्दौर	×
६२५	शिक्षकबंधु	मा.	अलीगढ़	७६
६२६	शिक्षण-पत्रिका	मा.	बड़मानी	७६

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
६२७	शिक्षा	त्रै.	लखनऊ	७५
६२८	शिक्षासुधा	मा.	मण्डीधनौरा	
६२९	शुद्धिपत्रिका	मा.	दिल्ली	×
६३०	शुभचिंतक	अ. सा.	जबलपुर	१०५
६३१	शेरबच्चा	मा.	प्रयाग	१३१
६३२	शोधपत्रिका	त्रै.	उदयपुर	६४
६३३	शंखनाद	सा.	कानपुर	×
६३४	शंखनाद	सा.	गौहाटी	६६
६३५	श्रद्धानन्द	मा.	दिल्ली	६५
६३६	श्रीचित्र-गुप्त समाचार	सा.	जबलपुर	×
६३७	श्रीवेंकटेश्वर समाचार	सा.	बम्बई	५३
६३८	श्री स्वाध्याय	त्रै. मा.	सोलन	१२३
	स			
६३९	सचित्र-दरबार	सा.	दिल्ली	×
६४०	सचित्र-रंगभूमि	मा.	दिल्ली	१४१
६४१	सजनी	मा.	प्रयाग	७०
६४२	सज्जन	मा.	कलकत्ता	×
६४३	सतयुग	मा.	इलाहाबाद	६१
६४४	सत्य-संदेश	मा.	मल्कापुर (सी.पी.)	×
६४५	सत्यवादी	पा.	इटावा	×
६४६	सत्संग	मा.	रांची	×
६४७	सत्योदय-जीवन	मा.	इटावा	११५
६४८	सनातन-जैन	मा.	बुलंदशहर	५५
६४९	सनातन-धर्म प्रचारक	मा.	अमृतसर	×
६५०	सन्मार्ग	मा.	काशी	५३
६५१	,,	सा.	काशी	५३
६५२	,,	दै.	कलकत्ता	४६
६५३	,,	दै.	काशी	४६
६५४	,,	दै.	दिल्ली	४६
६५५	समता	सा.	अलमोड़ा	×
६५६	समय	सा.	जौनपुर (यू.पी.)	×
६५७	समाज	सा.	काशी	६२
६५८	समाज	सा.	जौनपुर	×
६५९	समाज-सेवक	सा.	कलकत्ता	११६
६६०	सरकारी-हिन्दी	मा.	काशी	७४
६६१	सरस्वती	मा.	प्रयाग	८३
६६२	सरिता	मा.	दिल्ली	७०
६६३	सर्व-हितकारी	मा.	रायबरेली	६१
६६४	सविता	मा.	अजमेर	५१

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
६६५	सविता-सन्देश	मा.	दिल्ली	११५
६६६	संदेश	दै.	आगरा	
६६७	संदेश	सा.	आजमगढ़	×
६६८	स्काउट	मा.	जयपुर	११६
६६९	स्वतंत्र	सा.	झाँसी	१०८
६७०	स्वतंत्र-भारत	सा.	अलवर	१०४
६७१	स्वतंत्र-भारत	दै.	कानपुर	×
६७२	स्वतंत्र-भारत	सा.	बनारस	×
६७३	स्वयंसेवक	मा.	लखनऊ	८८
६७४	स्वराज्य	सा.	खण्डवा	१०४
६७५	स्वसन्देश	मा.	बड़ौदा	६१
६७६	स्वाधीन	सा.	झाँसी	१०८
६७७	स्वास्थ्य-दर्पण	मा.	इटावा	
६७८	स्वास्थ्य-सुधा	मा.	दिल्ली	११८
६७९	साकेत	मा.	अयोध्या	×
६८०	सागर	सा.	आरा	×
६८१	साजन	मा.	प्रयाग	×
६८२	सात्विक-जीवन	मा.	कलकत्ता	६०
६८३	साधन	मा.	एटा	×
६८४	साधु	मा.	दिल्ली	६१
६८५	साम्यवाद	सा.	कानपुर	×
६८६	सारंग	पा.	दिल्ली	१३६
६८७	सार्वदेशिक	मा.	दिल्ली	५१
६८८	सार्वदेशिक-सूद समाचार	मा.	होशियारपुर	×
६८९	सावधान	सा.	कानपुर	×
६९०	सावधान	सा.	नागपुर	×
६९१	साहित्य-सन्देश	मा.	आगरा	७२
६९२	साहू सूर्य	मा.	प्रयाग	×
६९३	सिद्धान्त	सा.	काशी	५३
६९४	सिने-तस्वीर	मा.	कलकत्ता	१४१
६९५	सिनेमा	मा.	कानपुर	१४१
६९६	सिपाही	सा.	सागर	१०८
६९७	सीमा	सा.	आसनसोल	११६
६९८	स्त्री चिकित्सा	मा.	प्रयाग	×
६९९	सुकवि	मा.	कानपुर	७२
७००	सुगन्ध-सौरभ	मा.	कानपुर	×
७०१	सुदर्शन	सा.	एटा	५६
७०२	सुदर्शन	मा.	मेरठ	×
७०३	सुधानिधि	पा.	प्रयाग	१२०
७०४	सुधारक	मा.	जबलपुर	×

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
७०५	सूचना	सा.	भोपाल	६६
७०६	सूर्य	सा.	बनारस	
७०७	सूर्योदया	मा.	बनारस	×
७०८	सूत्रधार	सा.	सीतापुर	×
७०९	सेनानी	पा.	अलीगढ़	८८
७१०	सेवक	मा.	दिल्ली	×
७११	सेवा	मा.	इलाहाबाद	११६
७१२	सैनिक	दै.	आगरा	४६
७१३	सैनिक	सा.	आगरा	१०४
७१४	सौरभ	मा.	दिल्ली	१४३
७१५	संकीर्तन	मा.	सतना	६२
७१६	संगम	सा.	इलाहाबाद	१०४
७१७	संगम	मा.	वर्धा	६१
७१८	संग्रह	सा.	बनारस	×
७१९	सग्राम	अ. सा.	उन्नाव	६४
७२०	संग्राम	सा	झाँसी	×
७२१	सग्राम	सा.	बम्बई	×
७२२	संगीत	सा.	अलीगढ़	×
७२३	संगीत	मा.	हाथरस	१३६
७२४	संगीतकला	मा.	लश्कर	×
७२५	संगीतकला-बिहार	मा.	बम्बई	१३६
७२६	संघ	सा.	बरेली	×
७२७	संघर्ष	सा.	लखनऊ	६३
७२८	सजय	मा.	नई दिल्ली	५८
७२९	संतवाणी	मा.	जयपुर	६१
७३०	संदेश	दै०	आगरा	५०
७३१	संयुक्त प्रांत-समाचार	पा.	लखनऊ	६६
७३२	संसार	सा.	काशी	१०४
७३३	संसार	दै०	काशी	५०
	ह			
७३४	हमारा-अखबार	पा.	बनारस	×
७३५	हमारा-अखबार	पा.	बाली (यू. पी.)	×
७३६	हमारी-आवाज	मा.	प्रयाग	×
७३७	हमारीबात	सा.	लखनऊ	६०
७३८	हमारे-बालक	मा.	दिल्ली	१३१
७३९	हलचल	सा,	गौंडा	×
७४०	हरिजन-सेवक	सा.	अहमदाबाद	८६
७४१	हरिश्चन्द्र	मा.	दिल्ली	
७४२	हरिजन-हितेच्छु	मा.	दिल्ली	
७४३	हितचिंतक	सा.	इटावा	×
७४४	हितकारी	सा.	मथुरा	×
७४५	हिमालय	मा.	पटना	८४

सं.	नाम	विगत	स्थान	पृष्ठ
७४६	हिन्दी	मा:	काशी	७४
७४७	हिन्दी	सा:	शाहजहाँपुर	×
७४८	हिंदी केशरी	सा.	बनारस	×
७४९	हिंदी जगत	मा.	बम्बई	११२
७५०	हिन्द-दिवाकर	मा.	उज्जैन	×
७५१	हिंदी प्रचार-पत्रिका	मा.	बम्बई	७४
७५२	हिन्दी प्रीत-लड़ी	मा.	अमृतसर	
७५३	हिन्दी प्रेम-प्रचारक	सा.	आगरा	×
७५४	हिन्दी-मिलाप	दै०	दिल्ली	५०
७५५	हिन्दी-मिलाप	सा.	बाराबंकी	×
७५६	हिन्दी विद्या-पीठ पत्रिका	—	उदयपुर	११३
७५७	हिन्दी विश्व-भारती	मा.	लखनऊ	
७५८	हिन्दुस्तान	दै०	दिल्ली	५०
७५९	हिन्दुस्तानी	त्रै.	इलाहाबाद	
७६०	हिन्दुस्तानी प्रचार पत्रिका	मा.	मद्रास	×
७६१	हिन्दू	सा.	हरिद्वार	६६
७६२	हिन्दू	सा	दिल्ली	×
७६३	हिन्दू संदेश	सा.	जोधपुर	×
७६४	हिन्दू	सा.	सहारनपुर	×
७६५	हुंकार	सा.	पटना	१०५
७६६	होड़ सोम्वाद	सा.	देवघर	११७
७६७	होनहार	सा.	कलकत्ता	१३१
७६८	होनहार	मा.	लखनऊ	१३१
७६९	होमियो पैथिक जरनल	मा.	कानपुर	×
७७०	होमियो पैथिक दर्पण	—	आगरा	×
७७१	हामियो पैथिक संदेश	मा.	दिल्ली	११८
७७२	हंस	मा.	बनारस	६७
७७३	क्षत्राणी	पा.	जोधपुर	१३७

परिशिष्ट २.

[आज प्रकाशित होने वाले कुछ अन्य पत्र, जिनके नमूने हमें प्राप्त नहीं हुए हैं। यह सूची समाचार इण्डियन प्रेस डाइरेक्टरी (१६४८) बम्बई, से उद्धृत की जा रही है। —संपादक]

(१) अग्रदूत—१६४२ से प्रकाशित ; सा०, सं० के. पी. वर्मा, राष्ट्रीय-नीति ; ग्राहक संख्या ५०००, प्रति =), प० रायपुर (सी० पी)

(२) अलीगढ़ हेराल्ड—१६३६ से प्रकाशित ; सा०, यह अंग्रेजी हिन्दी दोनों भाषाओं में छपता है ; साहित्यिक ; प्रति —), प० मास्टर भवन, द्वारकापुरी, अलीगढ़ (यू. पी.)

(३) आजाद हिन्द*—१६४७ से प्रकाशित ; सा०, सं० डा० कैलाश, जी पी. शाखाल ; अंग्रेजी हिन्दी दोनों भाषाएँ रहती हैं ; राष्ट्रीय नीति, प्रति =) प० मंगलवाड़ी, गिरगाँव, बम्बई ४.

(४) आप बीती*—१६४६ से प्रकाशित ; मा०, सं० कृष्णप्रसाद सेठ ; कहानी प्रधान पत्र ; प० रहमान बिल्डिंग, चर्चगेट स्ट्रीट, बम्बई १.

(५) कानपुर समाचार*—१६४७ से प्रकाशित , सा०, सं० बी. अवस्थी ; कांग्रेस नीति, प्रति =) ; प० कानपुर

(६) कांग्रेस*—१६४७ से प्रकाशित ; सा०, प्रति बृहस्पति वार को प्रकाशित ; राष्ट्रीय पत्र, प्रति ।), प० भोगीपुरा, आगरा।

(७) किसान*—१६२० से प्रकाशित ; सा०, सं० श्री भटनागर ; प्रति —)॥ ग्राहक संख्या १५०० प० रकाबगंज, फैजाबाद (यू०पी०)

(८) कृषक*—१६३७ से प्रकाशित ; सा०, प्रति =) ; प० बक्सर (जिला शाहाबाद) बिहार।

(९) कुमाऊं कुमुद*—१८७१ से प्रकाशित ; सा०, सं० पी. वी. जोशी ; राष्ट्रीय नीति ; प्रति -) प० अलमोड़ा ।

(१०) कोली राजपुत*—१६४० से प्रकाशित ; मा०, सं० एम० आर० तॅवर ; जातीय पत्र ; प० अजमेर ।

(११) चित्रप्रकाश*—सिनेमा-मासिक, प्रति १), प० कूँचावैजनाथ, चाँदनीचौक, दिल्ली ।

(१२) छाया*—१९३३ से प्रकाशित ; सा०, सं० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति साहित्यिक लेख रहते हैं, प्रति =), प० खटाउवाडी, गिरगाँव, बम्बई ४.

(१३) छायालोक*—साप्ताहिक पत्रिका ; सं० संकटाप्रसाद शुक्ल ; प० गोवर्धन भवन, खेतवाड़ी मेनरोड़, बम्बई ।

(१४) जनमत*—१६३४ से प्रकाशित ; सा०, प्रति -), प० इटावा

(१५) जागरण*—साप्ताहिक ; प० ७–१ बाबूलाल लेन, कलकत्ता ।

(१६) जीवन प्रभा*—१६४१ से प्रकाशित ; मा०, सं० भूदेव झा ; सामाजिक और धार्मिक लेख रहते हैं , प्रति ।), प० आगरा ।

(१७) जे० के० पत्रिका*—१६३६ से प्रकाशित ; मा०, सं० अजित अवस्थी ; प्रकाशन अनियमित, मजदूरो सम्बन्धी मनोरंजक लेख रहते हैं ; प० कमला टावर, कानपुर ।

(१८) धर्म संदेश*—१६३६ से प्रकाशित, मा० ; सं० रवि वर्मा, थियोसोफिकल सोसायटी का मुख-पत्र ; प्रति =), प० नेशनल प्रेस, बनारस ।

(१६) नया संसार*—अर्द्ध साप्ताहिक, प० १६४/४१ घंटाघर, दिल्ली ।

(२०) नया संसार*—१६४१ से प्रकाशित ; सा०, सं० देवकीनन्दन बंसल, राष्ट्रीय नीति ; ग्राहक संख्या १५००, प्रति -), प० मधुर मन्दिर, हाथरस (यू० पी०)

(२१) नवप्रभात*—१६४७ से प्रकाशित ; सा०, प० किशोर भवन, सीतावर्डी, नागपुर ।

(२२) नवभारत*—१९४७ से प्रकाशित ; दैनिक, प० कदम कुआँ, पटना।

(२३) नवीनभारत*—१९३७ से प्रकाशित ; सा०, प्रति -)||, प० कासगंज (जिला एटा) यू. पी.

(२४) नागरिक*—१९४२ से प्रकाशित ; सा०, प्रति -)||, प० भार्गव इस्टेट, कानपुर।

(२५) पालक्षत्रिय समाचार*—१९१२ से प्रकाशित ; मा०, सं० जी० विद्यार्थी ; प० ४२३, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

(२६) पंचायत*—१९४१ से प्रकाशित ; सा०, प० बाराबंकी (यू. पी.)

(२७) प्रकाश*—१९४२ से प्रकाशित ; दैनिक, सं० जी. सी. केला, अंग्रेजी-हिन्दी दोनों मे छपता है ; ग्राहक संख्या १६०००, प्रति -), राष्ट्रीय-नीति ; प० कचौरा बाजार, आगरा।

(२८) फौजी अखबार—१९०९ से प्रकाशित ; सा०, सं० श्री मलखानसिंह ; भारतीय सिपाहियों के लिए मानसिक भोजन प्रस्तुत करता है। 'हवलदार तोताराम' के नाम से सुन्दर कहानियाँ छपती हैं, यह अंग्रेजी, उर्दू, गुरुमुखी, रोमन, उर्दू और तामील भाषाओं में भी भारत सरकार द्वारा प्रकाशित होता है ; प्रति =), प० बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

(२९) बारीमित्र*—१९२६ से प्रकाशित , मा०, सं० जे० एल० बारी, उद्देश्य जातीय संगठन ; प० १३०, अलोपी बाग, इलाहाबाद।

(३०) भारतजननी*—१९४५ से प्रकाशित ; मा०, सं० श्री कालिका-प्रसाद, शान्ति एम० ए० ; स्त्रियों की साहित्यिक पत्रिका ; प्रति ।), प० ५४, हिवेट रोड, इलाहाबाद।

(३१) भारतस्नेहवर्धिनी*—१९४७ से प्रकाशित; मा०, सं० श्रीमती मीरा सन्त, अंग्रेजी-हिन्दी दोनों भाषाओं में छपती है, प० पोस्ट बाक्स ५९६, पूना।

(३२) मराठा*—कई वर्ष से प्रकाशित ; सा० अंग्रेजी के साथ साथ कुछ लेखादि हिन्दी के भी रहते हैं ; प० ५६८, नारायण पेठ पूना।

(३३) महिला*—मासिक-पत्रिका ; प० ३, न्यू जगन्नाथ घाट रोड, कलकत्ता।

(३४) रहबुर*—१६४० से प्रकाशित ; सं० श्रीमती कुलसुम स्यानी ; यह पाक्षिक पत्र लीथो मशीन में छपता है ; सरल भाषा में शैक्षणिक व समाज-सुधार विषयक लेख रहते हैं। इसका अंग्रेजी, गुजराती, उर्दू संस्करण भी निकलता है ; प्रति -)||, प० रूपविला, कुम्भला हिल, बम्बई।

(३५) राष्ट्रीयहलचल*—१६४० से प्रकाशित, सा०, सं० अनीसुल-रहमान ; प्रति -)||, प० कन्नौज।

(३६) रूपरानी*—१६४७ से प्रकाशित ; मा०, सं० लज्जारानी; प्रति ||), प० ६२, दरियागंज, दिल्ली।

(३७) लोकमान्य*—कई वर्ष से प्रकाशित; सा०, संचा० श्री रामशङ्कर त्रिपाठी, सं० श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार ; राष्ट्रीय नीति, हिन्दू संगठन की ओर झुकाव ; प्रति =), ८ प० पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली।

(३८) विकास*—१६४५ से प्रकाशित ; सा०, इसका मराठी संस्करण भी निकलता है ; प्रति =), प० धर्मपेठ, नागपुर।

(३६) विचार*—साप्ताहिक पत्र ; १५४-१६ हरिसन रोड, कलकत्ता।

(४०) विद्यार्थी*—१६१४ से प्रकाशित ; मा० सं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' ; विद्यार्थियोपोयगी उत्तम लेख रहते हैं ; प्रकाशन कई बार स्थगित भी हुआ ; प्रति।-), प० हिन्दी प्रेस, प्रयाग।

(४१) विंध्यकेशरी*—१६४७ से प्रकाशित ; सा०, सं० जिरलाप्रसाद, ग्राहक संख्या ३०००, प० स्टेशन रोड, सागर (सी. पी.)

(४२) विनोद*—कई वर्ष से प्रकाशित ; मा०, बच्चों के लिए उपयोगी पत्र ; ग्राहक संख्या २०००, प० हिन्दी प्रेस, प्रयाग।

(४३) विश्वबन्धु*—१६३६ से प्रकाशित ; सा०, संस्था० गोस्वामी गणेशदत्ताजी ; प्रारम्भ में लाहौर से ही प्रकाशित होता था, पंजाब-

विभाजन के बाद अब अमृतसर से प्रकाशित ; पंजाब प्रान्तीय हिन्दू महासभा का मुख-पत्र ; अमृतसर।

(४४) वीरेन्द्र*—१९३६ से प्रकाशित ; सा०, प० कौंच (यू. पी.)

(४५) शक्ति*—१६३६ से प्रकाशित ; सा०, सं० नाथुराम शुक्ल ; हिन्दू सभाई नीति, ग्राहक संख्या ५०००, प० रायपुर (सी० पी०)

(४६) शिक्षक*—१६४१ से प्रकाशित ; मा०, सं० श्री वेदनिधि, प्रति ।); प० शिक्षक कार्यालय, अलीगढ़।

(४७) सचित्र दरबार*—सिनेमा साप्ताहिक ; सं० चन्द्रधर ; प्रति =) प० २३, दरियागंज, दिल्ली।

(४८) संसार दीपक*—१६२२ से प्रकाशित ; सा०, सं० ब्रजनन्दनलाल, ग्राहक संख्या ५००, प्रति =), प० चमन अखलाक प्रेस, इटावा (यू० पी०)

(४६) स्वतंत्र भारत—१६४७ से प्रकाशित ; राष्ट्रीय दैनिक ; सं० अशोकजी, ग्राहक सं० १६०००, प्रति -), प० पायोनियर प्रेस, लखनऊ।

(५०) श्री नृसिंह प्रिय*—१६४२ से प्रकाशित ; मा०, सं० श्री० ए० एस० राघवन ; आध्यात्मिक पत्र, प्रति ।), प० पुडुकोटई (मद्रास)

(५१) श्री हर्ष*—मासिक पत्र ; प० ६, रामनाथ मजूमदार स्ट्रीट, कलकत्ता।

(५२) हिन्दी प्रचार समाचार*—१६२३ से प्रकाशित ; मा०, सं० श्री सत्यनारायण ; हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, त्यागरायनगर का मुख-पत्र ; ग्राहक संख्या १८००, प्रति =), प० हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मद्रास १७.

(५३) हिन्दू*—१६३४ से प्रकाशित ; सा०, सं० श्री वी० जी० देशमुख ; हिन्दू सभाई नीति ; प्रति =), प० ओडियन बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

(५४) क्षत्रियबंधु*—१६३६ से प्रकाशित ; मा०, सं० पी० चौधरी ; प्रति =), प० निल्दीबाग, बनारस।

परिशिष्ट ३.

[सन् १८२६ से लेकर अब तक हिन्दी में हजारों ही पत्र-पत्रिकाएँ निकली हैं। किस स्थान से, कौनसा पत्र, कब प्रकाशित हुआ, जितनी सूचना उपलब्ध हो सकी, नीचे दे रहे हैं। अंत में अकारादि क्रम से कुछ ऐसे पत्रों की सूची है, जिनके केवल नाम व प्रकाशन-तिथि ही उपलब्ध हो सकीं। आगामी संस्करण के लिए पूर्व प्रकाशित पत्रों के संचालकों, सम्पादकों तथा प्रकाशकों से प्रार्थना है कि एतद् विषयक परिचय भेजने की कृपा करें; साथ ही यह सूचना भी भेजने का कष्ट करें कि पत्र कितने समय तक निकलता रहा और संभव हो सके तो सूचित करें कि कब और क्यों प्रकाशन स्थगित हुआ।

—सम्पादक]

अजमेर

जगलाभचिंतक		१८६१
तरुणराजस्थान सा.		—
त्यागभूमि	सा.	१६२८
देशहितैषी	मा.	१८८२
भारतीयधर्म	मा.	१६४२
भारतोद्धारक	मा.	१८८५
माहेश्वरी सुधारक	मा.	—
मीरा	सा.	१६३६
राजपूताना गजट	सा.	१८८४
राजस्थान	सा.	
राजस्थान समाचार	सा.	१८८६

अबोहर (पूर्वी पंजाब)

दीपक	मा.	

अमरावती (सी० पी०)

शेतकरी या कृषि हितकारक	मा.	१८६०

अमृतसर

खद्योत मा. १८८५
सकलसम्शोधिनी परीक्षा मा. १८७६
हिन्दी प्रकाश सा. १८७३

अमेठी

बिजली मा. १९३७
मनस्वी मा. १९३७

अयोध्या

साकेत जीवन मा. १८६२

अलमोड़ा (यू० पी०)

अलमोड़ा अखबार सा. १८७०
कमाऊँ समाचार पत्रिका पा. १८६४
वृद्धि सा.
सर्व हितकारी सा. १९००

अलवर

अरावली मा.
शिक्षा संदेश मा. जनवरी १९४१

अलीगढ़ (यू० पी०)

उपन्यास माला मा. १९१५
धर्म समाज पत्र मा. १८७७
प्रताप सा. १८९७
भारतबन्धु सा. १८७६
माहेश्वरी पत्र मा. १८९४
मंगल समाचार मा. १८६६
विद्याभास्कर १९१८
सारस्वत मा. १९१०
सुखमार्ग मा.
हिन्दी पंच मा. १८९०

अहमदाबाद

नवजीवन सा. १९२४
आकोला (बरार)
आर्य सेवक पा. १९०६
राजस्थान

आगरा

अग्रवाल उपकारक मा. १८८६
अद्भुत शतक मा. १८८६
आगरा अखबार १८७१
आगरा एज्यूकेशनल गजट मा. १८६६
आगरा पंच दै. १९३४
कायस्थ उपकारक १८३६
कायस्थ हितकारी १८६४
खत्री हितकारी सा. १८८८
चतुर्वेदी सा. १८९५
चारण मा.

जखिराये बालगोविन्द		१८७१
जगत समाचार	सा.	१८६६
जगदानन्द		१८६६
धर्मप्रकाश		१८६७
नवसंदेश	सा.	
निर्माण	मा.	१९४६
परोपकारी	मा.	१८९०
पापमोचन		१८६६
प्रजाहितैषी	पा.	१८६१
प्रभाकर	सा.	
प्रियहितकारक	सा.	१८९०
प्रेम पत्र	पा.	१८७२
प्रेम पत्र राधास्वामी		१८९३
बुद्धि प्रकाश	सा.	१९५२
भारतखण्डामृत	मा.	१८६५
भारती विलास	त्रै.	१८८१
मंगल	मा.	१९३९
मर्यादा परिपाटी	मा.	१८७३
महिला	मा.	१८६३
शिक्षा पत्रिका		१९१६
सज्जन विनोद	मा.	१८९४
सज्जनोपकारक		१८६७
सत्यधर्ममित्र	मा.	१८९०
सदाचार मार्तण्ड		१८८७
सद्धर्मामृतवार्षिणी	मा.	१८७५
सनाढ्योपकारक	सा.	१८६७
सर्वहितकारक	मा.	१८५५
सर्वोपकारक		१८६१
साधना	मा.	१९३९
सूरजप्रकाश		१८६१
हिन्दुस्तान समाचार	दै.	
क्षत्रिय हितोपदेशक	मा.	१८९२
ज्ञानदीपक	मा.	१८६७

आदमपुर (पंजाब)

खादी पत्रिका	पा.	

आरा (बिहार)

नागरी हितैषिणी पत्रिका		१९०७
बालकेशरी		
मनोरंजन		१९१३
मारवाड़ी सुधार		१९२१
स्वाधीन भारत		

इटारसी (सी० पी०)

तारा बन्धु	मा.	१९३९

इटावा (यू० पी)

कर्तव्य	सा.	
खण्डेलवाल जैन	मा.	१९१८
निर्भय ब्रह्मानन्द	मा.	१९००
प्रजाहित		१८६१

ब्राह्मणसर्वस्व	मा.	१६०३
विचार पत्र	मा.	१८८६

इन्दौर

ग्रामसुधार	सा.	१६४०
देशीमिश्नरी समाज पत्रिका—		१६०६
नव निर्माण	मा.	१६४३
मध्यभारत	सा.	१६३८
मालवा अखबार		१८६६

इलाहाबाद

आर्यजीवन	मा.	१८८६
आर्यदर्पण		१८६२
आर्यबाल इतिहास		१६०२
आरोग्य जीवन	मा०	१८८६
आरोग्यदर्पण	मा०	१८८१
आरोग्यदर्पण	मा०	१८८८
ऋग्वेदभाष्यम	मा०	१८८३
एलोपैथिक डाक्टर	मा०	१८६५
उच्छृंखल	मा०	१६३४
उपदेशपुष्पावली	मा०	१८८६
उपनिषद्	मा०	१८८६
उपनिषद् भाष्यम		१८६६
कर्मयोगी	मा०	१६०६
कविता कौमुदी	मा०	
कान्यकुब्जमण्डल		१८६०
कायस्थ पंच	सा.	१६०८
कायस्थ समाचार	मा.	१८७८
कायस्थ समाचार	मा.	१८६०
गृहलक्ष्मी	मा.	
गोसेवक	पा.	१८६२
गौड़ कायस्थ		१८८४
छाया	मा.	१६४१
जैन पत्रिका	मा.	१८७६
जैनी	सा.	१८६८
ट्रेड जर्नल		१६१५
तिथिप्रदीप	मा.	१८७६
द्विजराज	मा.	
दुनिया	मा.	
धर्म पत्र	मा.	१८७७
धर्मप्रकाश	मा.	१८७७
धर्मोपदेशक		१८८३
नागरी पत्रिका		१८७७
नाटक प्रकाश		१८८२
नाट्य पत्र	सा	१८६५
न्याय पत्र	मा.	१८६४
नूतन चरित्र		१८८२
प्रयागदूत		१८७१
प्रयागधर्म पत्रिका	मा.	१८७५
प्रयाग धर्मप्रकाश	मा.	१८७६

प्रयाग मित्र	पा.	१८७७
प्रयाग समाचार	सा.	१८८३
बाल दर्पण		१८८२
बाल मनोरंजन लेखमाला		१९१४
बानर	मा.	
बुद्धिप्रकाश		१८७३
भविष्य	सा.	१९३३
भागवतविलास	मा.	१८८१
भारत भगिनी	मा.	१८८८
भारत भूमि		१९०६
भारतेन्दु	मा.	१९२८
मदारी	सा.	१९३३
मर्यादा	मा.	१९४२
मानवधर्मशास्त्र	मा.	१८९१
यजुर्वेदभाष्यम	मा.	१८८२
रतनमाला		१८९५
रत्नाकर	मा.	१८९४
रसिक पंच	मा.	१८८६
रामपताका	मा.	१८९१
राष्ट्रमत	सा.	१९३८
रुपाभ	मा.	१९३८
रंगमंच	मा.	१९३९
वनलता	मा.	१९४२
वर्तमान उपदेश	मा.	१८९०
विद्यार्थी	मा.	
विद्यामार्तण्ड		१८८८
वृत्तान्तदर्पण	मा.	१८९९
वेदान्त प्रकाश	सा.	१८८५
वैदिक सर्वस्व		१९०९
सधर्म कौस्तुभ		१९०६
समालोचक		१९०२
सत्यप्रकाश	सा.	१८८५
स्वदेशी	दै.	
सुदर्शन समाचार		१८७५
संस्कार विधि	मा.	१८८५
श्रीकान्यकुब्ज हितकारी		१८८९
श्री राघुवेन्द्र		१९०५
श्री सरयूपारीण		१९१२
हल	मा.	१९३९
हिन्दी प्रदीप	मा.	१८७७
त्रिवेणी तरंग	मा.	१८९७
ज्ञानचन्द्र		१८७८
ज्ञानचन्द्रोदय	मा.	१८७९

उज्जैन

पंडिताश्रम		१९१३
विक्रम	मा.	

उदयपुर

आर्य सिद्धान्त		१८८७
उदयपुर गजट		१८९९
सज्जनकीर्त्तिसुधाकर	सा.	१८७९

कनखल (यू. पी.)

हिन्दू सर्वस्व	सा.	१९२५

कनौज (यू. पी.)

मोहिनी	—	१८९३

कलकत्ता

अलमस्त	मा.	—
अग्रसर	सा.	—
अवतार	—	१९२१
आनन्द संगीत पत्रिका	—	१९१३
आर्यावर्त	सा०	१८८७
आरोग्य सन्निधि	—	१९०१
उचित वक्ता	सा.	१८७८
उदन्त मार्तण्ड	सा.	१८२६
उद्योग	—	१९२१
औघड़	मा.	१९२५
कमला	मा.	१९०९
कलकत्ता समाचार	सा.	१८९४
कान्यकुब्जबन्धु	—	१९०६
काव्यकलाधर	—	—
कुशवाहा क्षत्रियमित्र	—	१९१३
चिकित्सा सोपान	मा.	१८९८
जगद्दीपक भास्कर	मा.	१८४९
जैनगजट	मा.	—
जैनविजय	—	१९२१
देशबन्धु	मा.	—
देशी व्यापारी	मा.	१८८४
देवनगर	—	१९०७
धर्मदिवाकर	मा.	१८८३
धर्मरक्षक	मा.	—
धूर्त पञ्च	मा.	१८९१
नृसिंह	—	१९०९
परिवार हितैषी	—	१९१८
पुष्करणा ब्राह्मण	—	१९१७
प्रजामित्र	सा.	१८३४
प्रभाकर	—	१९०८
प्राचीन भारत	मा.	१९४१
बंगदूत	सा.	१८३९
बंगाल हेराल्ड	सा.	१८३९
भारतदर्पण	सा.	१८८९
भारतमित्र	सा,	१८७७
भारतमित्र	दै,	—
भास्कर	सा.	—
मतवाला	सा.	१९२४
महिला महत्व	मा.	—
महावर भानूदय	—	१९१९
मार्तण्ड	सा.	१८४६
मारवाड़ी अग्रवाल	मा.	१९२०
मारवाड़ी बन्धु	—	१९०६
मारवाड़ी ब्राह्मण	मा.	—
माहेश्वरी	मा.	—
माहेश्वरी बन्धु	सा.	—
मौजी	सा.	१९२४
युगान्तर	मा.	—
राजस्थान	त्रै.	१९३९
रेलवे समाचार	—	१९३०
विचार	सा.	१९३९
विजयवर्गीय	—	१९२१
विद्याविलास	मा.	१८८५
विद्योदय	मा.	१८८३
विश्वदूत	—	—
वीरभारत	दै०	—
वैश्योपकारक	—	१९०४
सनातनधर्म	मा.	—

समाचार सुधावर्द्धक	दै. १८५४
,, ,,	सा. १८७४
सरस्वतीप्रकाश	पा० १८६०
सरोज	मा. १६२६
स्वतन्त्र	दै. १६२०
स्वतन्त्रभारत	सा. १६२८
साम्यदण्डमार्तण्ड	सा. १८५०
सारसुधानिधि	सा. १८७८
साहित्य	मा. —
साहित्यरत्नमाला	— १६११
साहित्य सरोज	— १६२१
सुलभसमाचार	सा. १८७१
सेवक	— १६१३
श्रमिक	सा. —
श्रीकृष्णसन्देश	सा. १६२५
हितवार्ता	सा. १६०२
हिन्दी केशरी	मा. —
हिन्दी दीप्ति प्रकाश	सा. १८७२
हिन्दी बंगवासी	सा. १८६०
हिन्दी स्वास्थ्य समाचार	— १६१५
ज्ञान दीपक	मा. १८४६

कानपुर

कायस्थ कान्फ्रेंस पत्रिका	मा. १८६३
नाई ब्राह्मण	मा. —
प्रभा	मा. —
प्रेमपत्रिका	सा. १८६६
ब्रह्मभट्ट हितैषी	मा. १६२५
ब्राह्मण	मा. मार्च १८८३
भविष्य	सा. —
भट्टभास्कर	मा. १८६३
भारतभूषण	— १८८४
भारतोदय	दै. १८८५
महिलासुधार	मा. —
रसिक पत्रिका	सा. १८६४
रसिक पच	मा. १८६४
रसिक वाटिका	सा. १८६७
रसिक विनोद	— १६०४
राष्ट्रीय मोर्चा	सा. १६४२
व्यापार	— १८६१
वेदप्रकाश	सा. १८६४
शुद्धसागर	— १६०६
शुभचिन्तक	— १८७८
स्वास्थ्य	मा. —
सुधासागर	मा. १८६३
श्री कान्य कुब्ज हितकारी	— १८६८
स्वर्णकारी शिल्पमाला	— १६२१
स्त्रीदर्पण	मा० —
हिन्दू प्रकाश	— १८७१

कामठ

मित्र	पा० १८६५

कालपी (यू० पी०)

गुरू घण्टाल	सा० १६३६

कालाकांकर (अवध)

कुमार	मा० १६४४
हिन्दुस्थान	— दै० १८८५

काशी

अग्रगामी	दै० १६३६
अलबेला	मा० १६३६
आनन्द लहरी	सा० १८७५
आर्य मित्र	मा० १८७८
आर्य मित्र	मा० १८६०
इतिहास	— १६०५
इन्दु	मा० १६१०

उदय	मा०	—
उपन्यास	मा०	१९०१
उपन्यास बहार	—	१९०७
उपन्यास माला	—	१८९९
उपन्यास लहरी	मा०	१८९८
,, ,,		१९०२
उपन्यास सागर	—	१९०३
औदुम्बर	—	—
कमला	मा०	१९३९
कवि वचन सुधा	मा०	१८६८
,, ,, ,,	सा०	१८७३
कहानी	मा०	१९३२
कान्यकुब्ज	मा०	—
काशी पत्रिका	सा०	१८७५
काशी पत्र	सा०	१८८०
काशी समाचार	सा०	१८८३
कुसुमांजलि	—	१८९
खुदा की राह पर	सा०	१९३५
खेती और खेतिहर	—	१९०६
गुजराती पत्रिका	—	१८८५
गो सेवक	पा०	१८९२
चरणाद्रि चन्द्रिका	सा०	१८७३
छायावाद	मा०	१९३९
जागरण	पा०	१९२९
जासूस	मा०	१९००
झरना	मा०	१९३९
तरंगिणी	मा०	१९१३
तिमिर नाशक पत्र	मा०	१८९०
धर्म प्रचारक	मा०	१८८५
धर्म सुधावर्षण	मा०	१८८६
नागरी नीरद	सा०	१८९१
नाटक प्रकाश	मा०	१८८४
निगमागम चन्द्रिका	—	१९०१
नूतन चरित	—	१८८३
परमार्थ ज्ञान चन्द्रिका	—	१८८०
पंडित पत्रिका	मा०	१८९८
प्रश्नोत्तर	—	१८९५
बनारस अखबार	सा०	१८४५
बनारस गजट	सा०	१८८२
वनिता हितैषी	—	१८९४
बालदर्पण	—	१८८३
बाल बोधिनी	मा०	१८७४
ब्रह्मावर्त्त	मा०	१८९०
ब्राह्मण समाचार	—	१९०७
ब्राह्मण हितकारी	मा०	१८९२
भारत जीवन	सा०	१८८४
भारत धर्म	सा०	१९२४
भारत भूषण	सा०	१८८४
भारतेन्दु	सा०	१९०५
भाषा चन्द्रिका	—	१९००
मनोहर पत्रिका	—	१९०६
मानस पत्रिका	—	१९०४
मालव मयूर	मा०	१९२४
मित्र	सा०	१८८६
योग प्रचारक	मा०	—
रहस्य चन्द्रिका	पा०	१८८८
राजहंस	मा०	१९४३
रामजन पत्रिका	—	१८९१
वाणिज्य सुखदायक	मा०	१९११
व्यापारी और कलाकारी	सा०	१९०८
व्यापार हितैषी	सा०	१८९२
विद्यापीठ	त्रै०	१९२७

वैष्णव पत्रिका मा० १८८३
(१९०६ से परिवर्तित नाम 'पीयूषप्रवाह,')
सत्य प्रकाश सा० १९३६
सरस्वती प्रकाश मा० १८६२
सरिता मा० १९३६
साहित्य सुधानिधि मा० १८६४
स्वार्थ मा० १९२२
सुदर्शन मा० १९००
सुधाकर सा० १८५०
सूर्य सा० १९१६
हरिश्चन्द्र कौमुदी —१८६४
हरिश्चन्द्र चन्द्रिका — १८७४
हरिश्चन्द्र मैगजीन मा. १८७३
हिन्दी उपन्यास —१९०१
क्षत्रिय मित्र मा०१९०६
क्षत्रिय विजय मा०—

कंचौसी (यू० पी०)

सत्यसखा मा० १९३५

खण्डवा (सी० पी०)

मध्यभारत —

खुर्जा (यू० पी०)

जैन रत्नमाला —१९१२

गया (बिहार)

चिनगारी सा० १९३८
वजरंगी समाचार — १९०८
लक्ष्मी मा० —
साहित्य सरोवर — १९०६
हरिश्चन्द्र कौमुदी मा. १८६४

गवालियर

अखबार गवालियर मा. १८५१
(सरकारी गजट)
ब्राह्मणहितैषी — १९१८

गुड़गांवां (पंजाब)

जाट समाचार मा. १८८६

गोरखपुर (यू. पी.)

विद्याधर्म दीपिका मा. १८८६
स्वदेश स. १९२१

गोंडा (सी. पी.)

नवीन वाचक — १८८३
हलचल मा. १९३८

चम्पारन (बिहार)

चम्पारन चन्द्रिका सा. १८६०
विद्याधर्म दीपिका — १८०८

जबलपुर

जबलपुर समाचार मा. १८७३
परमार बन्धु मा. —
प्रजाहितैषी पत्रिका मा, १८८६
मौजे नरबदा — १८८४
विक्टोरिया सेवक सा. १८८७
विचार वेदान्त मा. १८६५
सुबोध सिन्धु मा. १८८४
हितकारिणी मा. —

जम्मू

जम्मू गजट — १८८४
विद्या विलास मा. १८७१
वृत्तान्त विलास मा. १८६८
बुद्धि विलास — १८७०

जयपुर

जयपुर गजट — १८८५
प्रकाश मा. १९३६

सदाचार मार्तण्ड	मा. १८८४
समालोचक	मा. १९०२
संत	मा. १९३६

जसपुर (तराई)

तराई गजट	सा. १८८६
भारत मार्तण्ड	सा. १८८६

जोधपुर

सनातन	त्रै. १९४२
स्वास्थ्य शिक्षा	मा. सितम्बर, १९४२

जौनपुर

पीयूष प्रवाह	— १९०६
रसिक रहस्य	— १९०७
समय	सा. १९२७

झालरापाटन

विद्याभास्कर	— १९०७

झांसी (यू. पी.)

उत्साह	अ. सा. —
बुन्देलखण्ड पंच	सा. १८९४
मातृभूमि	दै. —
योगी	— १९१९
सनाढ्यहितकारी	मा. —
संसार दर्पण	सा. १८९५

दिल्ली

इन्द्रप्रस्थप्रकाश	सा. १८८३
औदिच्य ब्राह्मण	मा. —
काग्रेस	दै. १९४०
धारा	मा. १९४०
नवयुग	दै. —
मजदूर समाचार	दै. १९३४
महारथी	मा. १९२५
रक्षा	सा. १९४२
लोकजीवन	मा. १९४५
विजय	दै. १९१८
सचित्र दरबार	सा. १९३०
सदादर्श	सा. १८७४
स्वयसेवक	मा. १९२५
सिखवीर	मा. —
सिंहनाद	मा. १९४५
सैयदुल अखबार	— १८८१
हिन्दी राजस्थान	सा. —
हिन्दू संसार	दै. —

देहरादून

अभय	सा. १९२४
भारतहितैषी	— १९१६
सुदर्शन	सा. १९२५

नरसिंहपुर

शिक्षामृत	मा. —
सरस्वती विलास	मा. १८८४

नवागांव

भारत हितैषी	मा. १८८४

नागपुर

गोरक्षण	मा. १८९३
गौरक्षा	मा. १८९०
छाया	सा. १९४२
नागपुर गजट	— १८७०
न्यायरत्न	मा. १८९६
प्रणवीर	अ. सा. —
भाषा प्रकाश	मा. १८८४
मारवाड़ी	सा. —
माहेश्वरी	— —
विचारवाहन	मा. १८९३

सरकारी अखबार	—	१८७०
सरस्वती विलास	मा.	१८६०
सावधान	सा.	१६४२
हिन्दी केसरी	सा.	१६०७

नैनीताल

समय विनोद	—	१८६६
सुदर्शन समाचार	—	१८७५
हिमालयन स्टार	—	१८६०

टीकमगढ़ (विन्ध्यप्रदेश)

मधुकर	पा.	१६४०
लोकवार्ता	त्रै.	१६४८

ढ़ाका (बंगाल)

ढ़ाका प्रकाश	—	१८६६

पटना

आत्मविद्या	—	१६११
गोलमाल	सा.	१६२४
जगविलास	मा.	१८८३
जनक	दै.	—
तत्वदर्शन	—	१६११
देश	सा.	१६२०
द्विजपत्रिका	पा.	१८८६
धर्मनीतितत्व	मा.	१८८०
धर्मसभापत्रिका	मा.	१८८१
नागरी हितैषिणी पत्रिका	—	१६०५
नारद	—	१६०४
भूमिहर ब्राह्मण पत्रिका	—	१६०५
मेलमिलाप	मा.	१६३६
मौजी	मा.	—
लोकसग्रह	सा.	१६२३
विद्याधर्म दीपिका	—	१८८८
विद्याविनोद	मा.	१८६५
विहार वन्धु	मा.	१८७२
शिक्षा सेवक	मा.	—
साहित्य	त्रै.	—
श्रीहरिश्चन्द्र कला	—	१६०६
हरिश्चन्द्र कला	मा०	१८८५
होनहार	मा०	—
क्षत्रियपत्रिका	मा०	१८८१
क्षात्रिय समाचार	—	१६११

पन्ना

विन्ध्यभूमि	त्रै०	१६४५

पूना

चित्रमय जगत	मा०	१६१०
ज्ञानप्रकाश	—	१८७६

प्रतापगढ़ (अवध)

कलाकौशल	—	१६०५
किसानोपकारक	—	१६१५

फतेहगढ़ (यू. पी.)

कवि वा चित्रकार	त्रै०	१८६१
मानसपटल	—	१६१६
सत्यप्रकाश	मा०	१८८५

फतेहपुर

कायस्थ व्यवहार	—	१८८४

फर्रूख नगर

जीयालाल प्रकाश	सा०	१८८४
जैन	सा०	१८८४

फर्रूखाबाद

गोधर्म प्रकाश	मा०	१८८५
तेली जाति सुधार	—	१६१६

दीनबन्धु	मा०	१८६५
धर्मसभापत्र	मा०	१८८६
पीयूषवर्षिणी	मा०	१८६०
भारत सुदशाप्रवर्तक	मा०	१८७६
भारत हितैषी		—१८६१
समालोचक	मा०	—
संगठन	मा०	१६२५

बम्बई

अखण्ड भारत	दै०	—
जीवन साहित्य	मा०	१६३६
नया साहित्य	मा०	१६४५
नवराष्ट्र	दै०	—
पण्डित	मा०	१८६१
पण्डित	सा०	१८६१
प्रतिभा	मा०	१६४६
भगीरथ	सा०	१६२५
भारत	सा०	१६०८
भारत भूषण	मा०	१८६२
भारत हितैषी	मा०	१८६६
मनोविहार	—	१८७१
व्यापार बन्धु	सा०	१८६३
विजय	मा०	१६२६
सत्यदीपक	—	१८६६
सत्यामृत ? (सत्यमित्र)	—	१८७५
स्वाधीन भारत	दै०	—
संग्राम	सा०	१६४०
हिन्दुस्थान	दै०	१६३४

बरेली (यू. पी.)

आर्यपत्र	—	१८८४
सत्य धर्म पत्र	—	१८६०
तत्वबोधिनी पत्रिका	—	१८५६
सत्य प्रकाश	—	१८८३
धर्मोपदेश	—	१८८३
सत्योपकारी	स०	१८६४
ब्रह्मज्ञान प्रकाश	—	१८६६
भ्रमर	मा०	१६२३

बस्ती (यू. पी.)

आदर्श	—	१६१४
कविकुल कञ्जदिवाकर	मा०	१८८३

बहराइच

प्रभाकर	—	१६१६
व्यापार भण्डार	—	१६१६

ब्यावर (राजपूताना)

राजस्थान	सा०	—

बाँदा (सी. पी.)

लोकमान्य	सा०	—

बिजनौर (यू. पी.)

अबला हितकारक	—	१६०३
गरीब	सा०	—

बिथुर

भारतवर्ष	मा०	१८८८
रसिक लहरी	—	१६०२

बीकानेर

राजस्थान भारती	त्रै०	—

बूँदी

सर्वहित	पा०	१८८६

बेतिया (बिहार)

चम्पारन हितकारी	सा०	१८८४

भरतपुर

किसान	सा०	१६४५
निबन्धमाला	—	१६१५

भागलपुर (बिहार)

पीयूष-प्रवाह	—	१८८४
भारत पंचामृत	मा०	१८८५

भिवानी (पूर्वी पंजाब)

एकता	सा०	१९४२
परलोक	मा०	१९३३
सावधान	मा०	—
श्री रंगनाथ	सा०	१९४२

मंडौर [मारवाड़]

श्री गौतम	—	१९२१

मथुरा

आयुर्वेदोद्धारक	मा०	१८८७
कुलश्रेष्ठ समाचार	—	१८८४
खत्री अधिकारी	मा०	१८८८
खत्री हितकारी	मा०	१८८८
गुर्जर समाचार	मा०	१८८७
जगत मित्र	मा०	१८९१
जनार्दन	सा०	१९४२
जीवन	सा०	—
जैन गजट	—	१८९६
ब्रजरत्न	मा०	१८९०
ब्रजवासी	मा०	१८९२
ब्रजविनोद	मा०	१८८९
मथुरा समाचार	—	१८८४
विश्वकर्मा	सा०	१८९६
शिक्षक	मा०	१८९१

मिर्जापुर (यू०पी०)

आनन्दकादम्बरी	मा०	१८८१
आर्यपत्रिका	—	१८७५
खिचड़ी प्रकाश	सा०	१८९१
खैरख्वाहे हिन्द	—	१८६५
धर्म प्रचारक पत्र	—	१८८५
नागरी नीरद	सा०	१८९३
मिथिला नीति प्रकाश	मा०	१८८९

मुजफ्फर नगर

आर्य हितैषी	—	१९०३
आरोग्य सुधारक	मा०	१८८९
ब्राह्मण समाचार	मा०	१८९०
सभ्यता	—	१९१९

मुरादाबाद (यू०पी०)

कैलास	सा०	—
गौड़ हितकारी	—	१८९६
जगत प्रकाश	—	१८६९
जैन पत्रिका	—	१८८८
जैन विनती	—	१८९३
जैन हितैषी	मा०	१८९२
तत्र प्रभाकर	मा०	१८९८
धर्म प्रकाश	—	१८८५
नीति-प्रकाश	सा०	१८९४
सनातनधर्म पताका	—	१८९७
भारत प्रकाश	—	१८८५
भारत प्रकाश	मा०	१८९०
भारत प्रताप	मा०	१८९३
युगवाणी	मा०	—
विचार पत्रिका	मा०	१८९८
वंशीवाला	—	१८९४
सत्य	—	१८९०
सभापत्र	—	१८८८
सर्व हितैषी	मा०	१८९४

मेरठ (यू०पी०)

आदेश	—	—

आर्य समाचार	मा० १८८५
जन्मभूमि	— —
तपोभूमि	— —
देशहितकारी	मा० १८६६
देवनागरी गजट	मा० १८६०
देवनागरी प्रचारक	मा० १८८२
धर्मोदय	— १६१७
नागरीप्रकाश	— १८७४
नारदमुनि	मा० १८८८
वनौषधिप्रकाश	— १६१२
बालहितैषी	— १६१२
भारतोद्धारक	— १८६८
भारतोपदेशक	मा० १८६७
म्यूर गजट	— १८७१
ललिता	मा० १६१८
विद्यादर्श	पा० १८६६
वैद्यराज	— १६१२
वैश्यसुदशाप्रवर्तक	त्रै० —
वैश्यहितकारी	त्रै० १८६५
संकीर्तन	मा० १६३३

मैनपुरी (यू०पी०)

अमीर समाचार	— १६१२

मोतीहारी (बिहार)

उपन्यास कुसुमाञ्जलि	— १६०६

यवतमाल (बरार)

सरस्वत संदेश	मा० —

रतलाम

रत्नप्रकाश	पा० १८६८
रत्नप्रकाश	मा० १८८३

रायपुर (सी०पी०)

अग्रदूत	मा० १६१५

रेवाड़ी (पू० पं०)

चौरसिया ब्राह्मण	मा० १६३३
ज्योतिष समाचार	मा० १६२८
भक्ति	मा० १६२६

रीवां

भारतमाता	सा० १८८७

रूड़की (यू० पी०)

धर्मप्रकाश	मा० १८६०

लखनऊ

अनलाहितकारक	पा० १८८४
अतकाल के लक्षण	—१६१६
आर्यवनिता	—१६०३
आरोग्य जीवन	—१८८६
कर्मयोगी	सा०—
कलवार केशरी	मा०—
कलियुग के चित्र	—१६१४
कसौधन मित्र	—१६१८
कान्यकुब्ज प्रकाश	— १८६१
कायस्थ उपदेश	मा० १८८६
कायस्थ पत्रिका	मा० १८८६
काव्यामृत वर्षिणी	मा० १८८५
गुप्तचर	— १६०४
चकलस	—
चंद्रिका	मा० १८६७
जैन समाचार	मा० १८६५
दिनकर प्रकाश	मा० १८८३
दिनकर प्रकाश	मा० १८८५
धर्मसभा अखबार	सा० १८८७
नागरी प्रचारक	—१६०७
प्रकाश	सा० १६३८

बालहितकारक मा० १८६१
बुद्धिप्रकाश — १८८८
भविष्य स० १६१६
भारतदीपिका — १८८१
भारत पत्रिका — १८७३
भारत भानू — १८६२
भारतवर्ष — १८६२
रसिक पच — १८८७
लोकवाणी सा० १६४२
व्यावहारिक वेदान्त मा० १६३६
विद्या — १६१६
विद्या प्रकाश मा० १८६१
शिक्षा प्रभाकर मा० —
शुद्धि समाचार मा० १६२८
सबट स्कूल के पाठ — १६१८
समाचार सा० १६२६
स्वतंत्र सा० १८६५
साहित्य समालोचक मा० —
सुखसंवाद मा० १८८६
सुधा मा० १६२७
सेवक समाचार — १६१७
हिन्दुस्तानी — १८८३

लश्कर ग्वालियर

जीता संसार सा० १६४६

ललितपुर (यू० पी०)

बुंदेलखण्ड अखबार — १८७१

लाहौर

आर्य सा० —
आर्य-जगत —
इन्दु मा० १८८३
चांद मा० —
जैनप्रभाकर मा० १८६१
पथप्रदर्शक मा० १६२५
प्रकाश सा. १६३०
ब्रह्मविद्याप्रचारक पा. १८६६
भार्गव पत्रिका मा. —
भारतहितैषिणी — १८८३
भारती मा. १६३१
भारतेन्दु — १८८३
(बाद मे वृन्दावन से प्रकाशित)
मतलये अनवार — १८७२
मित्रविलास सा. १८७७
युगान्तर मा. —
विश्वबन्धु सा. १६३३
शक्ति दै. १६३०
शिक्षा मा. १६४१
सत्यवादी सा. १६२५
हिन्दू बान्धव मा. १८७६
ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका मा. १८६६

लुधियाना (पूर्वी पंजाब)

नीतिप्रकाश — १८७६

वर्धा (सी. पी.)

राजस्थान केशरी — —
सब की बोली मा. १६३६
सर्वोदय मा. —

वृन्दावन (यू. पी.)

उपन्यास प्रचार — १६१२
भारतेन्दु पा. १८८३
चित्रवृन्दावन पा. १८६२
सद्धर्म — १६०६
श्रीकृष्ण चैतन्यचन्द्रिका — १६१०

श्रीवैष्णवधर्म दिवाकर — १९०८
सुदर्शनचक्र सा. १८६०

शाहजहांपुर (यू. पी.)

आजान — १८७७
आर्यदर्पण मा. १८७६
आर्यभूषण मा. १८७६
तिजारत मा. —
द्विजदर्पण — १८९२
शुभचिंतक मा १८८३
सत्यकेतू — १९१९

शिकारपुर (सिंध)

सिंधुसमाचार मा. —

शिलांग (आसाम)

सुगृहिणी मा. १८८९

शिवपुरी (गवालियर)

विजयसन्देश मा. १९४०

सहारनपुर (यू. पी.)

जीवन और सूत्रधार सा. १९३९
जैनहितोपदेशक मा. १८९८
शान्ति — —
सनातनधर्म मा. १८९८
सर्वस्व मा. १९३५
सोर्डर्स गजट — १८७१
हिन्दी सम्बन्ध सहायक सा. —

सागर [सी. पी.]

इत्तेहाद सा. —

उदय सा. —
गोलपर्व जैन — १९१९
बच्चों की दुनिया पा. —
समालोचक मा. १९२४

सीकर [जयपुर]

दीपक सा. १९४५

श्री नगर [काश्मीर]

खलीद श्रीनगर मा० १९३८
(हिन्दी व उर्दू दोनों में प्रकाशित)

सुलतानगञ्ज [यू०पी०]

गङ्गा मा० १९३०

हरदोई [यू०पी०]

ब्राह्मण समाचार — १८९५

हरिद्वार

आर्य सिद्धान्त — १९०८

हाथरस [यू. पी.]

मधुर जीवन मा. १९३७
हिन्दू गृहस्थ मा. १९४३

हापुड़ [यू. पी.]

माहेश्वरी — १८९७

होशंगाबाद [सी. पी.]

सत्यवक्ता मा. १८९३

हैदराबाद

व्यापार सा. १९४७

प्रकाशित होकर बन्द हुए कुछ अन्य पत्र

अ० भा० क्षत्रियहितैषी १९२३
अभयराम ब्रह्मवाणी १९३७
अशोक १९३४
आदर्श महिला १९३६
आर्य ज्योति १९२५
ऋषिवेद विद्याप्रकाश १९३९

उत्थान	१९३७
उपन्यास कुसुम	१९२८
उषा	१९२५
कला	१९३१
कवि कौमुदी	१९२४
कानून	१९४०
काण्डुकर्णधार	१९२६
कामधेनु	१८७६
कायस्थबन्धु	१९३७
काव्यसर्वस्व	१९३०
कुर्मीक्षत्रिय	१९२५
कुशवाहा क्षत्रिय	१९३०
गरीब किसान वा आवेदन	१९३२
चातक	१९४१
चित्रदरबार	१९३५
चित्रपट	१९२५
चित्रवशीय	१९२६
चित्रहितैषी	१९२७
जगत आशना	१८७४
जायसवाल मित्र	१९२४
जीवन ज्योति	१९३७
,, ,,	१९४०
दिवाकर	१९२५
देशभक्त	१९२३
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारक	१९२२
देश हितैषी	१९२२
देहाती लेखमाला	१९३५
नागरिक शिक्षा	१९४४
प्रतिभा	१९३१
बलिया गजट	१९२८
बालबन्धु	१९३७
बोधा समाचार	१८७२
भट्ट	१९२६
भारतचन्द्रोदय	१८८५
भारतभूषण	१९३४
भारतवर्ष	१९२६
भारतविज्ञ	१९२६
भारतेन्दु	१९३०
माथुर वैश्य सुधारक	१९३०
मानस पियूष	१९२५
मालवा अखबार	१८४९
यादव सुधार	१९३०
युग प्रवेश	१९२६
राजस्थान महिला	१९३१
रौनियार वैश्य	१९२६
लोकधर्म	१९३०
वाणी	१९३१
विविधवृत्त	१९३५
वेदपात्र	१९२८
वैश्यसंरक्षक	१९३४
सनाढ्य बन्धु	१९२४
सन्त	१९२३
स्वराज्य शिक्षा	१९२२
स्वराज्य शिक्षक	१९२२
सेवक	१९२७
सोमप्रकाश	१८६६
संगीत भास्कर	१९२२
श्रीगौतम	१९२१
श्रीरामकथामृत	१९२७
श्री विश्वेश्वर	१९४०
हलवाई कान्यकुब्ज	१९३४
हलाहल	१९३६
हलिशहर पत्रिका	१८७१

सहायक पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची

१. The Rise and Growth of Hindi journalism (श्री रामरतन भटनागर) किताब महल, इलाहाबाद।

२. हिन्दी साहित्य का इतिहास (स्वर्गीय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) संशोधित और प्रवर्द्धित संस्करण।

३. 'विशाल भारत' (फरवरी व मार्च १६३१) हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र (श्री ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी)

४. ऊषा—पत्रकार-अङ्क (फरवरी १६४७)

५. साहित्य-सन्देश (मार्च १६३६)—समाचार पत्रों का इतिहास और हिन्दी पत्रकार (श्री बंकटलालजी ओझा साहित्य मनीषी)

६. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास (डा० श्री कृष्णलाल एम. ए, डी. फिल०) हिन्दी परिषद् विश्वविद्यालय, प्रयाग।

७. आज (दैनिक)—रजत जयन्ती अंक (५ नवम्बर १६४५)

८. 'भारतीय जागृति' के पहले संस्करण के लिए लिए हुए श्री भगवान दासजी केला के हस्तलिखित नोट (सन् १६१६-१६२०) जिनका उपयोग नहीं हुआ था।

६. 'सुकवि–संकीर्तन' (महावीर प्रसाद द्विवेदी) में 'पण्डित प्रताप-नारायण' शीर्षक लेख।

१०. लोकवाणी विशेषाङ्क (अप्रेल १६४७) में प्रकाशित डाक्टर रामचरण महेन्द्र का 'राजस्थान के पत्र और पत्रकार' शीर्षक लेख।

११. हिन्दी-सेवी संसार (श्री कालीदास कपूर और प्रेमनारायण टंडन)

१२. देशी राज्यों की जन जागृति (भगवानदासजी केला) भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज प्रयाग।

१३. प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ (श्री यशपाल जैन बी. ए., एल एल. बी) टीकमगढ़।

१४. 'हिमालय' (पटना) के अब तक प्रकाशित अङ्क।

१५. इंडियन प्रेस डाइरेक्टरी, बम्बई।

१६. हिन्दी पत्रों के सम्पादक (श्री बी. एस. ठाकुर सुशील पाण्डेय) लखनऊ।